

शुद्ध आहार



स्वस्थ परिवार



# द्विवर्षीय प्रतिवेदन - 2022-2024 BIENNIAL REPORT 2022-2024



**श्रीरामशान्ताय**  
जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र, कोटा  
(गोयल ग्रामीण विकास संस्थान)

## विवरण

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	सम्पादकीय पृष्ठ	1
2	लोकार्पण कार्यक्रम	2
3	संन्देश - भारत सरकार के शिक्षा एवं अनुसंधान (कृषि) के सचिव एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के महानिदेशक डॉ. हिमांशु जी पाठक द्वारा	3
4	प्रस्तावना - अनुसंधान केन्द्र के निदेशक श्रीमान् ताराचन्द जी गोयल द्वारा	4-6
5	परिचय, संकल्पना एवं उद्देश्य	7
6	नक्शा	8
7	शीर्ष सलाहकार बोर्ड के बारे में विवरण	9-13
8	अनुसंधान एवं प्रसार सलाहकार समिति के बारे में विवरण	14-15
9	फोटो-भारत सरकार के शिक्षा एवं अनुसंधान (कृषि) के सचिव एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के महानिदेशक डॉ. हिमांशु जी पाठक द्वारा अवलोकन	16
10	संत सानिध्य	17
11	परम् सानिध्य	18
12	संघ सानिध्य	19
13	सम्मान एवं पुरस्कार	20
14	अनुसंधान के आयाम	21
<b>सम्पूर्ण प्रसार कार्यों का विस्तृत विवरण</b>		
15	प्रसार कार्यों का संक्षिप्त विवरण	23
16	मासिक प्रशिक्षण कार्यक्रम	24-25
17	कृषि अनुसंधानकर्ताओं का भ्रमण एवं प्रशिक्षण	26
18	राजस्थान सरकार के कृषि विभाग एवं आत्मा द्वारा भ्रमण एवं प्रशिक्षण	27
19	विशेष कार्यक्रम	28
20	संस्थागत भ्रमण एवं प्रशिक्षण	29
21	सम्मेलन / कार्यशाला / संगोष्ठी	30
22	महिला सशक्तिकरण	31
23	जैविक खानपुर अभियान	32
24	अलग-अलग संगठनों एवं संस्थाओं के साथ कार्यक्रम	33
25	ग्राम चौपाल द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम	34
26	प्रक्षेत्र दिवस / प्रशिक्षण कार्यक्रम - जागरूकता के लिए	35
27	प्रक्षेत्र / कृषक संगोष्ठी - कम्पोस्ट निर्माण के लिए	36
28	विशेष प्रक्षेत्र दिवस / कृषक सम्मेलन	37
29	प्रक्षेत्र दिवस / प्रशिक्षण कार्यक्रम - फसल उत्पादन हेतु	38

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
<b>अनुसंधान कार्यों का विवरण</b>		
30	जैविक कार्बन का वृद्धि के सम्बन्ध में अनुसंधान एवं विश्लेषण	39
31	देशी गाय के ताजा गोबर का जीवाणु कल्चर / जैव उर्वरक के रूप में उपयोग	40
32	जैविक एवं रासायनिक मिट्टीयों में जीवाणु की दृष्टि से विश्लेषण	40
33	भूमि में जैव उर्वरक के रूप में ताजा गोबर का प्रभाव	41
34	भिण्डी की फसल में जैव उर्वरक के रूप में ताजा गोबर का प्रभाव	41
35	मैथी, अलसी एवं गेहूँ की फसल में जैव उर्वरक के रूप में ताजा गोबर का प्रभाव	42
36	किसानों द्वारा देशी गाय के ताजा गोबर को जीवाणु कल्चर / जैव उर्वरक के रूप में उपयोग के पश्चात् इस सम्बन्ध में प्रतिक्रिया	43
37	देशी गाय के ताजे गोबर को डिकम्पोजर के रूप में खाद बनाने हेतु उपयोग	44
38	तुलनात्मक अनुसंधान- खाद उत्पादन इकाई पर, मिट्टी परिक्षण प्रयोगशाला में, सूक्ष्म जीव विज्ञान प्रयोगशाला में,	44
39	सरल कम्पोस्ट की विधि के सम्बन्ध में निष्कर्ष	45
40	किसानों द्वारा देशी गाय के ताजा गोबर को डिकम्पोजर के रूप में सरल कम्पोस्ट बनाने हेतु उपयोग के पश्चात् इस सम्बन्ध में प्रतिक्रिया	46
41	सरल कम्पोस्ट की तुलना फसल उत्पादन के सम्बन्ध में वर्मी कम्पोस्ट एवं अन्य विधियों से	47
42	प्रथम वर्ष में जैविक खेती द्वारा उत्कृष्ट उत्पादन के लिए अनुसंधान केन्द्र द्वारा विकसित जैविक कृषि पद्धति की समग्र तकनीक का समावेश करने के सम्बन्ध में सरल कम्पोस्ट की मात्रा एवं प्रणाली विकसित करने हेतु हरी खाद एवं बिना हरी खाद के साथ तुलनात्मक विश्लेषण	47
43	सरल कम्पोस्ट का उपयोग हरी खाद एवं बिना हरी खाद के साथ	48
44	देशी गाय के गोमूत्र द्वारा वनस्पति पोषण के सन्दर्भ में अनुसंधान कार्य	49
45	वनस्पति विशेष में उपलब्ध पोषक तत्वों का अवलोकन	49
46	देशी गाय के गोमूत्र और चूने के मिश्रण द्वारा वनस्पति पोषण के सन्दर्भ में अनुसंधान कार्य	50
47	गोमूत्र के साथ चूना एवं विभिन्न खनिजों के उपयोग पश्चात् रासायनिक प्रतिक्रिया का विश्लेषण मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला में	50
48	गोमूत्र में उपलब्ध पोषक तत्व के सम्बन्ध में विभिन्न प्रकार के गोवंश एवं उनकी उम्र के	50
49	किसानों द्वारा फसल में गोमूत्र और चूने के मिश्रण के उपयोग पश्चात् प्रतिक्रिया	51
50	प्रथम वर्ष में जैविक खेती द्वारा उत्कृष्ट उत्पादन के लिए अनुसंधान केन्द्र द्वारा विकसित जैविक कृषि पद्धति की समग्र तकनीक का समावेश करने के सम्बन्ध में कृषकों के यहां प्रदर्शन एवं प्रयोग	52
51	प्रथम वर्ष में जैविक खेती द्वारा उत्कृष्ट उत्पादन के लिए अनुसंधान केन्द्र द्वारा विकसित जैविक कृषि पद्धति की समग्र तकनीक का समावेश करके संतुष्टिजनक परिणाम प्राप्त करने वाले कृषकों के उत्पादन के सम्बन्ध में विस्तृत विवरण	53
52	जैविक खेती द्वारा उत्कृष्ट उत्पादन के लिए अनुसंधान केन्द्र द्वारा विकसित जैविक कृषि पद्धति की समग्र तकनीक का समावेश करके अनुसंधान केन्द्र पर उत्पादित फसलों के उत्पादन के सम्बन्ध में विस्तृत विवरण	54

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
53	बीजों के उन्नयन, संरक्षण एवं उत्पादन संवर्धन और वितरण के सन्दर्भ में प्रयास	55-56
54	भारतीय पंचाग अनुसार बुवाई का समय निर्धारण हेतु प्रयास	57
55	देशी गाय के ताजा गोबर के प्रयोग विभिन्न फसलों के बीजों की अंकुरण क्षमता वृद्धि के सन्दर्भ में	58
56	कीट नियन्त्रण, संवर्धन एवं संरक्षण विशेष हानिकारक कीट की पहचान-नियन्त्रण, लाभदायक का विस्तार, ट्रेप क्रॉप	59-60
57	देशी गाय के ताजा गोबर के प्रभाव कीट नियन्त्रण के सम्बन्ध में	61
58	अनाज भण्डारण के कीट नियन्त्रण हेतु विभिन्न प्रयोग	61
59	देशी गाय के ताजा गोबर एवं अन्य वनस्पति के प्रभाव रोग एवं व्याधि नियन्त्रण के सम्बन्ध में	62
60	देशी गाय के ताजा गोबर में उपलब्ध लाभकारी जीवाणु द्वारा एवं अन्य वनस्पति में उपलब्ध रासायनिक तत्त्वों के द्वारा विभिन्न फसलों के रोगजनकों का नियन्त्रण	62
61	जल संरक्षण, संवर्धन एवं संग्रहण हेतु विभिन्न प्रयोग जल संरक्षण इकाई के सन्दर्भ में तुलनात्मक काम	63
62	सोयाबीन की दो किस्मों में विभिन्न सिंचाई पद्धतियों से उत्पादन के लिए तुलनात्मक विश्लेषण	64
63	अध्यात्म के सन्दर्भ में वेद विज्ञान के द्वारा वृष्टि (बारिश)	65
64	गाय के मरणोपरान्त उपयोग हेतु बायोजायनेमिक कम्पोस्ट निर्माण	66
65	गो पालन, गोगृह आवास निर्माण एवं नरल संवर्धन	67
66	श्रीधान्य (मिलेट / मोटे अनाज) का उत्पादन, संरक्षण, उन्नयन एवं वितरण	68
67	जैविक कृषि उत्पाद (अनाज) एवं सब्जियों में उपलब्ध पोषक तत्त्व का विश्लेषण	69
68	जैविक एवं रासायनिक कृषि उत्पाद के बीज भार के सन्दर्भ में प्रयोग	70-71
69	जैव विविधता के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए प्रयास	72-73
70	पोषण वाटिका (एक परिवार के छः सदस्यों के आहार हेतु)	74
71	बहुस्तरीय कृषि (मल्टीलेयर फार्मिंग)	75
72	यांत्रिक अनुसंधान एवं नवाचार, रिज्ड एण्ड फैंरो मशीन, ड्रोन एवं मल्टी टाइप पेडी थ्रेसर	76-77
73	संरक्षित खेती के सन्दर्भ में प्रयास	78
74	स्थानीय व्यवस्थाओं से निर्मित कम लागत की संरचनाएं	79
75	मोबाईल एडवाइजरी	80
76	अनुसंधान केन्द्र की टीम के सदस्य अपने मार्गदर्शकों एवं उच्च अधिकारियों के साथ (फोटो)	81
77	प्रदर्शनी के माध्यम से जैविक कृषि का प्रचार-प्रसार	82
78	प्रयोगधर्मी किसानों के द्वारा अवलोकन एवं भ्रमण	83
79	कृषि वैज्ञानिक और अधिकारियों द्वारा अवलोकन	84-85
80	विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित कृषक दीर्घा	86
81	विशेष बिन्दू	87
82	अनुसंधान केन्द्र के विशेषज्ञों द्वारा प्रकाशित तकनीकी साहित्यों का विवरण	88-89
83	मिडिया कवरेज	90

# द्विवर्षीय प्रतिवेदन 2022-2024 BIENNIAL REPORT 2022-2024

प्रकाशक

ताराचन्द गोयल  
निदेशक

श्रीरामशान्ताय

जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र, कोटा 325001  
(गोयल ग्रामीण विकास संस्थान)



सम्पादक

पवन के टाक  
मुख्य प्रबन्धक



श्रीरामशान्ताय

जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र, कोटा 325001  
(गोयल ग्रामीण विकास संस्थान)

ग्राम जाखोड़ा, कैथून-सांगोद मार्ग, कोटा-325001 (राजस्थान)

☎ 88759 95439 ✉ ggvs@goyalglobal.com 🌐 www.ggvsglobal.com



## लोकार्पण समारोह

श्रीरामशान्ताय जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र  
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रम सम्वत् २०७६ शनिवार, 2 अप्रेल 2022



श्रद्धेय श्री सुरेश जी (भैय्या जी) जोशी अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पूर्व सर कार्यवाह एवं श्रीमान् ओमकृष्ण जी बिरला, माननीय लोकसभा अध्यक्ष भारत सरकार एवं श्रीमान् नरेन्द्र सिंह जी तोमर, केन्द्रीय कृषि व किसान कल्याण मन्त्री, भारत सरकार (अनुसंधान केन्द्र के लोकार्पण समारोह के अवसर पर अनुसंधान इकाईयों का अवलोकन करते हुए।)



सत्यमेव जयते

डॉ. हिमांशु पाठक

**DR. HIMANSHU PATHAK**

सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक (आईसीएआर)

**Secretary (DARE) &  
Director General (ICAR)**

भारत सरकार  
कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग एवं  
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद  
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, कृषि भवन, नई दिल्ली-110 001

GOVERNMENT OF INDIA  
DEPARTMENT OF AGRICULTURAL RESEARCH AND EDUCATION (DARE)  
AND  
INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH (ICAR)  
MINISTRY OF AGRICULTURE AND FARMERS WELFARE  
Krishi Bhavan, New Delhi 110 001

Tel: 23382629 / 23386711 Fax: 91-11-23384773

E-mail: dg.icar@nic.in

## संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि गोयल ग्रामीण विकास संस्थान कोटा के द्वारा स्थापित श्रीरामशान्ताय जैविक कृषि अनुसंधान केन्द्र के अनुसंधान एवं प्रसार गतिविधियों के सन्दर्भ में द्विवार्षिक प्रतिवेदन प्रकाशित किया जा रहा है।

अनुसंधान केन्द्र के द्विवार्षिक प्रतिवेदन में संकलित भिन्न भिन्न आयामों जैसे गो विज्ञान, भूमि सुपोषण, जैव विविधता, कृषि एवं वानिकी, कृषि अभियान्त्रिकी, जल आदि पर हुए अनुसंधान कार्यों के निष्कर्ष किसानों, कृषि वैज्ञानिकों एवं कृषि विद्यार्थियों के लिए हितकारी साबित होंगे साथ ही इस संस्थान पर दो वर्षों में प्रसार गतिविधियों में कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों, राज्य सरकार के विभागीय अधिकारियों, भिन्न-भिन्न संस्थाओं एवं संगठनों के कृषक प्रतिनिधि समूहों का भ्रमण एवं प्रशिक्षण होना एवं ग्राम चौपाल, सम्मेलन, विचार गोष्ठी, प्रक्षेत्र दिवस आदि के आयोजन द्वारा तकनीकी जानकारी का समय समय पर प्रसार होना प्रेरणादायक कदम है।

इस संस्थान पर दिनांक 7 जनवरी 2024 को आयोजित कार्यक्रम में मेरा जाना हुआ। यहां स्थापित भिन्न प्रकार की प्रयोगशालाएं, फसल अनुसंधान इकाईयां, खाद अनुसंधान एवं निर्माण इकाई, गोशाला एवं मॉडल फार्म पर भ्रमण भी किया। इस दौरान देखा कि यहां प्राचीन, पारम्परिक एवं बहुप्रचलित कृषि पद्धतियों पर अनुसंधान एवं प्रसार कार्यों को आधुनिक तकनीक के अनुरूप सांमजस्य बैठाकर प्रकृति के संरक्षण के साथ गुणवत्ता युक्त खाद्यान्न उत्पादन के द्वारा किसानों की समृद्धि का प्रयास सरल पद्धतियों से हो रहा है, जो अपने आप में उत्कृष्ट उदाहरण है। उपरोक्त सम्पूर्ण प्रयासों को देखते हुए मुझे लगता है कि इस संस्था का यह प्रयास राजस्थान के साथ सम्पूर्ण देश में एक मॉडल का काम कर सकता है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली द्वारा जैविक एवं प्राकृतिक कृषि पर बहुत बड़े स्तर पर प्रयास जारी है। इस प्रयास में इस संस्थान को भी जोड़ा जाएगा।

मैं संस्था के निदेशक श्री ताराचन्द गोयल जी की सोच का अभिनन्दन करता हूँ जिसकी वजह से एक विशेष और आवश्यक प्रयास द्वारा जैविक कृषि की दिशा को धरातल पर स्वरूप प्रदान किया गया और इस प्रयास की आवश्यकता आज पुरे देश में है। संस्था के इतने अल्प समय के उत्कृष्ट प्रयासों के निष्कर्षों एवं विवरणों के संकलन युक्त प्रथम प्रतिवेदन में प्रकाशित जानकारियां किसानों की समृद्धि में भागीदार बनेगी

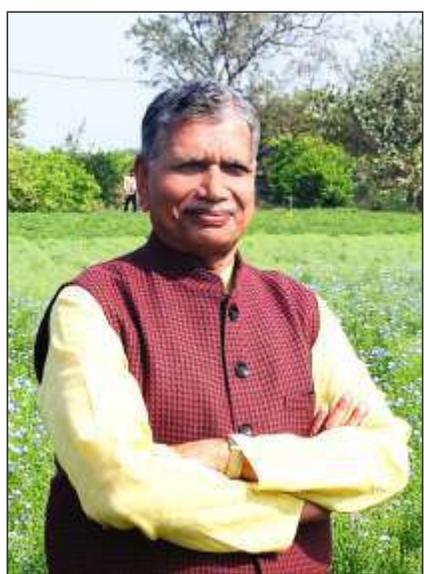
इस संस्था की सफलता के लिए अपनी शुभकामना प्रेषित करते हुए जैविक कृषि के इस उत्तम प्रयास से सम्बद्ध सभी बन्धु-भगिनी का साधुवाद व्यक्त करता हूँ।

हि. पाठक

(हिमांशु पाठक)

दिनांक : 16 अप्रैल, 2024

## प्रस्तावना



गो माता मानवीय जीवन का आर्थिक रीढ़ स्तम्भ है, इसलिए भगवान श्री कृष्ण ने गाय चराई, गो गव्य (दूध, दही, मक्खन) का स्वयं उपयोग करके, माखनचोर कहलाकर महत्त्व बढ़ाया। इसी प्रकार अन्न रूपी आहार के निर्माण के लिए मानव जीवन का आधार खेती है, यह सन्देश भगवान श्री बलराम ने देने के लिए अपने कन्धों पर हल धारण करके हलधर कहलाये। भगवान श्री कृष्ण और भगवान श्री बलराम के सन्देश से यह स्पष्ट है कि खेती और गाय के बिना मानव जीवन के अस्तित्व को खतरा हो सकता है। इसके साथ यह निश्चित हो गया है कि खेती के बिना गाय और गाय के बिना खेती का अस्तित्व संभव नहीं है अर्थात् गाय और खेती एक दूसरे के पूरक है।

भगवान श्री कृष्ण और भगवान श्री बलराम की प्रेरणा से प्रेरित होकर समाज हितार्थ गोयल ग्रामीण विकास संस्थान कोटा के द्वारा वर्ष 2016 में कोटा जिले के कैथून कस्बे के निकट जाखोड़ा राजस्व में 16 एकड़ जमीन पर गो आधारित कृषि का कार्य श्रीरामशान्ताय जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र के नाम से प्रारम्भ किया, जिसका ध्येय वाक्य "शुद्ध आहार – स्वस्थ परिवार" है। यहाँ स्थापित टेक्नो पार्क रूपी खेत में वर्ष 2016 से अभी तक किसी भी प्रकार के कृषि रसायन का उपयोग नहीं किया गया, केवल गो गव्य (गोबर, गोमूत्र, छाछ आदि) के उपयोग से ही खेती की जा रही है।

गाय और कृषि से जुड़े अभियान को सम्पूर्ण देश में दिशा मिले, इस उद्देश्य से वैज्ञानिक प्रणाली से वर्ष 2019 में कार्य प्रारम्भ हुआ और वर्ष 2020 में श्रीरामशान्ताय जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र की नींव आदरणीय पिताजी स्वर्गीय श्री रामावतार जी गोयल, बड़े भ्राता स्वर्गीय श्री प्रकाशचन्द जी गोयल, आदरणीय श्री दुर्गादास जी (अखिल भारतीय घुमन्तू आयाम प्रमुख, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) श्रीमान् कृष्णमुरारी (अखिल भारतीय बीज प्रमुख, भारतीय किसान संघ) एवं श्रीमान् बद्रीनारायण जी चौधरी (अखिल भारतीय अध्यक्ष, भारतीय किसान संघ) के कर कमलों से रखी गई। हमने जीवन में जो भी कार्य किये, उसकी गुणवत्ता व उत्कृष्टता का आधार उच्च स्तरीय मापदण्डों के अनुसार ही रहा है, इसलिए इस प्रकल्प के लिए आवश्यक इन्फ्रास्ट्रक्चर का निर्माण यहां पर करवाया गया। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रम सम्वत् 2079, 2 अप्रैल 2022 को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व सरकार्यवाह श्रद्धेय सुरेश भैय्या जोशी, लोकसभा अध्यक्ष माननीय श्री ओमकृष्ण बिरला एवं केन्द्रीय कृषि मंत्री श्रीमान् नरेन्द्र सिंह तोमर के कर कमलों से इस नवनिर्मित 'आधुनिक संसाधनों से सुसज्जित' अनुसंधान केन्द्र का लोकार्पण किया गया।

गो आधारित जैविक कृषि के अभियान को सम्पूर्ण राजस्थान में स्थापित करने के उद्देश्य से 20 वर्षों की कार्य योजना तैयार करके कार्य प्रारम्भ किया।

- प्रथम पंचवर्षीय कार्य योजना में आवश्यक संसाधनों और जीवन्त उदाहरणों से युक्त प्रकल्प तैयार करना था जो कि यह कार्य तय समय सीमा में पूर्ण भी हो गया।
- द्वितीय पंचवर्षीय कार्य योजना में 2000 किसान स्वयं के परिवार को निरोगी करने के लिए वर्षभर में खाने के काम आने वाली कृषि खाद्य सामग्री का उत्पादन कर उसका उपयोग स्वयं के परिवार के लिए करें, जिसके लिए एक बीघा यानि 1620 वर्गमीटर (132X132 वर्ग फीट) भूमि पर विकसित पोषण वाटिका का मॉडल तैयार किया। जिसमें 1 परिवार के 6 सदस्यों के लिए वर्षभर की अनिवार्य खाद्य सामग्री जैसे अनाज, तिलहन, दालें, मसाले, फल-फूल, सब्जी एवं औषधीय आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके।

बीते दो वर्षों में 250 से अधिक किसान गो आधारित कृषि उत्पाद पैदा करके अपने परिवार में उपयोग कर रहे हैं। अगले तीन वर्षों में शेष 1750 किसानों को तैयार करना होगा, जो समयानुसार अवश्य पूर्ण हो जायेगा।

- तृतीय पंचवर्षीय कार्य योजना अनुसंधान केन्द्र द्वारा विकसित की गयी तकनीक को किसान अपनी आर्थिक समृद्धि के लिए उपयोग करना प्रारम्भ करेंगे। जिससे स्वच्छ प्रतिस्पर्धा निर्माण होकर गो आधारित खेती के विस्तार में सहायक बनेगी।
- चतुर्थ पंचवर्षीय कार्य योजना में हमारे द्वारा किये गये अनुसंधानों की आधुनिक तकनीक से सभी किसान भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने, खेती की लागत कम करने, पारिवारिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाने एवं आर्थिक समृद्धि प्राप्त करने जैसे कार्यों के लिए गो आधारित जैविक कृषि को अपनाकर प्रारम्भ कर देंगे।

उपरोक्त वर्णित कार्य योजना एवं चिन्तन के आधार पर हमने कार्य करना प्रारम्भ किया है। उसके सूक्ष्म परिणाम समाज के लिए हितकारी सिद्ध हो रहे हैं, जिसमें देशी गाय के ताजे गोबर का जीवाणु कल्चर में स्थापित होना उत्कृष्ट उदाहरण है। मृतप्राय वनस्पति में केवल ताजा गोबर संजीवनी जैसा काम कर रहा है, इसी संदर्भ में हमारी कल्पना से भी अधिक प्रभावी परिणामों को हमने इस प्रकल्प पर प्रत्यक्ष देखा है। इसी प्रकार गोमूत्र में चूने का प्रभाव वनस्पतियों की बढ़वार पर आशाजनक साबित हुआ है। भूमि की उर्वरा शक्ति एवं कार्बन वृद्धि के लिए अनुसंधान केन्द्र द्वारा विकसित सरल खाद बनाने की विधि आज विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित होती जा रही है। वहीं उन्नत बीज पर किए जा रहे प्रयासों के प्रारम्भिक परिणाम भी सुखद आ रहे हैं जिसमें गेहूँ, ज्वार एवं मिलेट्स (श्री धान्य) की फसलें प्रमुख हैं।

अनुसंधान केन्द्र पर विकसित एवं प्रमाणित तकनीक को सर्वव्यापी बनाने के लिए मासिक प्रशिक्षण कार्यक्रम, ग्राम चौपाल, फील्ड चर्चा, किसान सम्मेलन, विचार गोष्ठी, संस्थागत कार्यक्रमों एवं कार्यशालाओं के द्वारा पिछले 2 वर्षों में 12451 किसानों ने यहाँ आकर प्रशिक्षण लिया, 7000 किसानों ने अन्य आयोजित कार्यक्रमों में हमारी तकनीक को समझा, 5000 से अधिक किसानों द्वारा विकसित सरल खाद की विधि को अपनाया गया, सैकड़ों किसानों द्वारा प्रमाणिकता से गो आधारित खेती को अपनाकर और 40 से अधिक संस्थाओं का इस अनुसंधान केन्द्र से जुड़कर इस अभियान को भविष्य में लक्ष्य की ओर ले जाने वाला संकेत है।

भारतीय संस्थानों एवं प्रतिनिधियों द्वारा हस्तिनापुर में प्रदर्शित प्रदर्शनी में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के परमपूजनीय सरसंघचालक श्रद्धेय डॉ. मोहन मधुकरराव भागवत जी द्वारा अनुसंधान केन्द्र की प्रदर्शनी का अवलोकन के पश्चात् अपने उद्बोधन में हमारे अनुसंधान केन्द्र के प्रयासों का उल्लेख करना, हमारे अनुसंधान केन्द्र के लिए महत्त्व का विषय रहा।

भारत सरकार के कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के सचिव और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ. हिमांशु पाठक द्वारा हमारे अनुसंधान केन्द्र पर स्थापित प्रशिक्षण भवन, लेबोरेट्रीज और रिसर्च पार्क का अवलोकन कर इस प्रकल्प के संदर्भ में जिस प्रकार से अपनी अभिव्यक्ति प्रदान की, उससे हमारा आत्मविश्वास द्विगुणित हुआ और हमें हमारी कल्पना को साकार होना जैसा प्रतीत हुआ।

द्विवर्षीय प्रतिवेदन में अनुसंधान केन्द्र के उपरोक्त सूक्ष्म प्रयास और उत्कृष्ट परिणाम हमारी टीम के लिए सफलतम् उपलब्धि है। देश के सन्तों, ऋषि मुनियों, कृषि वैज्ञानिकों, संघ के पदाधिकारियों, गो आधारित जैविक कृषि के लिए प्रयासरत संस्थाओं के प्रतिनिधियों, गोयल ग्रुप के सदस्यों एवं परिवार जनों को वन्दन करता हूँ जिनका इस अभियान में सहयोग प्राप्त हो रहा है। अपने सहयोगी सदस्यों के त्याग और समर्पण के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिनके द्वारा प्रतिवेदन में संलग्न सफलताओं को धरातल पर उतारने के लिए, अथक प्रयास किये जा रहे हैं।

मेरा आत्मीय आभार अन्नदाताओं को है जिनके द्वारा अनुसंधान केन्द्र की तकनीक को अपनाकर हमारे वैचारिक अधिष्ठान को मूर्तरूप प्रदान करने में सहयोग मिल रहा है।

हम सभी ने मिलकर जो बीज लगाया है वह अवश्य ही वृक्ष बनकर समाज हितार्थ स्थापित होगा। हमें विश्वास है कि गो आधारित जैविक कृषि का कार्य एक दिन मधुर फलों से मानव जीवन को निरोगी बनाने में सहायक सिद्ध होगा। भविष्य में खेत—खेत पर गो आधारित जैविक कृषि प्रारम्भ होगी और भारत आत्मनिर्भरता व स्वालम्बन की ओर अग्रसर होगा।

हमारा वैज्ञानिक अधिष्ठान निस्वार्थ भाव का होने से, ईश्वर की अदृश्य शक्ति द्वारा संचालित है अतः हमें पूर्ण विश्वास है कि यह अभियान फलदायी होकर संकल्पित लक्ष्य को अवश्य प्राप्त करेगा। इस ईश्वरीय प्रयास में आप और हम सारथी बनकर अभियान को और तेज गति से आगे बढ़ायेगें जिससे हितकारी बीजारोपण के द्वारा प्रकृति, पर्यावरण, धरती एवं समस्त जीव जगत को शुद्ध आहार प्राप्त होकर, सम्पूर्ण सृष्टि के जीवों का परिवार स्वस्थ बनेगा।

इस उत्कृष्ट और प्रेरक विकास यात्रा में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी बंधु एवं भगिनी का पुनःश्च हार्दिक आभार।

वन्देमातरम्

ताराचन्द गोयल

निदेशक

गोयल ग्रामीण विकास संस्थान, कोटा, (राजस्थान)

## परिचय

श्रीरामशान्ताय जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना गोयल ग्रामीण विकास संस्थान कोटा के द्वारा जैविक कृषि के विकास हेतु की गई है। यह अनुसंधान केन्द्र ग्राम जाखोड़ा, कैथून—सांगोद मार्ग, पर स्थापित है। 6.4 हैक्टेयर भू-भाग पर स्थापित इस अनुसंधान केन्द्र का मॉडल फार्म राजस्थान जैविक प्रमाणीकरण संस्थान जयपुर द्वारा पंजीकृत है जो कि राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध सर्वश्रेष्ठ तकनीकी किसानों को देने के लिए कृत संकल्पित है।

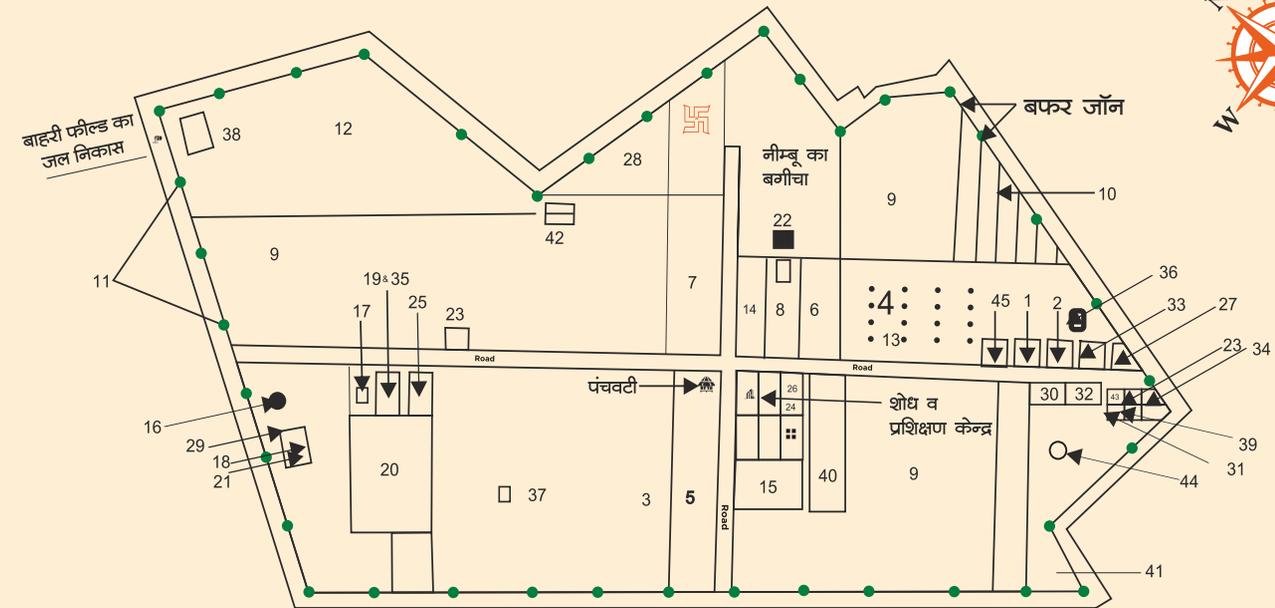
## संकल्पना

### श्रीरामशान्ताय

जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना "शुद्ध—आहार, स्वस्थ—परिवार" की संकल्पना के आधार पर की गई।

## उद्देश्य

- कृषि भूमि की उपजाऊ क्षमता को बढ़ाने एवं भूमि से पैदा होने वाली खाद्य सामग्री के पोषक तत्व की गुणवत्ता, निरोगी शरीर की आवश्यकता के स्तर।
- अनुसंधान केन्द्र पर जैविक पद्धति से शोध कार्यों के द्वारा प्राप्त उत्कृष्ट परिणामों से किसान आर्थिक सुदृढ़ीकरण की ओर अग्रसर हों।
- जैविक कृषि में आधुनिक तकनीक व उपकरणों के उपयोग के माध्यम से कृषि आय में वृद्धि कर युवाओं को रोजगार प्रदान करते हुए कृषि की ओर आकर्षित हों।
- जैविक कृषि के माध्यम से अमृत तुल्य गोबर, गोमूत्र, दूध इत्यादि प्रदान करने वाली हमारे देश की गोमाता का संरक्षण एवं संवर्धन हो कर समाज में महत्त्व बढ़े।
- उत्कृष्ट उत्पादों की ग्रेडिंग व पैकेजिंग का कार्य ग्राम स्तर पर प्रारम्भ हों, लघु व कुटीर उद्योग के माध्यम से ग्राम आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हों।
- किसान अन्नदाता कहलाता है, हमारा प्रयत्न है कि वह रोजगार सृजनकर्ता भी बनें।
- जैविक कृषि के लिए किसान प्रमाणिकता से कार्य करें, इसके लिए हमने आग्रह किया है कि किसान स्वयं के उपयोग की वर्षभर में काम आने वाली खाद्य सामग्री का उत्पादन जैविक विधि से करे। उसके उत्तम स्वाद का आनन्द लेते हुए परिवार को स्वस्थ बनाये। हमने आर्थिक महत्त्व के स्थान पर स्वस्थ मानव की अवधारणा पर विचार कर इस पर कार्य आरम्भ किया है। व्यक्ति अपने स्वयं के उपयोग के लिए प्रमाणिकता से ही उत्पादन करेगा, ऐसा हम मानते हैं।



नयापुरा चौराहा, कोटा से 21 किलोमीटर

सांगोद 38 किलोमीटर



अकादमिक  
भवन



मृदा जाँच  
प्रयोगशाला



कीट नियंत्रण व  
संरक्षण प्रयोगशाला



पादप रोग विज्ञान  
प्रयोगशाला



प्रशिक्षण  
भवन



प्रसंस्करण  
इकाई



गो गृह

1. कम लागत में बांस की नर्सरी
2. कम लागत का प्राकृतिक ऊर्जा शुष्कन
3. सब्जी ब्लॉक
4. समन्वित कृषि प्रणाली (IFS मॉडल)
5. फूल उत्पादन
6. मेडिसनल / औषधीय फसल उत्पादन ब्लॉक
7. कन्दवर्गीय सब्जी फसल ब्लॉक
8. सुगन्धित फसल उत्पादन ब्लॉक
9. स्थानीय कृषि फसले
10. रेज्ड बेड मॉडल (संतरे का बगीचा)
11. खेत पर मेड़, मेड़ पर पेड़
12. हरा चारा उत्पादन इकाई
13. फल वृक्ष
14. कृषि वानिकी
15. धनवंतरि वाटिका (हर्बल गार्डन)

16. कम लागत की गोबर गैस इकाई
17. बूंद बूंद सिंचाई सयंत्र
18. शून्य ऊर्जा शीत कक्ष
19. सूर्य ऊर्जा उत्पादन इकाई
20. वर्षा जल संग्रहण इकाई
21. मशरूम उत्पादन इकाई
22. शहद उत्पादन इकाई (मधुमक्खी पालन)
23. अग्निहोत्र यज्ञ स्थान
24. बायोडायनेमिक कम्पोस्ट इकाई
25. आसवन इकाई
26. परम्परागत सब्जी विक्रय केन्द्र
27. स्वदेशी, परम्परागत व उन्नत बीज बैंक
28. फार्म स्टोर
29. गो विचरण स्थल
30. गिलोय दरबार

31. बैल चलित उपकरण केन्द्र
32. खाद अनुसंधान इकाई
33. सरल कम्पोस्ट इकाई
34. ट्रेंच कम्पोस्ट (गड्डा खाद)
35. वर्मी कम्पोस्ट इकाई
36. कीट नियंत्रण उत्पादन इकाई
37. अजोला इकाई
38. मौसम पूर्वानुमान इकाई
39. फसल उत्पादन अनुसंधान क्षेत्र
40. तरल खाद निर्माण इकाई
41. बीज उत्पादन क्षेत्र
42. सघन वन
43. भूजल पुनर्भरण केन्द्र
44. कृषि यंत्र
45. परम्परागत चारा संग्रहण इकाई

## शीर्ष सलाहकार बोर्ड (तकनीकी)

गोयल ग्रामीण विकास संस्थान, कोटा द्वारा श्रीरामशान्ताय जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र पर संचालित समग्र तकनीकी कार्यों के सन्दर्भ में मार्गदर्शन हेतु शीर्ष मार्गदर्शकों का सानिध्य हमें मिल रहा है जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है।

नाम	विवरण
 <p><b>श्रीमान् ताराचन्द गोयल</b> निदेशक गोयल ग्रामीण विकास संस्थान, कोटा</p>	<p>झालावाड़ जिले के खानपुर कस्बे में जन्मे वहीं शिक्षा प्राप्तकर किराने की छोटी सी दुकान के माध्यम से 1977 में खानपुर में व्यवसायिक कार्य प्रारम्भ किया। बाल्यकाल से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक रहे। संघ के विभिन्न दायित्व का निर्वहन करते हुए कोटा महानगर के 13 वर्षों तक सह संघचालक व महानगर संघचालक रहे। 2001 में गोयल प्रोटीन्स लिमिटेड स्थापना में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। 2007 में सरसों पिराई की देश में नई तकनीकी विकसित कर गोयल वेज ऑयल लिमिटेड प्लांट स्थापित किया। राजस्थान की MSME फेसिलिटी कौंसिल के दो बार मेम्बर रहे। महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर, कृषि विश्वविद्यालय कोटा, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर में बोर्ड मेम्बर रहे। श्रीराम जन्म भूमि मन्दिर अयोध्या के निधि संग्रह अभियान के राजस्थान प्रदेश के अध्यक्ष रहे। सम्पूर्ण देश में निधि संग्रह में राजस्थान प्रथम रहा। चार वर्षों तक लघु उद्योग भारती के राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष का दायित्व निर्वहन के बाद वर्तमान में अखिल भारतीय उपाध्यक्ष का दायित्व निर्वहन कर रहे हैं। गोयल समूह के चेयरमेन हैं, इस गोयल ग्रामीण विकास संस्थान के निदेशक रूप में कार्य देख रहे हैं। यह प्रकल्प आपकी संकल्पना के आधार पर ही स्थापित किया गया है।</p>

 <p><b>डॉ. एस. एल. मेहता</b> पूर्व कुलपति महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर पूर्व उप महानिदेशक (शिक्षा) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली</p>	<p>कृषि स्नातक में प्रथम रैंक एवं स्वर्ण पदक प्राप्त आदणीय डॉ. मेहता जी ने स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी का अध्ययन एवं अनुसंधान कार्य भारतीय कृषि अनुसंधान केन्द्र (आई.ए.आर.आई) नई दिल्ली से करते हुए वर्ष 1969 में अब्लर्टा विश्वविद्यालय कनाडा से पोस्ट डॉक्टरल रिसर्च कार्य भी किया। तत्पश्चात् आई. ए.आर.आई, नई दिल्ली में भिन्न भिन्न पदों पर सेवा दी। वर्ष 1995–2000 तक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली में उप महानिदेशक (शिक्षा) एवं राष्ट्रीय निदेशक (भारतीय कृषि तकनीक प्रोजेक्ट) रहे। वर्ष 2004–2008 तक महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय उदयपुर के कुलपति रहे। आपने भिन्न भिन्न सेवाकार्यों की दृष्टि से कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका, इजरायल, ऑस्ट्रेलिया, फिलीपिन्स, कुवेत एवं मलेशिया का भ्रमण भी किया है। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, जम्मू-कश्मीर एवं हिमाचल प्रदेश में कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना में अहम भूमिका का निर्वहन किया है। आई.आई.एम.आर. हैदराबाद एवं ए.आई.आर.सी.पी-ज्वार (आई.ए.आर.आई नई दिल्ली) के अध्यक्ष है। आपने सैकड़ों अनुसंधान पत्र, पुस्तकें, साहित्यों का प्रकाशन किया है।</p>
----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

**नाम**

**विवरण**



**डॉ. बी. आर. छीपा**  
**पूर्व कुलपति**

1. एस.के.आर.ए.यू., बीकानेर
2. कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर
3. एस.के.एन.ए.यू., जोबनेर
4. राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

मृदा विज्ञान से जुड़े डॉ. छीपा ने स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी की उपाधि उत्कृष्ट अनुसंधान परिणामों से प्राप्त की।

मृदा विज्ञान के संदर्भ में शिक्षण कार्यों के प्रबन्धन में 25 वर्षों का एवं अनुसंधान के क्षेत्र में आपको 12 वर्षों का अनुभव है। इस दौरान आपने 17 स्नातकोत्तर एवं 7 पीएच.डी के विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया।

प्रशासनिक क्षेत्र में आपको 10 वर्ष का अनुभव है, इस दौरान आपने विभागाध्यक्ष, डीन एवं कुलपति का दायित्व निर्वहन किया। हिन्दी क्षेत्र में विशेष रुचि आपकी रही है। कई अनुसंधान आलेख, पत्र एवं साहित्यों का सम्पादन हिन्दी में किया। वर्ष 2015 में भारत के माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा सरदार वल्लभ भाई पटेल पुरस्कार से सम्मानित हुए।



**डॉ. अनूप मिश्रा**  
**कुलपति**

केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, इम्फाल  
**गवर्निंग बोर्ड एवं जनरल बोर्ड मेम्बर**  
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्  
नई दिल्ली

आप जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर के पूर्व छात्र हैं। आप यहां (जबलपुर) स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (अटारी) जबलपुर के निदेशक रहे हैं।

आप देश के उन्नत कृषि के प्रचार-प्रसार में ख्याति प्राप्त अग्रणी कृषि वैज्ञानिकों के रूप में अपनी पहचान रखते हैं। पूर्व में पूर्वोत्तर के सात राज्यों तथा मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं ओडिसा में कृषि तकनीकी के प्रचार-प्रसार में अपनी अहम सेवायें दे चुके हैं। डॉ. मिश्रा के सफल निर्देशन में देश में कृषि तकनीकी परम्परागत ज्ञान के 23 विषयान्तर्गत क्षेत्रों में 4480 तकनीकों का संकलन एवं उपयोगी ज्ञानों का मूल्यांकन कर सात खण्डों में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है। मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं ओडिसा में 75 से अधिक कृषि विज्ञान केन्द्रों की स्थापना में अहम भूमिका का निर्वहन आपने किया है। अपने कार्यकाल में कृषि में कार्यरत कृषक महिलाओं हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का कृषि विज्ञान केन्द्रों की वार्षिक कार्य योजना में सम्मिलित कर उनका क्रियान्वयन सुनिश्चित किया है जिनमें प्रमुख है न्यूट्री स्मार्ट ग्रामों के माध्यम से पोषण संबंधी कृषि, किसानों की किस्मों का संरक्षण एवं पंजीकरण, किसानों की आय दोगुनी करने हेतु उपयोगी तकनीकों का प्रसार, KVK आत्मा एवं अन्य सहयोगी विभागों के कर्नवजन्स मॉडल से प्रत्येक जिले में 5000 कृषकों के यहाँ एकीकृत कृषि प्रणाली अपनाने हेतु विशेष बल दिया गया है। युनिसेफ, बायोव्हरसिटी इन्टरनेशनल एवं जी. आर.जेड. जैसी विश्व विख्यात संस्थाओं से सहयोग कर प्रदेश के कृषकों के उत्थान हेतु कार्य किया।

## नाम



डॉ. बी. आर. कम्बोज  
कुलपति  
चौधरी चरण सिंह हरियाणा  
कृषि विश्वविद्यालय,  
हिसार, हरियाणा

## विवरण

आप हरियाणा के करनाल जिले में किसान परिवार में जन्मे डॉ. कम्बोज जी ने स्नातक (बीएससी), स्नातकोत्तर (एमएससी) एवं पीएच.डी की उपाधि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार (CCS HAU) से प्राप्त की। शिक्षण के समय ही किसानों से जुड़े डॉ. कम्बोज जी 29 वर्षों से कृषि वैज्ञानिक के रूप में सेवाएं दे रहे हैं। इस दौरान 13 वर्ष तक CIMMYT मैक्सिको में प्रोफेसर के रूप में भी जो अनुसंधान एवं विकास कार्य किए, वे आज भी प्रेरणीय हैं। भारत में इस संस्था के कार्यों के सन्दर्भ में संचालित प्रोजेक्ट में तीन वर्ष तक प्रमुख अधिकारी भी रहे।

पिछले कई वर्षों से आपने CCSHAU हिसार में वैज्ञानिक, विभागाध्यक्ष, समन्वयक, अधिष्ठाता के रूप में योगदान दिया। 260 से अधिक प्रकाशनों में अन्तरासस्य, लेजर लेवलींग शून्य परिष्करण धान रोपण, क्लाइमेट स्मार्ट तकनीक C-DAP का संसोधित उत्पाद, FPARP में सुधार के सन्दर्भ में बतौर सस्य वैज्ञानिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत में पहला विद्युत चलित ट्रैक्टर का इजाद आपके मार्गदर्शन में CCSHAU हिसार में हुआ।

डॉ. कम्बोज जी ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कई विश्वविद्यालयों एवं अनुसंधान केन्द्रों में भी अपना योगदान दिया, जिसमें वेस्टर्न सिडनी यूनिवर्सिटी ऑस्ट्रेलिया, Michigan State University USA, CIMMYT Mexico, IRRI Philippines प्रमुख केन्द्र हैं।

आपने सिडनी-ऑस्ट्रेलिया, इस्ताम्बुल-तुर्की, ढाका-बांग्लादेश, काठमाण्डु-नेपाल, अन्टालिया, दार एस सलाम-तन्जानिया में भी शैक्षणिक भ्रमण किया।

आपके मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय द्वारा कई किस्में विकसित हुईं। आपको कई अवार्ड एवं सम्मान प्राप्त हुए जिसने एम.एस. स्वामीनाथन अवार्ड, कर्नाटक के राज्यपाल के कर कमलों से प्राप्त हुआ।

**नाम**

**विवरण**



**डॉ. अभय कुमार व्यास**  
**कुलपति**  
कृषि विश्वविद्यालय, कोटा

1 जनवरी 1962 को ग्वालियर (मध्यप्रदेश) में जन्मे आदरणीय डॉ. व्यास ने कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय जोबनेर जयपुर से स्वर्ण पदक के साथ स्नातक की उपाधि प्राप्त की। स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी (1983-1988) की उपाधि भी उच्चतम ग्रेड के साथ सस्य विज्ञान विषय से भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आई.ए.आर. आई) नई दिल्ली से प्राप्त की। वर्ष 1986 में नाबार्ड में सहायक तकनीकी विकास अधिकारी (तकनीकी) से करियर की शुरुआत करते हुए आगे की राह निश्चित की, तत्पश्चात् सहायक प्राध्यापक, सह प्राध्यापक के साथ प्रधान वैज्ञानिक के रूप में भी सेवाएँ कृषि अनुसंधान केन्द्र, कृषि महाविद्यालय, कृषि विश्वविद्यालय, में दी। एनआरसी सोयाबीन, इन्दौर में प्रधान वैज्ञानिक के रूप में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली की सेवाओं में शामिल हुए साथ ही आई.ए.आर.आई. नई दिल्ली में सस्य विज्ञान संभाग के रूप में कार्य किया। बाद में, मार्च, 2014 में सहायक महानिदेशक (मानव संसाधन प्रबंधन) आईसीएआर, नई दिल्ली के रूप में चयन हुआ, जहाँ आपने 11 अक्टूबर, 2022 तक सेवाएं दी। आईसीएआर के पहले सहायक महानिदेशक (मा. स. प्र.) के रूप में, आपने आईसीएआर मुख्यालय में पूरी तरह कार्यात्मक मानव संसाधन प्रबंधन इकाई की स्थापना की। आपके कार्यकाल के दौरान आईसीएआर की एचआरएम पहल और उपलब्धियों को न केवल आईसीएआर द्वारा बल्कि डीओपीटी, भारत सरकार द्वारा भी मान्यता मिली और उनमें से कुछ को 2018 से आईसीएआर की भाँति केन्द्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में लागू किया जा रहा है।

आपकी विशेषज्ञता का क्षेत्र सोयाबीन, सस्य विज्ञान और फसल प्रणालियों में पोषक तत्व प्रबंधन है। इस संदर्भ में 26 प्रौद्योगिकियों को विकसित कर देश के विभिन्न क्षेत्रों के लिए 10 कृषि तकनीकी की सिफारिश की, जो राज्यों के पी.ओ.पी. में शामिल हुई।



**डॉ. राजेश्वर सिंह चन्देल**  
**कुलपति**  
डॉ. वाई. एस. परमार  
कृषि एवं वानिकी विश्वविद्यालय,  
सोलन हिमाचल प्रदेश  
**गवर्निंग बोर्ड मेम्बर**  
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्  
नई दिल्ली

आप बचपन से प्रकृति और पर्यावरण से लगाव रखते हुए कृषि अनुसंधान के क्षेत्र में अपना करियर तय किया। आपका सम्पूर्ण शैक्षणिक रिकार्ड मेधावी रहा। वरिष्ठ अनुसंधानकर्ता एवं प्रशासनिक अधिकारी के रूप में 28 वर्षों का अनुभव है। वर्तमान में आप हिमाचल प्रदेश में प्राकृतिक कृषि के अभियान के कार्यकारी निदेशक हैं जो कि हिमाचल सरकार द्वारा संचालित प्राकृतिक खेती कौशल किसान योजना [PKBY] है। आप का रुचिप्रद क्षेत्र प्राकृतिक कृषि, कृषि पारिस्थितिकी एवं टिकाऊ खाद्य प्रणाली है। इस समय आप हिमाचल प्रदेश में स्थाई एवं टिकाऊ खाद्य प्रणालियों को सक्षम एवं सक्रिय संचालन हेतु प्रयासरत हैं। यह प्रयास विशेष तौर पर पूरे हिमाचल क्षेत्र में किया जा रहा है। आप कृषि एवं किसान कल्याण मन्त्रालय भारत सरकार, नीति आयोग नई दिल्ली एवं कई राज्यों के सरकारी व्यवस्था में सहयोगी सदस्य हैं। आप भारत सरकार द्वारा गठित कई समितियों में सदस्य हैं। फ्रान्स सरकार के नेतृत्व में गठित कृषि पारिस्थितिकी पर वैश्वक संघ के सदस्य भी हैं।

**नाम**

**विवरण**



**डॉ. एस. के. शर्मा**  
**सहायक महानिदेशक (HRM)**  
 भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद,  
 नई दिल्ली

आपने स्नाकोत्तर की उपाधि स्वर्ण पदक के साथ प्राप्त की। पीएच.डी की उपाधि जवाहर लाल नेहरू अवार्ड (2021) के साथ भारतीय कृषि अनुसंधान संस्था नई दिल्ली से टिकाऊ कृषि के विषय में प्राप्त की। बतौर सस्य वैज्ञानिक आपको 27 वर्षों से शिक्षण, अनुसंधान एवं प्रसार कार्यों का अनुभव है इस संदर्भ में आपने उच्च पदों पर सेवाए भी दी। प्राकृतिक कृषि के संबन्ध में प्रयासरत उपसमिति के चैयरमेन के रूप में राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के प्राकृतिक कृषि के संदर्भ में तैयार हो रहे पाठ्यक्रम के संचालनकर्ता वैज्ञानिकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। आपने स्नातक कोर्स का पाठ्यक्रम निर्माण राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार सभी विश्वविद्यालय हेतु तैयार किया है। जैविक खेती के विभिन्न आयामों में अनुसंधान कर राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न फसलों के जैविक पैकेज आफ प्रैक्टिसेज एवं नई तकनीकी किसानों तथा जैविक उत्पादकों के लिए प्रदान की। आपने विभिन्न अनुसंधान परियोजनाएं तथा देश के वैज्ञानिकों के जैविक खेती में प्रशिक्षण के लिए विशेष कार्य किया है। जैविक खेती के अनुसंधान कार्यों से महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में संचालित राष्ट्रीय जैविक खेती नेटवर्क परियोजना को राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम पुरस्कार से नवाजा गया। आपके प्रयासों से प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा सही वैज्ञानिक ज्ञान के द्वारा जैविक खेती में उत्पादन क्षमता संवर्धन के कार्यों में राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर पर विशेष सहयोग मिला तथा राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली जैविक कृषि के क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आपका महत्वपूर्ण योगदान है। इस संदर्भ में 26 अनुसंधान एवं विकास प्रोजेक्ट सफल किये 130 अनुसंधान पत्र, 9 किताबें, 30 तकनीकी पत्रक एवं 150 से अधिक बहुप्रसिद्ध आलेख प्रकाशित किये। आपने जैविक कृषि के विकास एवं विस्तार के संदर्भ में वेस्टर्न सिडनी यूनिवर्सिटी, सिडनी-ऑस्ट्रेलिया, कोलम्बो-श्रीलंका, एवं सिपोल-दक्षिण कोरिया में भ्रमण भी किया।



**डॉ. अरुण कुमार तोमर**  
**निदेशक**  
 केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान केन्द्र,  
 अविका नगर मालपुरा, टोंक  
**गवर्निंग बोर्ड मेम्बर**  
 भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्  
 नई दिल्ली

वर्ष 1995 से आप ICAR-CSRWRI से जुड़े हैं। पिछले 30 वर्षों से भेड़, बकरी, खरगोश एवं अन्य पशुओं के सन्दर्भ में आपको विशेष अनुभव प्राप्त है। पूर्व में आप निदेशक हेड ऑफ डीवीजन, प्रोजेक्ट, कॉर्डिनेटर फॉर शीप इम्प्रूवमेन्ट, इन चार्ज-कार्डीनेशन सेल-पी.आई. एवं को पी.आई. के रूप में भिन्न-भिन्न अनुसंधान योजनाओं में भूमिका निभाई। कई प्रकार की समितियों जैसे- अनुसंधान संस्था समिति, राष्ट्रीय सलाकार समिति – DAHD, अनुसंधान सलाहकार समिति में सदस्य रहे। आपने भेड़ों के जैसे मालपुरा, पाटनवाड़ी एवं सिरोही नस्ल की बकरी के लिए आनुवांशिक गुणों के सुधार हेतु प्रयास कर, किसानों के लिए उपलब्धता सुनिश्चित की। ‘अविशान’ (भेड़) की नस्ल को विकसित करने के लिए बतौर खण्ड प्रमुख एवं प्रोजेक्ट मेम्बर सहयोग प्रदान किया। दुधारू पशुओं के विकास हेतु फ्रीजवाल नस्ल के विकास में सहयोगी रहे।

आपने 130 अनुसंधान आलेख, 30 पुस्तकें, 76 बहुउपयोगी आलेख एवं 25 तकनीकी साहित्यों का संकलन एवं लेखन कर प्रकाशन किया। आपने पशुपालन के लिए आवश्यक आधारभूत संरचनाओं के लिए कई नवाचार किए, भेड़-बकरी पालन की जानकारी कृषकों तक साझा करने हेतु ‘अविमित्रा’ अविदिश आदि मोबाईल एप्प विकसित करवाए। भेड़ों की ऊन से खाद बनाने की विधि विकसित करवा कर भूमि सुपोषण का प्रयास किया। भेड़ के दुग्ध, मांस, ऊन आदि का प्रसंस्करण कर कई उत्पाद तैयार करवाये।

## अनुसंधान एवं प्रसार सलाहकार समिति का विवरण

क्र.स.	नाम	पद
1.	<b>श्रीमान ताराचन्द्र गोयल</b> निदेशक, गोयल ग्रामीण विकास संस्थान कोटा	अध्यक्ष
2.	<b>डॉ. इन्द्रनारायण गुप्ता</b> पूर्व निदेशक – प्रसार शिक्षा, कृषि विश्वविद्यालय कोटा	सदस्य
3.	<b>डॉ. प्रताप सिंह</b> निदेशक – (अनुसंधान) एवं प्रोफेसर (सस्य विज्ञान), कृषि विश्वविद्यालय कोटा	सदस्य
4.	<b>डॉ. एस.के. जैन</b> निदेशक – प्रसार शिक्षा, कृषि विश्वविद्यालय कोटा	सदस्य
5.	<b>डॉ. नवरतन पंवार</b> अध्यक्ष, काजरी प्रादेशिक अनुसंधान संस्थान बीकानेर	सदस्य
6.	<b>डॉ. आशुतोष मिश्रा</b> निदेशक (शिक्षा) एवं प्रोफेसर (भू-परिदृश्य में फूल विज्ञान), उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय झालावाड़ (राज.)	सदस्य
7.	<b>डॉ. प्रताप सिंह</b> क्षेत्रीय निदेशक अनुसंधान, कृषि अनुसंधान केन्द्र उम्मेदगंज कोटा	सदस्य
8.	<b>डॉ. राजेन्द्र बाबू दुबे</b> सहायक निदेशक, बीज उत्पादन महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय उदयपुर (राज.)	सदस्य
9.	<b>डॉ. महेन्द्र कुमार गर्ग</b> पूर्व प्रोफेसर (पशु प्रबन्धन) – कृषि विश्वविद्यालय कोटा पूर्व सलाहकार राष्ट्रीय कामधेनू आयोग	सदस्य
10.	<b>डॉ. वी.के. अग्रवाल</b> पूर्व प्रोफेसर कीट विज्ञान, कृषि अनुसंधान केन्द्र कीट विज्ञान खण्ड, दुर्गापुरा	सदस्य
11.	<b>डॉ. पल्लवी शर्मा</b> सह-आचार्य एवं समन्वक सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग कोटा विश्वविद्यालय, राजस्थान	सदस्य
12.	<b>डॉ. डी. एल. यादव</b> सहायक आचार्य (पादप रोग विज्ञान) कृषि अनुसंधान केन्द्र उम्मेदगंज कोटा, कृषि विश्वविद्यालय कोटा	सदस्य
13.	<b>डॉ. जय सिंह</b> कृषि अनुसंधान अधिकारी (मृदा और रसायन) मृदा परिक्षण प्रयोगशाला कोटा राज्य कृषि विभाग राज. सरकार	सदस्य
14.	<b>डॉ. रामराज मीणा</b> सह-प्राध्यापक, (उद्यान विज्ञान) – कृषि अनुसंधान केन्द्र उम्मेदगंज कोटा	सदस्य
15.	<b>डॉ. नरेश कुमार शर्मा</b> सहायक निदेशक – कृषि (विस्तार) सांगोद (कृषि विभाग)	सदस्य
16.	<b>डॉ. ए. के. मिश्रा</b> प्रदेश प्रमुख (राजस्थान), एन. एच. आर. डी. एफ. राजस्थान	सदस्य

## अनुसंधान एवं प्रसार सलाहकार समिति का विवरण

क्र.स.	नाम	पद
17.	<b>डॉ. शंकर लाल यादव</b> सहायक आचार्य (सस्य विज्ञान) कृषि अनुसंधान केन्द्र उम्मेदगंज, कृषि विश्वविद्यालय कोटा	सदस्य
18.	<b>डॉ. भवानी शंकर मीणा</b> सह. आचार्य (सस्य विज्ञान) कृषि अनुसंधान केन्द्र उम्मेदगंज, कृषि विश्वविद्यालय कोटा	सदस्य
19.	<b>डॉ. गुन्जन सनाढ्य</b> सहायक प्राध्यापक (गृहविज्ञान) कृषि विज्ञान केन्द्र कोटा, कृषि विश्वविद्यालय कोटा	सदस्य
<b>कृषक प्रतिनिधि</b>		
20.	<b>पद्म श्री हुकमचन्द पाटीदार</b> अखिल भारतीय जैविक प्रमुख, भारतीय किसान संघ (राजस्थान)	सदस्य
21.	<b>श्रीमति राममूर्ति मीणा</b> प्रदेश महिला प्रमुख भारतीय किसान संघ (राजस्थान)	सदस्य
<b>विविध क्षेत्र</b>		
22.	<b>श्रीमान् बलविन्द्र गिल</b> प्रबन्ध निदेशक एवं सयुक्त रजिस्ट्रार, कोटा केन्द्रीय सहकारी बैंक	सदस्य
23.	<b>श्रीमान् राम प्रसाद शर्मा</b> डी.डी. एम कोटा, नाबार्ड राजस्थान	सदस्य
24.	<b>श्रीमान् हरीओम मीणा</b> कार्यक्रम अधिकारी अखिल भारतीय रेडियो स्टेशन कोटा	सदस्य
<b>संस्थागत प्रतिनिधि</b>		
25.	<b>डॉ. पवन कुमार</b> मुख्य प्रबंधक – गोयल ग्रामीण विकास संस्थान कोटा, (श्रीरामशान्ताय जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र)	सदस्य सचिव

भारत सरकार शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग के  
सचिव एवं भारतीय कृषि अनुसंधान नई दिल्ली (ICAR) के महानिदेशक डॉ. हिमांशु पाठक द्वारा  
श्रीरामशान्ताय जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र का अवलोकन



मिट्टी जाँच प्रयोगशाला



खाद अनुसंधान इकाई



पोषण वाटिका



टेक्नोपार्क



फसल अनुसंधान इकाई



कीट विज्ञान प्रयोगशाला

संत सानिध्य



श्वेताम्बर जैनमुनि



डॉ. राघवाचार्य जी महाराज, रेवासा धाम



गोवत्स राधाकृष्ण जी महाराज



योगेश महंत योगी महाराज, वेष्णोपीठ



बाबा निरंजन नाथ जी अवधूत श्री गोरक्ष-धाम आश्रम गरुघाट, अटरू



चन्द्रशेखर नन्द जी महाराज, नूरमहल पंजाब

सानिध्य



डॉ. मोहन मधुकरराव भागवत परम पूजनीय सरसंघचालक (RSS) (हरतीनापुर, मेरठ में आयोजित कार्यक्रम में केन्द्र की प्रदर्शनी का अवलोकन)



श्रीमान् कलराज जी मिश्र महामहिम राज्यपाल (राजस्थान कोटा विश्वविद्यालय के अतिथि गृह में आयोजित कार्यक्रम)



भारत सरकार के कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग के सचिव एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के महानिदेशक डॉ. हिमांशु पाठक, डॉ. वाई एस परमार उद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी – सोलन, (हिमाचल प्रदेश) के कुलपति, प्रो. राजेश्वर सिंह चन्देल, कृषि विश्वविद्यालय, कोटा के कुलपति डॉ. अभय व्यास, श्रीमान् कृष्ण मुरारी (अखिल भारतीय बीज प्रमुख भारतीय किसान संघ) एवं श्रीमान् ताराचन्द गोयल निदेशक गोयल ग्रामीण विकास संस्थान, कोटा एवं अन्य शिर्ष प्रतिनिधि



श्रीमान् अर्जुन राम मेघवाल, कानून न्याय मंत्री, भारत सरकार (अनुसंधान केन्द्र की सूक्ष्म जीव विज्ञान प्रयोगशाला का अवलोकन)



श्रीमान् कैलाश चौधरी माननीय केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री भारत सरकार  
श्रीमान् लालचन्द कटारिया कृषि मंत्री राजस्थान सरकार  
श्रीमान् उदयलाल आंजना सहकारिता मंत्री राजस्थान सरकार  
(खाद अनुसंधान इकाई का अवलोकन)

सानिध्य



श्रीमान् दिनेश जी कुलकर्णी (अखिल भारतीय संघटन मंत्री, भारतीय किसान संघ)



श्रीमान् अजीत जी महापात्र, अखिल भारतीय गो सेवा प्रमुख



श्रीमान् हनुमान सिंह जी राठौड़ (पूर्व क्षेत्रीय कार्यवाह, राजस्थान प्रदेश, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ)



श्रीमान् मंगेश जी (अखिल भारतीय व्यवस्था प्रमुख, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ)



श्रीमान् अनिल जी ओक (अखिल भारतीय सह व्यवस्था प्रमुख, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ)

## सम्मान एवं पुरस्कार

जैविक कृषि के क्षेत्र में अनुसंधान एवं प्रशिक्षण के सन्दर्भ में राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट कार्य के लिए संत ईश्वर फाउण्डेशन नई दिल्ली द्वारा श्रीरामशान्ताय जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र कोटा का चयन किया गया जिसके सम्बन्ध में नई दिल्ली स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में श्रद्धेय सुरेश भैया जी, पूर्व सरकार्यवाह और अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, माननीय लोकसभा अध्यक्ष श्रीमान् ओमकृष्ण बिरला एवं माननीय राज्य मन्त्री जितेन्द्र सिंह जी ने संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक श्री पवन कुमार टाक को संत ईश्वर सम्मान से सम्मानित किया। इसी कार्यक्रम के सम्बन्ध में महामहिम उपराष्ट्रपति श्रीमान् जगदीप जी धनखड़ ने उपराष्ट्रपति भवन में आमन्त्रित कर सम्मानित किया।



## श्रीरामशान्ताय जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र कोटा के अनुसंधान आयाम



श्रीरामशान्ताय जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र कोटा के  
अनुसंधान क्षेत्र



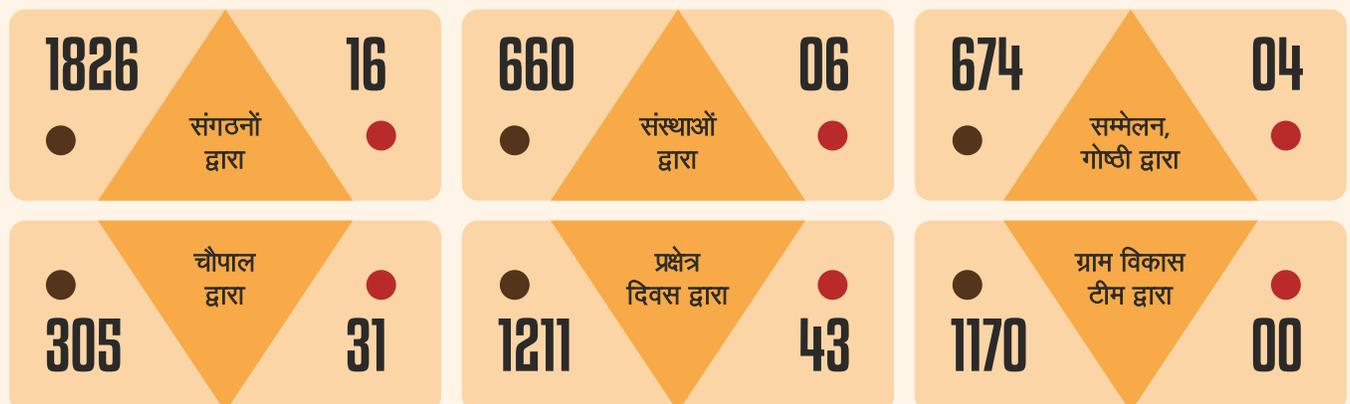
फोटो – अनुसंधान की पावन परम्परा के निर्वहन के संदर्भ में झोन दृश्य

## प्रसार कार्यो का विवरण

### • संस्थान पर (On Campus)



### • अन्य स्थानों पर (Out Campus)



जैविक कृषि के सम्बन्ध में किये गये प्रयासों को भिन्न-भिन्न माध्यम से कुल 12451 कृषकों तक प्रसारित किया गया

● ब्राउन रंग के गोले सम्बन्धित संख्या के साथ अंकित है वे किसानों की संख्या है। ● लाल रंग के गोले सम्बन्धित संख्या के साथ अंकित है वे कार्यक्रमों की संख्या है।

### मासिक प्रशिक्षण कार्यक्रम

मई 2022 से मार्च 2024 तक का विवरण (प्रांगण पर हर माह की 15 तारीख को आयोजित)

क्र.स.	दिनांक	पुरुष	महिलाएं	हाड़ौती के जिले	अन्य जिले (राज.)	राज्य	किसानों की संख्या
1.	15.05.2022	68	1	4	12	1 (मध्यप्रदेश)	69
2.	15.06.2022	72	3	4	12	0	75
3.	15.07.2022	21	1	3	5	0	22
4.	15.08.2022	10	0	3	3	0	10
5.	15.09.2022	104	16	4	14	1 (मध्यप्रदेश)	120
6.	15.10.2022	29	0	4	9	0	29
7.	15.11.2022	35	0	4	7	1 (मध्यप्रदेश)	35
8.	15.12.2022	52	2	4	5	2 (बिहार मध्यप्रदेश)	54
9.	15.01.2023	75	2	3	11	0	77
10.	15.02.2023	62	6	4	7	4 (होशंगाबाद, मुजफ्फर नगर, म.प्र.)	68
11.	15.03.2023	40	0	3	5	0	40
12.	15.04.2023	72	12	4	10	4	84



### मासिक प्रशिक्षण कार्यक्रम

मई 2022 से मार्च 2024 तक का विवरण (प्रांगण पर हर माह की 15 तारीख को आयोजित)



क्र.स.	दिनांक	पुरुष	महिलाएं	हाड़ौती के जिले	अन्य जिले (राज.)	अन्य राज्य	किसानों की संख्या
13.	15.05.2023	31	0	4	13	1 (हरियाणा)	31
14.	15.06.2023	82	2	4	7	1 (उत्तरप्रदेश)	84
15.	15.07.2023	43	0	4	12	0	43
16.	15.08.2023	71	0	4	9	3 (उत्तरप्रदेश, हरियाणा, मध्यप्रदेश)	71
17.	15.09.2023	34	0	3	7	0	34
18.	15.10.2023	28	2	4	6	3 (उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश)	30
19.	19.11.2023	22	0	3	6	2 (हरियाणा, मध्यप्रदेश)	22
20.	15.12.2023	38	0	3	9	2 (हरियाणा)	38
21.	15.01.2024	22	0	3	5	3 (गोवा, हरियाणा, मध्यप्रदेश)	22
22.	15.02.2024	27	0	3	4	1 (हरियाणा)	27
23.	15.03.2024	55	3	4	8	2 (हरियाणा, दिल्ली)	58
	योग	1093	50				1143

कृषि अनुसंधानकर्ताओं और विद्यार्थियों द्वारा भ्रमण एवं प्रशिक्षण

क्र.स.	दिनांक	विश्वविद्यालय	अनुसंधानकर्ता		कुल संख्या
			छात्र	छात्राएँ	
1.	28.11.2022	कृषि विश्वविद्यालय कोटा	10		10
2.	03.04.2023	करियर प्वाइंट विश्वविद्यालय कोटा	45	5	50
3.	06.04.2023	करियर प्वाइंट विश्वविद्यालय कोटा	27	8	35
4.	28.11.2023	कृषि विश्वविद्यालय कोटा	10		10
क्र.स.	दिनांक	अनुसंधान केन्द्र	विद्यार्थी		कुल संख्या
			छात्र	छात्राएँ	
1.	03.08.2022	भा.कृ.अनु.प.—भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, अनुसंधान केन्द्र डडवाड़ा, कोटा	19		19
2.	09.11.2022	भा.कृ.अनु.प.—भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, अनुसंधान केन्द्र डडवाड़ा, कोटा	50		50
3.	09.06.2023	भा.कृ.अनु.प.—भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, अनुसंधान केन्द्र डडवाड़ा, कोटा	9		9
4.	14.07.2023	भा.कृ.अनु.प.—भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, अनुसंधान केन्द्र डडवाड़ा, कोटा	15	14	29
5.	18.08.2023	भा.कृ.अनु.प.—भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, अनुसंधान केन्द्र डडवाड़ा, कोटा	12	11	23
6.	19.09.2023	भा.कृ.अनु.प.—भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, अनुसंधान केन्द्र डडवाड़ा, कोटा	20	17	37
क्र.स.	दिनांक	महाविद्यालय	विद्यार्थी		कुल संख्या
			छात्र	छात्राएँ	
1.	28.11.2022	माता भगवती देवी संस्कृति महिला कृषि महाविद्यालय सीसवाली, बारां		55	55
2.	02.03.2024	पंडित दीनदयाल उपाध्याय कृषि महाविद्यालय, देवली टोंक	49	8	57
क्र.स.	दिनांक	महाविद्यालय	विद्यार्थी		कुल संख्या
			छात्र	छात्राएँ	
1.	19.01.2024	राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय श्रीपुरा कोटा	6	106	112
2.	27.02.2024	पी. एम. श्री राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सांगोद कोटा	32	33	65
<b>योग</b>			<b>304</b>	<b>257</b>	<b>561</b>

भा.कृ.अनु.प. — भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली

**राजस्थान सरकार के कृषि विभाग द्वारा भ्रमण एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम**  
(कृषि विभाग एवं एग्रीकल्चर टेक्नोलॉजी मैनेजमेन्ट एजेन्सी, आत्मा के द्वारा)

क्र.स.	दिनांक	विभागीय अधिकारी		कुल संख्या
		पुरुष	महिला	
1.	11.01.2023	30	0	30
2.	23.08.2023	29	6	35
3.	13.09.2023	29	4	33
4.	17.01.2024	29	5	34
	<b>कुल योग</b>	<b>117</b>	<b>15</b>	<b>132</b>

क्र.स.	दिनांक	कुल संख्या	क्र.स.	दिनांक	कुल संख्या
1.	14.09.2022	30	4.	11.10.2023	25
2.	21.09.2022	30	5.	31.01.2024	30
3.	23.01.2023	30		<b>कुल योग</b>	<b>145</b>



क्र.स.	दिनांक	कीटनाशक विक्रेता
1.	12.12.2020	40 प्रतिनिधि
	<b>योग</b>	<b>40</b>



## विशेष भ्रमण कार्यक्रम

भारत सरकार के कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग के प्रतिनिधि (भिन्न-भिन्न कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिक), नाबार्ड के क्षेत्रीय प्रबन्धन मण्डल व राजस्थान कृषि विभाग एवं एग्रीकल्चर टेक्नोलॉजी मैनेजमेन्ट एजेन्सी, (ATMA) के द्वारा हुए भ्रमण कार्यक्रमों का विवरण



1. नाबार्ड राजस्थान के मुख्य प्रबंधक निदेशक श्रीमान् बी.एन. कुरूप के संग सम्पूर्ण राजस्थान के 35 जिला विकास अधिकारीयों द्वारा दिनांक 12.01.2023 को अवलोकन हुआ।

2. राज्य सरकार के द्वारा जैविक एवं प्राकृतिक खेती के विस्तार हेतु Agriculture Technology Management Agency (ATMA) के द्वारा श्रीरामशान्ताय जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र कोटा के अनुसंधान कार्यों के प्रत्यक्ष दर्शन हेतु कार्य योजनाओं में सम्मिलित किये जाने की दृष्टि से निदेशक समेती (आत्मा), जयपुर के द्वारा गठित कमेटी जिसमें कृषि अनुसंधान केन्द्र उम्मेदगंज कोटा, उपनिदेशक उद्यान (अनुसंधान) एटीसी, नान्ता कोटा, उपनिदेशक कृषि (सामान्य) कोटा, कृषि अधिकारी (प्रशिक्षण) सहायक निदेशक कृषि (विस्तार) सांगोद, कृषि अनुसंधान अधिकारी, मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला तबेला हाउस, कोटा कृषि अनुसंधान अधिकारी (कीट), एटीसी, नान्ता कोटा के माध्यम से निरीक्षण एवं भ्रमण दिनांक 17 अगस्त 2023 को हुआ।

3. भारत सरकार के द्वारा जैविक एवं प्राकृतिक खेती के विस्तार हेतु कृषि स्नातक (प्राकृतिक खेती) पाठ्यक्रम के संचालन हेतु चयनित 35 सदस्य दल Centre for Advanced Faculty Training (CAFT) on Organic Farming के तहत 3 राज्यों के 9 कृषि विश्वविद्यालय के 35 कृषि वैज्ञानिकों को महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय उदयपुर के सहयोग से श्रीरामशान्ताय जैविक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र पर जैविक कृषि विस्तार के सम्बन्ध में अवलोकन एवं शिक्षण हेतु एक दिवसीय प्रक्षेत्र भ्रमण हेतु दिनांक 09 सितंबर 2023 को आए।

4. भारत सरकार के द्वारा जैविक एवं प्राकृतिक खेती के विस्तार हेतु Centre for Advanced Faculty Training (CAFT) on Organic Farming के तहत 9 राज्यों के 13 कृषि विश्वविद्यालय के 35 कृषि वैज्ञानिकों को महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय उदयपुर के सहयोग से श्रीरामशान्ताय जैविक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र पर जैविक कृषि विस्तार के सम्बन्ध में ज्ञानार्जन हेतु एक दिवसीय प्रक्षेत्र भ्रमण हेतु दिनांक 10 फरवरी 2024 को आए।

## संस्थागत भ्रमण एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम

राजस्थान में जैविक कृषि पर प्रयासरत समस्त संस्थाओं के कृषक समूहों द्वारा प्रांगण पर हुए भ्रमण एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विवरण

क्र.स.	संस्था का नाम	कार्यक्रमों की संख्या	जिस क्षेत्र से किसान आए, उसका नाम	महिलाएं	पुरुष	किसानों की संख्या
1.	एकल नारी संस्था कोटा	3	बारां, भीलवाड़ा, राजसमन्द	168	0	168
2.	खेती विरासत मिशन, पंजाब	1	कोटा	0	30	30
3.	AROH फाउण्डेशन दिल्ली	2	बारां	0	115	115
4.	BAIF Development Research Foundation, Pune, Maharashtra	1	उदयपुर	0	15	15
5.	DSC, केलवाड़ा बारां	1	बारां	12	3	15
6.	सिकोईडिकोन, जयपुर	3	कोटा, बारां, टोंक	29	70	99
7.	दिशा अजमेर	1	अजमेर	0	33	33
8.	प्रधान संस्था, नई दिल्ली	1	उदयपुर	0	4	4
9.	प्रेम समृद्धि फाउण्डेशन, बून्दी	3	बून्दी	33	217	250
10.	प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, माउंटआबु	1	कोटा	50	50	100
11.	सृजन, सवाई माधोपुर	3	बारां, करौली, भरतपुर, प्रतापगढ़, पाली	16	93	109
12.	सेवा मन्दिर संस्थान, उदयपुर	2	उदयपुर, राजसमन्द	30	16	46
13.	सेन्टर फॉर माइक्रो फाइनेन्स जयपुर	4	टोंक, सिरोही	32	87	119
14.	Nation Center For Human Satelment & Environtment Ranpur Kota	1	कोटा	32	6	38
15.	NCNF हेदराबाद	1	जयपुर	0	32	32
16.	वाटरशेड ऑर्गेनाइजेशन ट्रस्ट, नई दिल्ली	10	राजसमन्द, उदयपुर, बारां	24	257	281
17.	फाउण्डेशन फॉर इकोलॉजिकल सिक्वोरिटी, गुजरात	15	प्रतापगढ़, भीलवाड़ा	243	417	660
18.	S.S.T. Sohma Guragram, Haryana	1	हरियाणा	0	4	4
19.	जमनालाल कनीराम बजाज ट्रस्ट, सीकर	1	सीकर	0	21	21
20.	आस्था संस्थान, उदयपुर	3	उदयपुर, प्रतापगढ़, झुंजरपुर, पाली, बारां, कोटा, झालावाड़सीकर, सिरोही धोलपुर	153	0	153
21.	ग्राम श्री फाउण्डेशन उदयपुर	4	उदयपुर, राजसमन्द	33	47	80
22.	ग्राम उन्नति फाउण्डेशन, नाहरगढ़ (बारां)	1	बारां	0	17	17
		<b>63</b>		<b>855</b>	<b>1534</b>	<b>2389</b>

## सम्मेलन / कार्यशाला / संगोष्ठी

**बीज संगोष्ठी** – श्रीरामशान्ताय जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र कोटा एवं भारतीय किसान संघ के तत्वाधान से अखिल भारतीय संगठन मन्त्री श्रीमान् दिनेश जी कुलकर्णी, अखिल भारतीय बीज प्रमुख श्रीमान् कृष्णमुरारी, अनुसंधान केन्द्र के निदेशक श्रीमान् ताराचन्द गोयल, पद्म श्री हुकमचन्द पाटीदार के सानिध्य में दिनांक 13 अगस्त 2022 से 15 अगस्त 2022 तक तीन दिवसीय बीज के विषय में कार्यशाला श्रीरामशान्ताय सभागार आदर्श विद्या मन्दिर कोटा में आयोजित हुई। इस कार्यक्रम में देशभर में देशी बीजों के संरक्षण उत्पादन एवं संवर्धन पर कार्य कर रहे किसानों एवं वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम में भारत के प्रत्येक प्रान्त के बीज प्रमुख उपस्थित रहें। कुल 15 सत्रों में बीज के सन्दर्भ में कानूनी जानकारी, किस्म कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण, जीन बैंक, जैव विविधता, पोषण प्रबन्धन और जलवायु का बीज पर प्रभाव, परम्परागत बीजों के लाभ, उत्पादन, संरक्षण, संग्रहण विधि, फलदार पौधों का प्रवर्धन परम्परागत बीजों में जैविक विधि की जानकारी दी। सभी प्रतिनिधियों ने अनुसंधान केन्द्र का अवलोकन किया।



**कृषक सम्मेलन—8 एकड़ से अधिक कृषि भूमि वाले कृषकों का सम्मेलन** अनुसंधान केन्द्र के प्रांगण पर दिनांक 8 जून 2023 को श्रीमान् कृष्णमुरारी (अखिल भारतीय बीज प्रमुख भारतीय किसान संघ) के सानिध्य में, श्रीमान् ताराचन्द गोयल (निदेशक—गोयल ग्रामीण विकास संस्थान कोटा) की अध्यक्षता एवं डॉ. पी.के. गुप्ता (अतिरिक्त निदेशक—कृषि विभाग राज. सरकार) के मार्गदर्शन में हाड़ौती के 4 जिलों की 14 तहसीलों के 133 गाँवों से 395 कृषकों की उपस्थिति में आयोजन हुआ। इस सम्मेलन में एक एकड़ भू-भाग पर किसान स्वयं के परिवार के आहार में आवश्यक खाद्यान जैसे—अनाज, दाल, तिलहन मसाले, सब्जियां आदि के उत्पादन के लिए जैविक कृषि प्रारम्भ करें, इस विषय पर चिन्तन मन्थन हुआ।

### संस्थागत सम्मेलन –

#### जैविक कृषि आधारित प्रबुद्धजन सम्मेलन एवं विचार संगोष्ठी

अनुसंधान केन्द्र के प्रांगण पर राजस्थान में जैविक कृषि पर कार्य करने वाली संस्थाओं के सांमजस्य से जैविक राजस्थान के आगाज हेतु एवं प्राकृतिक / गो आधारित जैविक कृषि के अभियान को द्रुत गति से फलीभूत करने के लिए प्रबुद्धजन सम्मेलन एवं विचार संगोष्ठी दिनांक 7 जनवरी 2024 को भारत सरकार के कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग के सचिव एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के महानिदेशक डॉ. हिमांशु पाठक, प्रो. राजेश्वर सिंह चन्देल माननीय कुलपति, डॉ. वाई एस परमार उद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी – सोलन, (हिमाचल प्रदेश) डॉ. अभय व्यास, कुलपति कृषि विश्वविद्यालय, कोटा एवं श्रीमान् कृष्ण मुरारी (अखिल भारतीय बीज प्रमुख भारतीय किसान संघ) के सानिध्य में एवं श्रीमान् ताराचन्द गोयल की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में जैविक कृषि पर कार्यरत 40 संस्थाओं के शीर्ष अधिकारी एवं हाड़ौती के 4 जिलों की 14 तहसीलों के 136 गाँवों से 450 किसान उपस्थित रहे थे। संगोष्ठी में जैविक राजस्थान के सन्दर्भ में विस्तृत योजना बनाई गई।



फोटो – दर्शक दीर्घा में किसान



फोटो – संस्थागत प्रतिनिधि गण एवं अतिथि

## कृषक महिला सशक्तिकरण

राजस्थान के भिन्न-भिन्न जिलों से यहां प्रांगण (On Campus) पर 1594 महिला कृषकों को प्रशिक्षित किया गया, वहीं अन्य स्थानों पर 600 महिला कृषकों प्रशिक्षित किया गया है।



## ❦ जैविक खानपुर अभियान ❦

**जैविक खानपुर अभियान** — खानपुर कस्बा राजस्थान राज्य के झालावाड़ जिले में कोटा के नजदीक स्थित है। अनुसंधान केन्द्र के निदेशक श्रीमान् ताराचन्द जी गोयल का पैतृक निवास एवं कार्यक्षेत्र खानपुर ही है। निष्ठा एवं प्रमाणिकता के साथ कार्य की वजह से इस क्षेत्र में इनके परिवार की पहचान स्थापित है। जैविक कृषि के कार्य को इस क्षेत्र में प्रारम्भ करने हेतु यहां भिन्न-भिन्न कार्यक्रम आयोजित हुए, जिसकी जानकारी निम्नानुसार है।

**चिन्तक बैठक** — दिनांक 14 अप्रैल 2023 को गोयल ग्रामीण विकास संस्थान के निदेशक श्रीमान् ताराचन्द गोयल की अध्यक्षता एवं डॉ. मालचन्द्र जी तेलंग-मेडिकल कॉलेज कोटा एवं चितौड़ प्रान्त कार्यकारिणी सदस्य, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सानिध्य में 60 किसानों के साथ आयोजित चिन्तन बैठक में 5 किसानों को मुहिम का मुखिया बनाते हुए अभियान की रूपरेखा बनाई गई।

**विचार गोष्ठी** — इस अभियान के सन्दर्भ में दिनांक 21 अगस्त 2023 को मांगलिक भवन खानपुर में गोयल ग्रामीण विकास संस्थान के निदेशक श्रीमान् ताराचन्द गोयल की अध्यक्षता में खानपुर के 41 गाँवों के 225 किसानों की उपस्थिति में प्रबुद्धजन सम्मेलन आयोजित हुआ।

**क्रियान्वन्** — उपरोक्त चिन्तन बैठक एवं विचार गोष्ठी में उपस्थित सदस्यों के कई गाँवों में कृषकों तक अभियान की जानकारी रखने हेतु ग्राम चौपाल आयोजित की गई। जिसके माध्यम से कुल 595 किसानों तक अभियान की जानकारी पहुँची। इन गाँवों में प्रक्षेत्र दिवस प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से प्रायोगिक तौर से जैविक खेती की सम्पूर्ण जानकारीयों प्रदान की गई।

**परिणाम** — वर्तमान में 63 गाँव में कार्य प्रारम्भ हुआ। प्रमाणिकता से 60 गाँव में 60 किसान अपने खेत के एक एकड़ तक क्षेत्र पर गो आधारित जैविक कृषि प्रारम्भ कर चुके हैं। इनके ही खेत पर प्रयोगात्मक तौर पर भिन्न-भिन्न प्रयोग भी किए जा रहे हैं, जिसमें हरी खाद, सरल खाद एवं प्रोम खाद आदि के साथ अन्य तरल पोषण घोल, कीट नियन्त्रक का उपयोग कर प्रभावों का अध्ययन वैज्ञानिक स्वरूप में करवाया जा रहा है। जिनका विस्तृत विवरण On Farm Demonstration के रूप में पृष्ठ सं. 52 पर अंकित है।



### भिन्न - भिन्न स्थानों पर विभिन्न संगठनों के साथ आयोजित कार्यक्रम

भारतीय किसान संघ के द्वारा				राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ द्वारा			
क्र.स.	दिनांक	जगह का नाम	कुल संख्या	क्र.स.	दिनांक	जगह का नाम	कुल संख्या
1.	19.06.2022	जाखोड़ा	115	(A) ग्राम विकास आयाम			
2.	13.08.2022	जाखोड़ा	70	1.	03.01.2023	जाखोड़ा	16
3.	14.08.2023	चारचौमा	250	(B) गो सेवा आयाम			
4.	20.08.2023	कालातालाब	250	1.	11.09.2022	जाखोड़ा	70
5.	20.08.2023	जाखोड़ा	150	2.	28.01.2023	अन्ता	50
6.	23.08.2023	अन्ता	50	3.	23.08.2023	जाखोड़ा	26
7.	23.08.2023	विसलाई-सुल्तानपुर	300	4.	08.09.2023	लटूरी	150
8.	20.01.2024	कालातालाब	35	5.	10.09.2023	काचरी	100
		<b>योग</b>	<b>1220</b>	6.	17.09.2023	नैनवा रोड़, बून्दी	44
						<b>योग</b>	<b>440</b>

### संस्थागत कार्यक्रम अन्य स्थानों पर

क्र.स.	दिनांक	कार्यक्रम	कुल संख्या
1.	05.12.2023	मृदा पोषण एवं प्रबन्धन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम बल्लभपुरा	150
2.	12.12.2023	खेती विरासत मिशन द्वारा किट नियन्त्रण व प्रबन्धन कार्यशाला कार्यक्रम बल्लभपुरा	60
3.	22.12.2023	नव नियुक्त कृषि पर्यवेक्षकों का फाउण्डेशन प्रशिक्षण खाद्य प्रसंस्करण केन्द्र, कोटा	40
4.	23.12.2023	राष्ट्रीय किसान दिवस के अवसर पर प्राकृतिक खेती किसान सम्मेलन KVK अन्ता	200
5.	28.12.2023	एकल नारी संस्थान कृषि कार्यालय कोटा	40
6.	07.03.2024	वाटरशेड ऑर्गेनाइजेशन ट्रस्ट, बारां (महिला दिवस के अवसर पर)	170
		<b>योग</b>	<b>660</b>



राष्ट्रीय किसान संघ द्वारा			
क्र.स.	दिनांक	जगह का नाम	कुल संख्या
(A) ग्राम विकास आयाम			
1.	22.08.2023	राजपुरा	150
		<b>कुल योग</b>	<b>1826</b>

## ग्राम चौपाल

अनुसंधान केन्द्र को ग्राम विकास आयाम द्वारा गाँव-गाँव में किसान समूहों के मध्य चर्चा हेतु आयोजित चौपालों की जानकारी

क्र.स.	दिनांक	जगह का नाम तहसील लाडपुरा, कोटा	संख्या
1.	01.09.2022	अरलिया	15
2.	23.03.2023	खेड़ा रामपुर	12
3.	02.05.2023	नोटाना	5
4.	06.05.2023	गलाना	4
5.	16.05.2023	गोरधनपुरा	9
6.	19.05.2023	अरनिया	9
7.	31.05.2023	काल्याखेड़ी	7



तहसील दीगोद, कोटा			
1.	25.08.2022	भाण्डाहेडा	10
2.	25.08.2022	रेलगँव	15
3.	25.04.2023	ढाबा	5
4.	07.05.2023	कराडिया	5
5.	07.05.2023	पोलाई कलां	6
6.	20.05.2023	भट्टीपुरा	5
7.	26.05.2023	बल्लभपुरा	7
8.	24.06.2023	भट्टीपुरा	16
9.	07.02.2024	कल्याणपुरा	10



तहसील कनवास, कोटा			
1.	01.09.2022	देवली माँझी	15
2.	03.07.2023	झालरा	5
3.	03.07.2023	झालरी	6
4.	03.07.2023	राजपुरा	4
5.	05.11.2023	कोलाना जाँगीर	13
1.	02.11.2023	बपावर (सांगोद)	15



तहसील खानपुर, झालावाड़			
1.	27.04.2023	देदिया	15
2.	05.05.2023	कवल्दाँ	8
3.	23.05.2023	खण्डी	9
4.	30.05.2023	अम्बाला	15
5.	23.06.2023	सारोला	13
6.	05.07.2023	सोजपुर	15
7.	05.07.2023	हिचर	13
8.	05.07.2023	कवल्दाँ	15
9.	11.03.2024	खण्डी	4
<b>कुल योग</b>			<b>305</b>

## प्रक्षेत्र दिवस एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम - जैविक कृषि के विस्तार हेतु जागरूकता के लिए

स्थानीय कृषकों के मध्य जैविक कृषि के महत्त्व को दर्शाने के लिए भिन्न-भिन्न गाँवों में कृषकों के यहाँ क्षमता विकास एवं प्रक्षेत्र दिवस आयोजित किए जाते हैं। इस प्रकार के कार्यक्रमों में जैविक कृषि के सन्दर्भ में बुवाई से बाजार तक सम्पूर्ण जानकारी दी जाती है, जिसमें खाद, बीज दवा की चर्चा प्रमुखता से होती है। कृषकों को साहित्य बीज आदि भी वितरित किया जाता है। इसकी विस्तृत जानकारी निम्नानुसार है –

क्र.स.	दिनांक	जगह का नाम	कुल संख्या
<b>लाडपुरा, कोटा</b>			
1.	12.11.2022	गन्दीफली	30
2.	06.12.2022	कल्याणपुरा	30
3.	10.01.2023	हाथीखेड़ा	30
4.	29.05.2023	धाकड़खेड़ी	16
<b>दीगोद, कोटा</b>			
1.	26.05.2023	मेंहन्दी	19
2.	24.06.2023	बल्लभपुरा	16
3.	13.01.2024	खैरुला	40
4.	11.02.2024	डूंगरज्या	25
<b>कनवास, कोटा</b>			
1.	09.08.2022	रूपाहेड़ा	25
2.	11.08.2022	हिंगोनीयाँ	26
3.	01.09.2022	आमली झाड़	17
<b>सांगोद, कोटा</b>			
1.	12.10.2022	काचरी	80
2.	09.11.2022	मोई कला	70
3.	23.12.2023	काचरी	41
<b>खानपुर, झालावाड़</b>			
1.	07.04.2023	करनवास	25
2.	25.04.2023	बिलासरा	21
3.	25.04.2023	सोजपुर	25
4.	27.04.2023	देवपुरा	22
5.	27.04.2023	पिपलाज	26
6.	07.05.2023	पनवाड़	17
7.	07.05.2023	करनवास	21
8.	10.06.2023	करनवास	21
9.	10.06.2023	तारज	20
<b>योग</b>			<b>663</b>



प्रक्षेत्र दिवस / कृषक संगोष्ठी - पोषण प्रबन्धन हेतु सरल कम्पोस्ट निर्माण के संदर्भ में

खेती में आवश्यक खाद की पूर्ति के लिए किसानों द्वारा संग्रह किया जाने वाला गोबर एवं अन्य अपशिष्ट वर्तमान में ठीक पद्धति से नहीं है। किसान गोबर को बड़े-बड़े ढेर (खिड़ी/आकुड़ा/कुड़ा/घुरा/रोड़ी) के रूप में संग्रहित करते हैं। इस ढेर पर सूर्य की सीधी किरणें एवं बारिश की तेज बूंदें पड़ने की वजह से खाद के मुख्य तत्व इसमें उपलब्ध नमी के साथ निष्कासित हो जाते हैं। परिणाम स्वरूप यह गोबर खाद में बदल नहीं पाता है। अर्थात् किसान द्वारा बड़ी मेहनत एवं खर्च के बाद संग्रहित गोबर आगे जा कर न गोबर के स्वरूप में खेत में जाता है और न ही खाद के रूप में। वस्तुतः फसल उत्पादन में अच्छा लाभ नहीं मिलता है। फसल एवं भूमि के लिए आवश्यक तत्वों की आपूर्ति सामान्य पद्धति (खिड़ी) से संग्रह किए गये गोबर से नहीं हो पाती है। इसलिए इस पशुजन्य अपशिष्ट, गोबर आदि को उत्तम एवं सरल पद्धति से खाद में बदलने की विधि श्रीरामशान्ताय जैविक कृषि अनुसंधान व प्रशिक्षण केन्द्र, कोटा के द्वारा विकसित की गई है। केन्द्र पर पिछले 5 वर्षों से खाद बनाने की 14 प्रकार की विधियों पर निरन्तर चल रहे अनुसंधान में अब तक सर्वोत्तम परिणाम (लागत के आधार पर, पोषक तत्वों के आधार पर और सूक्ष्म जीवाणुओं की उपलब्धता के आधार पर) इस विधि में प्राप्त हुए। इस विधि को कृषकों के यहां स्थापित करने के उद्देश्य से गाँव-गाँव में कार्यक्रम आयोजित होते हैं, जिसकी जानकारी निम्नलिखित है।



क्र.स.	दिनांक	जगह का नाम	कुल संख्या
1.	25.09.2022	चौमा बीबू, लाडपुरा, कोटा	70
2.	26.09.2022	भटखेड़ी, खानपुर, झालावाड़	40
3.	24.05.2023	आनन्दपुरा, कनवास, कोटा	22
4.	25.02.2024	हापाहेड़ी, अन्ता, बारां	21
5.	06.03.2024	कनवास, कोटा	49
		<b>योग</b>	<b>202</b>



## विशेष प्रक्षेत्र दिवस / कृषक संगोष्ठी - फसल उत्पादन के सन्दर्भ में

### किसानों के खेतों में प्रदर्शन प्रक्षेत्रों पर

अनुसंधान केन्द्र द्वारा जैविक कृषि के विकास एवं विस्तार हेतु विकसित फसल उत्पादन पद्धतियों को किसानों के यहाँ स्थापित करने हेतु कोटा एवं झालावाड़ जिले के अलग-अलग गाँवों में अलग-अलग फसल प्रदर्शन लगाए गए। जिसमें रसायनिक कृषि के समकक्ष अनन्य प्रयोग किए गए। उक्त प्रदर्शन पर प्राप्त परिणाम से कृषकों को प्रेरित एवं प्रशिक्षित करने हेतु प्रक्षेत्र दिवस एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसकी जानकारी निम्नानुसार है।



1. अनुसंधान केन्द्र द्वारा कोटा जिले के दीगोद कस्बे के डगारिया ग्राम में एक एकड़ के भू-भाग पर उक्त क्षेत्र के निकटतम कृषकों को जैविक कृषि के क्षेत्र के विस्तार हेतु प्रेरित करने के उद्देश्य से ऑन फार्म डेमोंस्ट्रेशन लगाये गये, जिसमें हरी खाद उत्पादन के साथ फोर्टीफाईड कम्पोस्ट द्वारा गेहूँ की फसल उत्पादित की गई। न्यून लागत, सामान्य प्रयास और सन्तुलित पोषण से सन्तुष्टि प्रदान योग्य उत्पादन इस प्रक्षेत्र पर बुवाई से कटाई तक रहा। उक्त परिणामों के प्रत्यक्ष अवलोकन के लिए दिनांक 3 मार्च 2024 को अनुसंधान केन्द्र के निदेशक महोदय श्रीमान् ताराचन्द गोयल के सानिध्यता में दीगोद एवं सुल्तानपुर खण्ड से 24 गाँवों के 240 किसानों की उपस्थिति में कृषक सम्मेलन एवं प्रक्षेत्र दिवस आयोजित किया गया। प्रत्यक्ष परिणाम को देखकर कृषकों का मन जैविक कृषि के प्रति तैयार हुआ।

2. अनुसंधान केन्द्र द्वारा कोटा जिले के लाड़पुरा तहसील के अरण्डखेडा ग्राम में एक एकड़ के भू-भाग पर उक्त क्षेत्र के निकटतम कृषकों को जैविक कृषि के क्षेत्र के विस्तार हेतु प्रेरित करने के उद्देश्य से ऑन फार्म डेमोंस्ट्रेशन लगाये गये, जिसमें हरी खाद के साथ फोर्टीफाईड कम्पोस्ट द्वारा गेहूँ की फसल उत्पादित की गई। न्यून लागत, सामान्य प्रयास और सन्तुलित पोषण से सन्तुष्टि प्रदान योग्य उत्पादन इस प्रक्षेत्र पर बुवाई से कटाई तक रहा। उक्त परिणामों के प्रत्यक्ष अवलोकन के लिए दिनांक 3 मार्च 2024 को अनुसंधान केन्द्र के निदेशक महोदय श्रीमान् ताराचन्द गोयल के सानिध्यता में 18 गाँवों के 84 किसानों की उपस्थिति में कृषक सम्मेलन एवं प्रक्षेत्र दिवस आयोजित किया गया। प्रत्यक्ष परिणाम के अनुसार कृषकों द्वारा आगामी खरीफ ऋतु में जैविक कृषि के लिए एक एकड़ भूमि पर जैविक कृषि का प्रयास शुरू करने की सहमति दी गई।



## ➤ प्रक्षेत्र दिवस / कृषक संगोष्ठी फसल उत्पादन के सन्दर्भ में ➤ (किसानों के खेतों में प्रदर्शन प्रक्षेत्रों पर)

अनुसंधान केन्द्र द्वारा जैविक कृषि के विकास एवं विस्तार हेतु विकसित फसल उत्पादन पद्धतियों को किसानों के यहाँ स्थापित करने हेतु कोटा एवं झालावाड़ जिले के अलग-अलग गाँवों में अलग-अलग फसल प्रदर्शन लगाए गए। जिसमें रसायनिक कृषि के समकक्ष अनन्य प्रयोग किए गए। उक्त प्रदर्शन पर प्राप्त परिणाम से कृषकों को प्रेरित एवं प्रशिक्षित करने हेतु प्रक्षेत्र दिवस एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसकी जानकारी निम्नानुसार है।



अनुसंधान केन्द्र के द्वारा प्रक्षेत्र दिवस (फसल उत्पादन प्रदर्शन)			
क्र.स.	दिनांक	जगह का नाम	कुल संख्या
<b>लाडपुरा, कोटा</b>			
1.	19.03.2024	दसलाना	17
2.	19.03.2024	रंगपुर	17
3.	24.03.2024	गन्दीफली	29
<b>दीगोद, कोटा</b>			
1.	13.03.2024	खेड़ली महाद्वीप	30
2.	22.03.2024	कचौलिया	21
<b>कनवास, कोटा</b>			
1.	18.03.2024	ब्रजनगर	22
2.	21.03.2024	खजूरी	19
3.	21.03.2024	उमरहेड़ी	17
<b>सांगोद, कोटा</b>			
	18.03.2024	बोरिना कलां	42
<b>खानपुर, झालावाड़</b>			
1.	10.03.2024	करनवास	30
2.	10.03.2024	अम्बाला	30
3.	11.03.2024	चिकली	30
4.	11.03.2024	सूमर	30
5.	11.03.2024	पिपलाज	12
<b>योग</b>			<b>346</b>



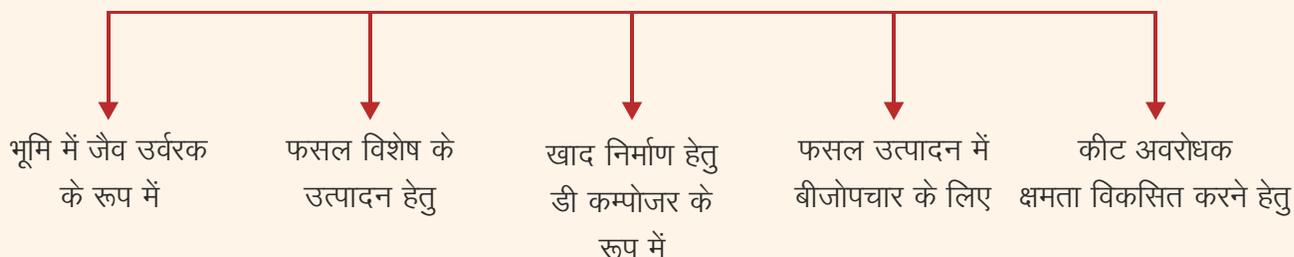
## ❦ जैविक कार्बन का फसल उत्पादन एवं जीवाणु कल्चर से सम्बन्ध का अध्ययन । ❦

**प्रयोग क्रमांक 1** — जैविक कार्बन के द्वारा भूमि की उर्वरता में जैविक कार्बन के सन्तुलित स्तर पर जीवाणु कल्चर के उपयोग के बिना फसल उत्पादन मसूर व मटर की फसल में भिन्न-भिन्न जैविक कल्चर का उपयोग भूमि उपचार (बुवाई पूर्व खाद के साथ, बुवाई बाद सिंचाई के साथ), बीज उपचार हेतु करके देखने पर पाया की कन्ट्रोल प्लॉट (बिना किसी उपचार का) में एवं अन्य प्लॉट में विशेष अन्तर नहीं था ।

अतः जैविक कार्बन वृद्धि हेतु भूमि में फसल अपशिष्ट, हरी खाद एवं कम्पोस्ट का भरपूर उपयोग करना होगा अर्थात् भूमि का जैविक कार्बन अच्छा होने पर किसी प्रकार के जीवाणु कल्चर की आवश्यकता नहीं होती है ।

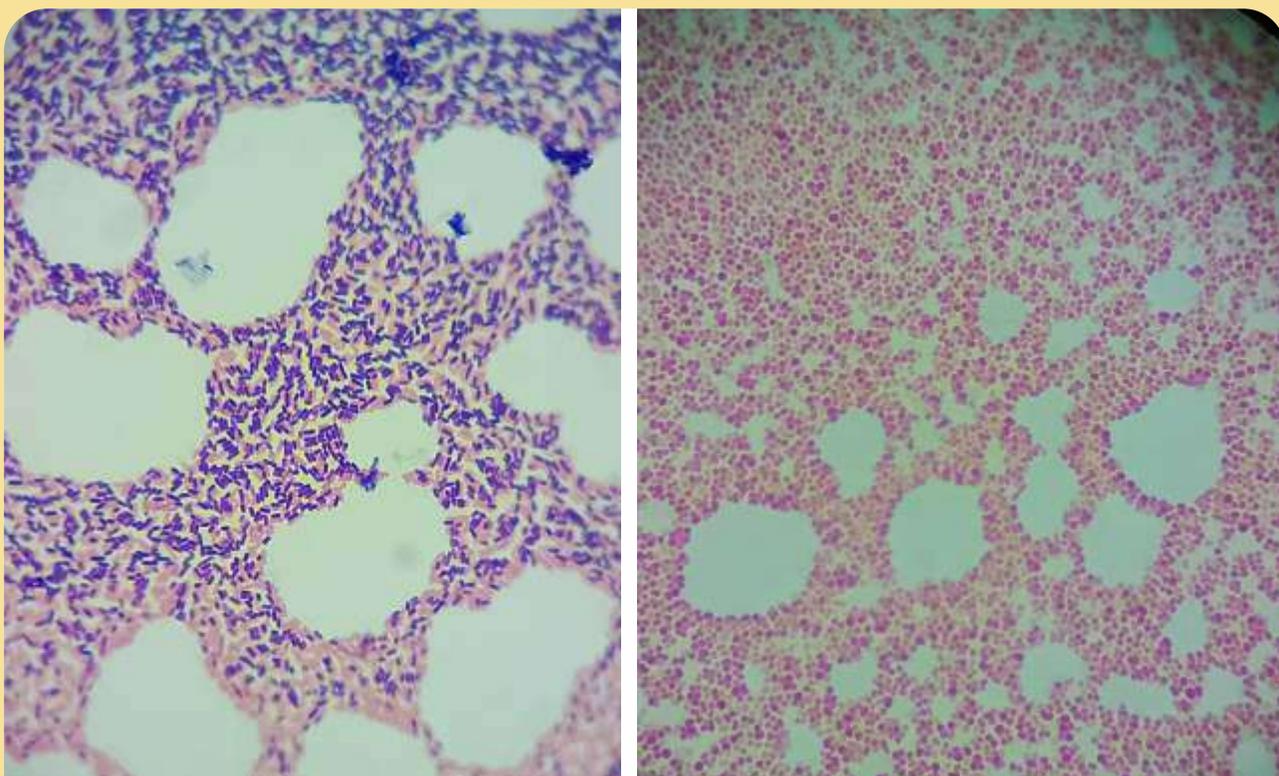


## देशी गाय के ताजा गोबर का जीवाणु कल्चर एवं जैव उर्वरक के रूप में उपयोग



पिछले कई वर्षों से रासायनिक उत्पादों के अत्यधिक उपयोग के परिणाम स्वरूप भूमि की जैविक, रासायनिक एवं भौतिक संरचना में बहुत बड़ा परिवर्तन आया है, इसमें जैविक संरचना के संदर्भ में सूक्ष्म जीवाणुओं की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है जो कि भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हैं एवं अपशिष्ट को विघटित कर खाद में बदलते हैं। वस्तुतः सूक्ष्म जीवाणुओं के संरक्षण, सर्वधन एवं उन्नयन के लिए श्रीरामशान्ताय जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा देश भर में बहुप्रचलित आदानों, जैव उर्वरकों एवं उत्पादों के समकक्ष देशी गाय के ताजा गोबर को ही जीवाणु कल्चर एवं जैव उर्वरक के रूप में उपयोग करने के उद्देश्य से कई वर्षों से अनुसंधान कार्य किया जा रहा है। जिसका विस्तृत विवरण निष्कर्ष एवं कृषकों के द्वारा उपयोग पश्चात् प्रतिक्रिया के साथ वर्णित है।

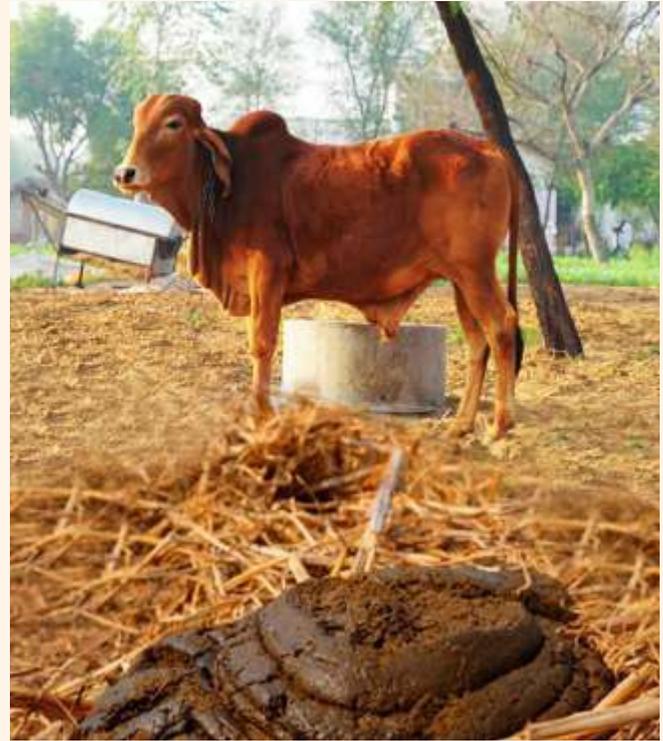
### प्रयोग क्रमांक 2 – जैविक एवं रासायनिक भू-भाग से प्राप्त मिट्टी के नमूनों का जीवाणवीय दृष्टि से तुलनात्मक परीक्षण



हमारे अनुसंधान केन्द्र की सूक्ष्म जीव विज्ञान प्रयोगशाला में भिन्न-भिन्न प्रकार के नमूनों के परीक्षण में पाया गया कि जैविक मिट्टी में जीवाणुओं की संख्या रासायनिक मिट्टी की तुलना में अधिक है अर्थात् जैविक पद्धति से भूमि के जीवाणुओं की वृद्धि एवं संरक्षण होता है एवं रासायनिक पद्धति से भूमि में जीवाणुओं की संख्या में कमी आती है, अर्थात् अत्यधिक रसायनों के उपयोग से भूमि जैविक संरचना में गिरावट आती है।

प्रयोग क्रमांक 3 – देशी गाय के ताजा गोबर में उपलब्ध लाभकारी जीवाणुओं का प्रभाव जैव उर्वरक के रूप में मिट्टी की उर्वरता एवं पोषक तत्वों की वृद्धि के लिए नमी के विभिन्न स्तरों पर अध्ययन।

भूमि में फॉस्फोरस को उपलब्ध रूप में बदलने हेतु देशी गायों के ताजे गोबर का उपयोग प्रत्येक सिंचाई के साथ 75 किलोग्राम देने पर सकारात्मक परिणाम मिले हैं। (ताजा गोबर अर्थात् पाँच से सात दिन का, 70 से 85 प्रतिशत नमी युक्त)



प्रयोग क्रमांक 4 – देशी गाय के ताजा गोबर में उपलब्ध लाभकारी जीवाणुओं का भिण्डी की फसल में उपज वृद्धि एवं अन्य सकारात्मक कारकों के सम्बन्ध में पर्णिय छिड़काव एवं सिंचाई के साथ कई प्रकार के बहुप्रचलित जैव आदानों के समकक्ष तुलनात्मक अध्ययन।



परिणाम – भिण्डी की फसल में उत्पादन वृद्धि हेतु देशी गाय के ताजे गोबर का उपयोग निम्नानुसार करने पर ठीक परिणाम मिले हैं। बीजोपचार हेतु 100 ग्राम ताजे गोबर के शुद्ध रस से प्रति किलोग्राम बीज में उपचारित करते हैं तथा प्रत्येक सिंचाई में 75 किलोग्राम घोल बनाकर देने से परिणाम अच्छे प्राप्त हुए। पर्णिय छिड़काव हेतु 1.5 किलोग्राम ताजा गोबर रस प्रति 15 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करते हैं। उपरोक्त सभी प्रयास पूरी फसल में क्रमशः करने पर उत्पादन में आशाजनक परिणाम मिले हैं।

प्रयोग क्रमांक 5 – देशी गाय के ताजा गोबर में उपलब्ध लाभकारी जीवाणुओं का मैथी, अलसी, गेहूँ की फसल में उपज वृद्धि एवं अन्य सकारात्मक कारकों के सम्बन्ध में अन्य बहुप्रचलित जैव उत्पाद भूमि में खाद के साथ, पानी के साथ व पर्णिय छिड़काव के द्वारा जैव उत्पादों के समकक्ष अध्ययन।



अलसी



मैथी



गेहूँ

**परिणाम –** मैथी, अलसी व गेहूँ की फसल में उत्पादन वृद्धि हेतु देशी गाय के ताजे गोबर का उपयोग निम्नानुसार करने पर ठीक परिणाम मिले है। बीजोपचार हेतु 100 ग्राम ताजे गोबर के रस को प्रति किलोग्राम बीज में मिलाकर उपचारित करते है, भूमि उपचार हेतु (बुवाई पूर्व प्रति एकड़ प्रयोग होने वाली खाद में 75 किलोग्राम ताजा गोबर मिलाते है) तथा प्रत्येक सिंचाई में 75 किलोग्राम घोल बनाकर देने से परिणाम अच्छे प्राप्त हुए। पर्णिय छिड़काव हेतु 1.5 किलोग्राम ताजा गोबर रस 15 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करते है। उपरोक्त सभी प्रयास पूरी फसल में क्रमशः करने पर उत्पादन में आशाजनक परिणाम मिले है।

## किसानों द्वारा ताजे गोबर के उपयोग पश्चात् प्रतिक्रिया

किसानों द्वारा अनाज, तिलहन, दलहन, मसाला, फल, सब्जी आदि फसलों में देशी गाय के ताजे गोबर का उपयोग किया गया।

जिसमें फसल विशेष पर किये गये अनुसंधान कार्यों से प्राप्त निष्कर्षों के अनुसार देशी गाय के ताजा गोबर का प्रयोग उत्कृष्ट रूप में सामने आया है। इस सम्बन्ध में कृषकों के खेतों में फसल विशेष में उपयोग पर उनकी प्रतिक्रियाएं —

1. पिछले वर्ष (2023) खरीफ ऋतु में सोयाबीन की फसल में खरपतवारनाशी का दुष्प्रभाव कारणवश पूरे खेत में रहा। फसल पूर्णतः कमजोर हुई। प्रति एकड़ 100 किलोग्राम देशी गाय का ताजा गोबर — बारिश के समय छोटे-छोटे लड्डू बनाकर उपयोग किया, परिणाम स्वरूप मृत प्रायः फसल में ताजा गोबर संजीवनी सा प्रभावी रहा। इसी प्रकार इस वर्ष (2024) रबी ऋतु में अलसी की फसल भी रोगग्रस्त होते हुए खत्म होने की स्थिति पर आ गई, अलसी में भी ताजा गोबर से सिंचाई के साथ प्रभावी परिणाम मिला। मैंने जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र से प्रेरित हो कर एक एकड़ में गो आधारित जैविक कृषि का प्रयास शुरू किया इस वर्ष रबी ऋतु में गेहूँ की फसल में प्रथम वर्ष में ही हरी खाद एवं सरल कम्पोस्ट के साथ 20 क्विंटल प्रति एकड़ उत्पादकता रही।

रामकल्याण नागर — ग्राम सारोला — तह— खानपुर — जिला झालावाड

सम्पर्क सूत्र — 94147 71934

2. हमारे बगीचे में 35000 अनार के फल वृक्ष है, पिछले वर्ष (2023) कुछ पौधे सूत्रकृमि से प्रभावित हो कर खत्म होने की स्थिति में आ गए। मैंने 200 ली. पानी में 50 किलोग्राम देशी गाय के ताजा गोबर को मिलाकर तैयार घोल से 5 ली. घोल प्रति पेड़ दो-दो बार दिया। वर्तमान में प्रभावित पेड़ हरे-भरे एवं स्वस्थ है।

उम्मेदपुरी दी ग्रेट इंडियन फार्म एग्री बिजनेस लिमिटेड, अजारी फाटक के पास पिण्डवाड़ा, सिरोही जिला

सम्पर्क सूत्र — 63785 19707

3. मेरे गन्ने के खेत में बिमारी लगने के कारण पत्ते पूर्ण रूप से काले हो गए। फसल में नुकसान की स्थिति बढ़ गई। पूरी फसल में ताजा गोबर 10 किलोग्राम 100 ली. पानी में मिलाकर छिड़काव के 7 दिन बाद नजारा बदल गया। जो आश्चर्यजनक विषय रहा मेरे लिए। महेश नागर बमोरी — ग्राम जिला बारां, सम्पर्क सूत्र — 94142 57133

4. मैं पिछले 7 वर्षों से गो आधारित जैविक खेती पर कार्य कर रहा हूँ। 16 एकड़ भूमि पर 10 फसलें खेत आधारित एवं गो आधारित व्यवस्था से उत्पादित होती है। पिछले कई वर्षों से अलग-अलग उत्पाद से आदान बनाया था जैसे — गुड़ — बेसन, गुड़ — छाछ आदि। जिससे 1 वर्ष से मैं केवल ताजा गोबर का उपयोग जीवाणु कल्चर के रूप में उपयोग करता हूँ, परिणाम सबसे उत्कृष्ट प्राप्त हुए। मेरा खर्च अब कम हो गया। सुमेर सिंह राजावात गांव भनकपुरा, तह टोडा भीम गंगापुरा (राज.)

सम्पर्क सूत्र — 79766 33678

5. वर्ष 2021 में इस अनुसंधान केन्द्र की टीम से प्रेरित होकर आधा एकड़ पर जैविक कृषि का प्रयास शुरू किया। गेहूँ की फसल 2000 वर्गमीटर क्षेत्र में पहले वर्ष 1135 किलोग्राम उत्पादित हुई। पूरे खेत में हर सिंचाई के साथ ताजा गोबर का परिणाम एकदम अलग था। फरवरी माह 2023 में बहुत तेज आँधी तूफान आए। रसायनिक फील्ड में मेरी सब फसल नुकसान ग्रस्त हुई लेकिन जैविक क्षेत्र में बिल्कुल भी नुकसान नहीं हुआ। कारण है ताजा गोबर द्वारा भूमि के भूरभुरापन का बढ़ना एवं भुरभुरी मिट्टी में जड़ क्षेत्र का मजबूत होना। नाम नरेन्द्र सिंह, ग्राम बड़ौदिया, तहसील लाडपुरा, कोटा

सम्पर्क सूत्र — 9414661785



धान की फसल में ताजे गोबर का घोल देते हुए

## देशी गाय के ताजे गोबर द्वारा सरल कम्पोस्ट निर्माण (भूमि सुपोषण के संदर्भ में अनुसंधान कार्य)

प्रयोग क्रमांक 6 - खेती में आवश्यक खाद की पूर्ति के लिए किसानों द्वारा संग्रह किया जाने वाला गोबर एवं अन्य अपशिष्ट वर्तमान में ठीक पद्धति से नहीं है। किसान गोबर को बड़े-बड़े ढेर (रेवड़ी / आकुड़ा / कुड़ा / घुरा / रोड़ी) के रूप में संग्रहित करते हैं। इस ढेर पर सूर्य की सीधी किरणें एवं बारिश की तेज बूंदें पड़ने की वजह से खाद के मुख्य तत्व इसमें उपलब्ध नमी के साथ निष्कासित हो जाते हैं। परिणाम स्वरूप यह गोबर अपशिष्ट आदि खाद में बदल नहीं पाता है अर्थात् किसान द्वारा बड़ी मेहनत एवं खर्च के बाद संग्रहित गोबर आगे जा कर न गोबर के स्वरूप में खेत में जाता है और न ही खाद के रूप में वस्तुतः फसल उत्पादन में अच्छा लाभ नहीं मिलता है। इस संदर्भ में सरल खाद बनाने की विधि पर अनुसंधान किया गया 5 वर्ष के सतत अनुसंधानों में जो परिणाम आये, उनका विवरण निम्नलिखत है।



खाद अनुसंधान इकाई

14 प्रकार की विधियों से उत्पादित कम्पोस्ट के नमूनों का विश्लेषण मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला में करने पर नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटैश, कैल्शियम, मैग्नेशियम एवं सल्फर के साथ अन्य पोषक तत्व भी सरल कम्पोस्ट में अन्य विधियों की तुलना में अधिक पाए गये।



समस्त नमूनों का विश्लेषण सूक्ष्म जीव विज्ञान प्रयोगशाला में करने पर भी सरल कम्पोस्ट में जीवाणवीय गतिविधि सकारात्मक देखी गई।



खाद निर्माण हेतु ताजे गोबर का उपयोग



## सरल कम्पोस्ट के संदर्भ में निष्कर्ष

पिछले 5 वर्षों से खाद बनाने की 14 प्रकार की विधियों पर निरन्तर चल रहें अनुसंधान में अब तक सर्वोत्तम परिणाम (लागत के आधार पर, पोषक तत्वों के आधार पर और सूक्ष्म जीवाणुओं की उपलब्धता के आधार पर एवं फसल विशेष पर भिन्न-भिन्न प्रकारके अनुसंधानों के परिणामों के अनुसार इस विधि में प्राप्त हुए।



गोबर का ढेर

गुड़

छाछ

गोबर का घोल

रेवड़ी में गड़डे

सरल खाद

### आकुड़ा/कुड़ा/घुरा/रोड़ी/रेवड़ी को कम्पोस्ट/खाद के रूप में तैयार करने का सरल तरीका – सरल कम्पोस्ट

#### सामग्री या पशुजन्य अपशिष्ट

1. जिसका खाद बनाना है, वो गोबर एक ट्रॉली या 1 टन या 3 गायों/भैसों द्वारा 1 माह में प्राप्त अपशिष्ट/वेस्ट का ढेर।
2. गुड़ 2 किलोग्राम, छाछ 30 लीटर (जीवाणुओं को ऊर्जा प्रदान करने हेतु)
3. गाय का ताजा गोबर 30 किलोग्राम, 24 घंटों से ज्यादा पुराना नहीं हो। गाय के ताजे गोबर में खेती के लिए लाभदायक जीवाणुओं की विशाल श्रृंखला होती है। जो न केवल कृषि योग्य अपशिष्ट का अवघटन करते हैं बल्कि भूमि में, उपलब्ध खनिज तत्वों को फसल के योग्य बनाने का कार्य करते हैं। पुराने गोबर या पशुजन्य अपशिष्ट को कई महिने पड़े रखने के कारण जीवाणु की संख्या न्यून होती जाती है। इसलिए जीवाणुओं को बढ़ाने के लिए ताजा गोबर का उपयोग करते हैं।
4. पानी 200 लीटर और दो इंच चौड़ी लकड़ी

#### सरल कम्पोस्ट तैयार करने की विधि

1. चयनित क्षेत्र के एक सिरे से रोजाना जिसका खाद बनाना है वो गोबर एक ट्रॉली या 1 टन तक इक्कठा करे या 3 गायों/भैसों द्वारा 1 माह में प्राप्त गोबर का ढेर एवं सभी उपलब्ध सुखी पत्तियाँ, फार्म से प्राप्त कचरा और मिट्टी जिसमें पशु मूत्र या गोमूत्र अवशोषित हुआ हो उसके साथ मिश्रित करते हुए मवेशी फार्म के पास ही इन सभी को एक ढेर आकुड़ा/कुड़ा/घुरा/रोड़ी/रेवड़ी बनाएँ।
2. जब यह जमीन तल से 45 से 60 सेमी ऊँचाई तक बन जावें तब ढेर के ऊपर सिरे को डोम का आकार दे दें।
3. इस ढेर में 2-3 इंच चौड़े 10 गड़डे/छेद बाँस या पाइप की सहायता से नीचे की सतह तक करे। इन गड़डों या छेद में उपरोक्त गुड़, गोबर एवं छाछ को पानी में घोल बना ले। 1-1 ली. घोल इन 10 गड़डों में भर दे। शेष पूरे घोल को इसी ढेर पर छिड़ककर प्लास्टर कर दें। साथ ही इसके ऊपर 2-3 इंच कचरा बिछा दीजिए। 45-60 दिन में आप देखेंगे कि ये खाद वर्मी कम्पोस्ट की भाँति तैयार हो जाएगा।
4. जब ढेर पूर्णतः भर जावें (एक माह में) तब दूसरा ढेर इसी प्रकार भरने के लिये काम में लें अर्थात् प्लास्टर करने के बाद, कचरा डालने के बाद नया गोबर डालना है। इस प्रकार दूसरे ढेर को भरते-भरते प्रथम ढेर में विघटन का कार्य लगभग पूर्ण हो चुका होता है।
5. 3 पशु रखने वाले किसान के लिये साल भर के लिये 6 ढेर इस प्रक्रिया के लिये पर्याप्त होते हैं। जिसके लिए कुल 15 वर्ग मीटर (5 मीटर चौड़ा व 3 मीटर लम्बा.) क्षेत्रफल चाहिए। यदि किसान के पास में पर्याप्त जमीन नहीं है तो एक ढेर के ऊपर गुड़, गोबर, छाछ, कचरा आदि डालने के बाद पुनः उसी ढेर के ऊपर नया ढेर बनाया जा सकता है।
6. इस प्रक्रिया के द्वारा 11-12 टन या 10-12 गाड़ी गोबर की अच्छी खाद प्रति वर्ष 3 पशुओं के हिसाब से तैयार की जा सकती है।

कम्पोस्ट तैयारी के दौरान विशेष पूरक प्रयोग किये जा सकते हैं। ऐसा करने से कम्पोस्ट को पोषक तत्वों से युक्त एवं अच्छा किया जा सकता है। इससे खाद की मात्रा कम होने पर भी उत्पादन में गिरावट नहीं आयेगी।

## सरल कम्पोस्ट के संदर्भ में किसानों द्वारा प्रतिक्रिया

खाद बनाने की सरल विधि विधि के माध्यम से भारत के कई राज्यों में, राजस्थान के सभी जिलों सहित हाड़ौती के जिलों के कई किसानों को मिला कर कुल 5300 से ज्यादा किसानों के यहां रेवड़ी/आकुड़ा/घुरा को सरल कम्पोस्ट इकाई के रूप में बदलने का कार्य शुरू हुआ।



मैं योगेश महन्त ग्राम रोड़ी जिला हरियाणा का निवासी हूँ, पूर्व में अमेरिका में कई वर्ष रहा, वर्तमान में गाँव में निवासरत हूँ। पिछले वर्ष 2022 के दिसम्बर माह में श्रीमान कृष्णमुरारी (अखिल भारतीय बीज प्रमुख – भारतीय किसान संघ) के साथ इस प्रकल्प पर अपने भाई एवं अन्य साथियों के संग आए। यहां खेती किसानी पर बारिकी से हो रहे प्रयास को देखा, समझा। खाद की विधि (सरल कम्पोस्ट) यहां ठीक तरीके से समझी, वर्तमान में हमारे यहां इस विधि से निरन्तर खाद तैयार हो रहा है। परिणाम अत्यन्त सुखद प्राप्त हो रहे। परिवार के लिए आवश्यक खाद्यान्न हेतु सरल खाद ही प्रयोग करते हैं।

नाम : योगेश महन्त, गाँव : रोड़ी, जिला हरियाणा  
सम्पर्क : 74960 01768



### सैकड़ों युवाओं को मिला रोजगार

मैं योगेश राजपुत ठाणे एवं रायगढ़ जिलें (महाराष्ट्र) में पांच गोशालाओं में प्रबन्धन कार्य करता हूँ, जहां कुल 650 गोवंश है। सामाजिक मिडिया के माध्यम से मैंने इस संस्थान द्वारा विकसित खाद बनाने की विधि सरल कम्पोस्ट

देखी, मुझे यह विधि अन्य सभी विधियों से अच्छी लगी। पांच गोशालाओं के 650 गोवंश से रोजाना 3 टन से अधिक गोबर मिलता है। पूर्व में हम कुछ मात्रा में ही अन्य विधि से खाद बना पा रहे थे क्योंकि अन्य विधियां खर्चीली एवं कठिन थी, लेकिन अब हम सरल कम्पोस्ट की विधि से नित्य 2 टन गोबर को खाद हेतु प्रयोग ले रहे हैं। हाल ही हमने इस विधि से तैयार खाद के विक्रय हेतु 200 टन का ऑर्डर लिया। भविष्य में इसकी उत्कृष्टता के चलते ऑर्डर बढ़ने के संकेत है। इस विधि से गोमाता का संरक्षण हो रहा है एवं कई युवाओं को रोजगार मिला है।

नाम : योगेश राजपुत, ठाणे एवं रायगढ़, जिला महाराष्ट्र  
सम्पर्क : 82862 98368 | हमारी फर्म : वैदिक एग्रो फार्म

### 400 किसानों के यहां सरल कम्पोस्ट



वर्ष 2022 को मैं प्रेम समुद्धि फाउंडेशन बून्दी के सहयोग से हमारी टीम के साथ श्रीरामशान्ताय जैविक कृषि अनुसंधान एव प्रशिक्षण केन्द्र कोटा आई। यहां हमें खाद बनाने की विधि का प्रशिक्षण दिया गया। इस विधि से मैंने मेरे गाँव में खेत पर खाद बनाया, जो बहुत अच्छा लगा। आसपास के सभी लोगों ने भी इस खाद को देखा, उन्हें भी यह विधि वास्तव में भी सरल लगी। मैंने इस विधि से 400 किसानों के यहाँ खाद बनवाने का प्रयास किया, जो अब लगातार बना रहे है। तैयार खाद सुगन्धित है, विधि सरल है।

नाम : तस्वीर बाई,  
पति का नाम : रामराज गोचर  
गाँव : खटकड़, तहसील बून्दी  
जिला : बून्दी,  
सम्पर्क : 97999 57031

### 2.5 मिलियन किसानों ने देखी खाद की विधि



कुछ महीने पहले हम न्यूज पोटली (कृषि मीडिया चैनल) की टीम के साथ यहां पर आये। यहां खेती किसानी का प्रत्येक कार्य जीवन्त और प्रायोगिक स्वरूप में था। इस प्रांगण की खाद अनुसंधान इकाई पर सरल कम्पोस्ट विधि के सन्दर्भ में गहन चर्चा हुई। इस विधि से खाद बनाने का प्रायोगिक विडियो भी हमने कवर किया और हमारे चैनल के माध्यम से देश भर में यह विडियो अत्यधिक चर्चा में है अब तक इस विधि को 25 लाख से अधिक किसानों ने देखा। कई किसान इस विधि से इस विडियो के माध्यम से अपने यहां खाद बनाने का काम प्रारम्भ कर चुके हैं। हमारे अनुभव के आधार पर खाद के सन्दर्भ में अन्य विधियों की तुलना में सरल एवं उत्कृष्ट विधि है। आने वाले समय में पूरे देश में यह विधि हर किसान के यहां स्थापित अवश्य होगी।

नाम : अरविन्द शुक्ला  
जिला : लखनऊ  
सम्पर्क : 93695 92964

### पथमेड़ा में भी हुआ प्रयोग



श्री गोधाम पथमेड़ा (विश्व की सबसे बड़ी गोशाला) के प्रशासन के आदेश पर जैविक कृषि के प्रशिक्षण हेतु कोटा मैं इस संस्थान पर 5 दिन उपस्थित रहा। यहाँ समग्र तकनीकी देखी, समझी। खाद के विषय पर प्रयास बहुत सरल लगा। इस प्रयोग को पथमेड़ा गोशाला के प्रांगण पर अपनाया गया। तैयार खाद बहुत ही गजब लगी। इस खाद का पथमेड़ा गोशाला के गोत्ररुषि स्वामी श्री दतशरणानन्द जी महाराज द्वारा भी अवलोकन हुआ। उन्हें भी यह पद्धति अच्छी लगी। यह सरल विधि और कम लागत की पद्धति सृष्टि हितकारी है।

नाम : भोमाराम कुमावत  
गाँव : नन्दगाँव  
तहसील : रेवधर, जिला : सिरोही,  
सम्पर्क : 78912 89087

### आत्मनिर्भर गोशाला 2 टन खाद बनता रोज



गोशाला – शांतिधारा गोशाला सागर में 500 गायों से रोज लगभग 2–3 टन गोबर मिलता है, रोज सरल कम्पोस्ट बनाते हैं – 130 एकड़ में गो आधारित जैविक कृषि से प्रयास कर रहे हैं। पूरे फिल्ड में सरल कम्पोस्ट के परिणाम अपने आप में अलग ही नजर आ जाएंगे। विशेष तौर पर दो एकड़ में 20 प्रकार की सब्जियाँ इसी अनुसंधान केन्द्र के मार्गदर्शन में उत्पादित हो रही है।

नाम : कृष्णकुमार जी यादव,  
गाँव : देवरी,  
जिला : सागर  
सम्पर्क : 88155 49608

## सरल कम्पोस्ट की तुलना वर्मी कम्पोस्ट एवं अन्य विधियों से

**प्रयोग क्रमांक 7** – अनुसंधान केन्द्र द्वारा विकसित सरल कम्पोस्ट की तुलना वर्मी कम्पोस्ट एवं अन्य बहुप्रचलित कम्पोस्ट पद्धतियों से करने के संदर्भ में गेहूँ की फसल के उत्पादन हेतु समान्तर अनुसंधान कार्य

इस सम्पूर्ण अनुसंधान कार्य में प्राथमिक निष्कर्ष निम्नानुसार है।

1. **उत्पादन की दृष्टि से** – प्रथम दृष्टया बुवाई अति विलम्ब होने के कारण उत्पादन पर प्रभाव तो पूरे अनुसंधान कार्य पर पड़ा परन्तु समान समय एवं बीज, खाद के बावजूद प्रथम वर्ष में गेहूँ की फसल में सरल खाद द्वारा उत्पादन वर्मी कम्पोस्ट एवं वेस्ट डी कम्पोजर द्वारा उत्पादन से अधिक प्राप्त हुआ। उपरोक्त सम्पूर्ण अनुसंधान के निष्कर्ष में सरल कम्पोस्ट द्वारा रसायनिक प्रयोग क्षेत्र से उत्पादित मात्रा से भी अधिक है अर्थात् सर्वोच्च उत्पादन सरल कम्पोस्ट द्वारा मिला।

2. **लागत की दृष्टि से** – सरल कम्पोस्ट द्वारा गेहूँ उत्पादन हेतु लागत वर्मी कम्पोस्ट द्वारा उत्पादित फसल से कई गुणा कम है अन्य विधियों में भी सरल कम्पोस्ट की तुलना में लागत अधिक है।

इस प्रकार अनुसंधान केन्द्र द्वारा विकसित सरल कम्पोस्ट के प्रभाव वर्मी कम्पोस्ट एवं अन्य बहुप्रचलित कम्पोस्ट पद्धतियों की तुलना में भिन्न-भिन्न प्रकार से गेहूँ की फसल के उत्पादन हेतु उत्कृष्ट पाये गये।



फोटो – सरल कम्पोस्ट एवं अन्य बहुप्रचलित कम्पोस्ट के उपयोग वाले अनुसंधान खण्ड

**प्रयोग क्रमांक 8** – अनुसंधान केन्द्र द्वारा विकसित सरल खाद को हरी खाद (सनई) के साथ सामान्य विधि एवं फोर्टिफाइड विधि (PROM) द्वारा गेहूँ की फसल में रसायनिक कृषि पद्धति के समकक्ष उपयोग कर प्रथम वर्ष में बराबर मात्रा में उत्पादन प्राप्त करने के उद्देश्य से अन्य आदानों के समकक्ष अनुसंधान कार्य।

- परिणाम**
1. **उत्पादन की दृष्टि से** – सरल कम्पोस्ट की मात्रा 20 टन प्रति हैक्टेयर एवं जिप्सम 250 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर का उपयोग हरी खाद वाले खेत में करने पर रसायनिक उत्पादों के उपयोग से उत्पादित अनाज के बराबर उत्पादन प्रथम वर्ष में मिल रहा है।
  2. **इस प्रकार बीज भार** – भी सरल कम्पोस्ट से सम्बंधित सभी अन्य पद्धतियों से ज्यादा है।
  3. **लागत की दृष्टि से** – सरल कम्पोस्ट द्वारा गेहूँ उत्पादन हेतु लागत अन्य विधियों द्वारा उत्पादित फसल के बराबर या न्यून खर्चा आया।



फोटो – सरल कम्पोस्ट एवं रासायनिक उर्वरकों के उपयोग वाले अनुसंधान खण्ड

## जैविक कृषि उत्पादन का हरी खाद के संदर्भ में प्रयोग

**प्रयोग क्रमांक 9** – प्रथम वर्ष में ही उत्पादन रसायनिक कृषि पद्धति के बराबर अथवा अधिक प्राप्त करने के संदर्भ में बिना हरी खाद वाले खेतों के साथ हरी खाद वाले खेतों के समकक्ष अध्ययन।



**परिणाम** – उपरोक्त अनुसंधान कार्य में खाद के प्रयोग हरी खाद के साथ करने पर उत्पादन प्रथम वर्ष में रसायनिक कृषि से अधिक एवं लगभग समान प्राप्त हुआ लेकिन खाद के प्रयोग हरी खाद के साथ नहीं करने पर उत्पादन अन्य सभी विधियों से कम प्राप्त हुआ अर्थात् हरी खाद के साथ सरल कम्पोस्ट या फोर्टिफाइड कम्पोस्ट के उपयोग से प्रथम वर्ष में उत्पादन संतुष्टिजनक प्राप्त किया जा सकता है इसके अलावा लागत की गणना बिना अनुदानित मूल्य के अनुसार करें तो रसायनिक कृषि में लागत अत्यधिक पायी गयी।

“

अनुसंधान केन्द्र द्वारा जैविक कृषि उत्पादन के संदर्भ में हरी खाद को भूमि सुपोषण का महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य घटक माना गया। विभिन्न दृष्टि से हुए अनुसंधान कार्यों में भी बिना हरी खाद वाले खेतों की तुलना में हरी खाद वाले खेतों प्रथम वर्ष में ही उत्पादन अधिक प्राप्त हुआ। जबकि बिना हरी खाद वाले खेत में कम्पोस्ट आदि भी पर्याप्त दिया गया। इस सम्बन्ध में कुल 150 किसानों ने रबी में उत्पादन के लिए खरीफ ऋतु में ही हरी खाद ली गई। परिणाम आशाजनक रहे।

”

## देशी गाय के गोमूत्र द्वारा वनस्पति पोषण के संदर्भ में अनुसंधान कार्य

प्रयोग क्रमांक 10 — देशी गाय के गोमूत्र से तैयार घोल का सोयाबीन की फसल में लोह तत्त्व की कमी की पूर्ति हेतु केवल पर्णीय छिड़काव द्वारा कई प्रकार के जैव आदानों के समकक्ष तुलनात्मक अध्ययन।



परिणाम — सोयाबीन की फसल में बरसात के समय जल भरवाव के कारण ऊपर की पत्तियों में लोह तत्त्व की कमी अक्सर देखी जाती है इसकी पूर्ति के सम्बन्ध में गोमूत्र 1.5 लीटर प्रति 15 लीटर पानी का परिणाम अन्य उत्पादों की तुलना में अधिक प्रभावी रहा है

## वनस्पति विशेष में उपलब्ध पोषक तत्वों का अवलोकन

प्रयोग क्रमांक 11 — अनुसंधान केन्द्र के प्रांगण पर रोपित 115 प्रकार के पेड़ों में से 12 पेड़ों (विशेष) एवं 5 खरपतवार रूपी वनस्पतियों में नाइट्रोजन, प्रोटीन एवं पोटैश का परीक्षण यहां प्रयोगशाला में किया गया जिसका विवरण निम्नलिखित है जो कि खड़ी फसलों में पोषक तत्वों की वेकल्पिक पूर्ति (पर्णीय छिड़काव के द्वारा) के लिए प्रभावी हो सकते हैं।



गाजर घास, पोई, इमली, गुड़हल, अगस्त, अमरूद, गिलोय, सहजन, गोखरू, अपामार्ग, कनेर, अतिबला एवं पुनर्नवा के पत्तों का विश्लेषण प्रयोगशाला के परीक्षण करने पर फसलों के लिए आवश्यक पोषक तत्व उपरोक्त में पाये गये जिनका उपयोग फसलों में पर्णीय छिड़काव के द्वारा किया जा सकता है।

## देशी गाय के गोमूत्र और चूने के मिश्रण द्वारा वनस्पति पोषण के संदर्भ में अनुसंधान कार्य

**प्रयोग क्रमांक 12** – गोमूत्र के साथ भिन्न-भिन्न प्रकार के खनिज पदार्थों के मिश्रण पश्चात् रासायनिक गुणधर्म एवं फसल विशेष के सम्बन्ध में अध्ययन

तकनीकी अध्ययन अनुसार विदित है कि अत्यधिक टंडक की वजह से जीवाणुवीय / माइक्रोबियल गतिविधि कम हो जाती है, जिसके कारण से नाइट्रोजन का उठाव (Uptake) कम होता है, पौधे नाइट्रोजन को उपलब्ध रूप में नाइट्रेट में बदल देता है। नाइट्रोजन अत्यधिक गतिशील होने के कारण निचली पत्तियों से ऊपरी पत्तियों की ओर चला जाता है, इसलिए निचली पत्तियाँ पीली हो जाती हैं। इसके समाधान के लिए देशी गाय के गोमूत्र के साथ भिन्न-भिन्न प्रकार के खनिज पदार्थों के मिश्रण पश्चात् प्रयोगशाला में रासायनिक गुणधर्म एवं फिल्ड में फसल विशेष के सम्बन्ध में अध्ययन किया गया जिसका विस्तृत विवरण यहां सलग्न है।



चूना एवं गोमूत्र मिश्रित घोल के सन्दर्भ में मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला अनुसार हुए अनुसंधान में पाया कि 1.5 लीटर गोमूत्र में 24 ग्राम चूना (पान / तम्बाकू में उपयोग होने वाला) मिलाने पर तैयार घोल के रासायनिक गुणधर्मों में विशेष बदलाव होता है। फसलों में वानस्पतिक बढ़वार हेतु उपयोग करने पर सकारात्मक परिणाम मिले है साथ ही कई फसलों में नाइट्रोजन की कमी के कारण निचली पत्तियाँ पीली हो जाती हैं। इसके नियंत्रण में भी उपरोक्त घोल प्रभावी पाया गया।



चूने की ट्यूब



गोमूत्र

**प्रयोग क्रमांक 13** – गोमूत्र के संदर्भ में भिन्न-भिन्न उम्र के गोवंश जैसे – ग्याभिन, दुधारू, वृद्ध, बछिया, बछड़े, नन्दी एवं बैल के मूत्र का परीक्षण मिट्टी जाँच प्रयोगशाला एवं सूक्ष्म जीव विज्ञान प्रयोगशाला में करने पर पाया गया कि उपरोक्त सभी गोवंश का मूत्र फसल के लिए प्रभावी परिणाम देता है। दुग्ध उत्पादन के वर्तमान दौर में केवल दुधारू गायों पर किसानों का ध्यान है, लेकिन जैविक कृषि में समस्त प्रकार के गोवंश उपयोगी है। इस संदर्भ में यह परीक्षण किया गया।

## किसानों द्वारा गोमूत्र और चूने के मिश्रण के उपयोग पश्चात् प्रतिक्रिया

अनाज, तिलहन, दलहन, मसाला, फल, सब्जी आदि फसलों में अनुसंधान की पावन परम्परा के अनुसार भिन्न-भिन्न उपचार (Treatments) और ऑन फार्म डेमोस्ट्रेशन के साथ देशी गाय के गोमूत्र आधारित उत्पादों के प्रभावों पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया। जिसमें फसल विशेष पर किये गये अनुसंधान कार्यों से प्राप्त निष्कर्षों के अनुसार देशी गाय के गोमूत्र और चूने के मिश्रण का प्रयोग उत्कृष्ट रूप में सामने आया है। इस सम्बन्ध में कृषकों के खेतों में फसल विशेष में उपयोग पर उनकी प्रतिक्रियाएं :



इस सीजन में मेरे खेत में 2 एकड़ में लहसुन की फसल थी, किसी कारणवश फसल खत्म होने की कगार पर आ गई। इस अनुसंधान केन्द्र से गोमूत्र चूना छिड़काव की सलाह मिली। मेरी फसल खत्म होने से बच गई। महज 64 रुपये के खर्च से 50000 रुपये का बचाव हुआ। ये महज दवाई नहीं बल्कि फसल में संजीवनी साबित हुई।

नाम : सत्यनारायण नागर, ग्राम कचौलिया, तहसील कनवास, जिला, कोटा, सम्पर्क – 99284 96492



रबी सीजन (2023) में मेरे खेत में 1 एकड़ में गेहूँ की फसल थी, तेज सर्दी के समय फसल की बढ़वार एकदम कम हो गई, आसपास के सहयोगी किसानों का कहना था कि अब ये फसल उत्पादित नहीं होनी। इस संस्थान की टीम द्वारा गोमूत्र – चूना का छिड़काव 2 बार हुआ। परिणाम से आश्चर्य हुआ कि फसल सात दिन में ही बदल गई। उत्पादन पहले वर्ष में ही रसायनिक फसल के बराबर ही मिला।

नाम : ओमप्रकाश मीणा, गाँव डगारिया, तहसील दीगोद, कोटा, सम्पर्क – 97728 44744



राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के गोसेवा आयाम से जुड़े होने के कारण गो आधारित जैविक कृषि पर प्रयास काफी समय से कर रहे हैं। लेकिन इस अनुसंधान केन्द्र के सदस्यों से सम्पर्क के बाद सरल प्रयास अपनाने शुरू किए। यहां की सभी तकनीक अच्छी एवं सरल लगी, गोमूत्र चूना का छिड़काव एकदम अलग और प्रभावी लगा। हमारे सहयोगी श्रमिकों के भी परिणाम बेहतरीन लगे। इसी सीजन में जहां रसायनिक फिल्ड में फसलें कमजोर थी, वही हमारी जैविक फसल एकदम मजबूत थी परिणाम भी अभिनव मिला।

नाम : भीमाराम जी माली, पोस्ट जसोल, जिला बालोतरा सम्पर्क – 94147 54674



मेरा नाम बालचन्द नागर है, मैं लहसुन उत्पादक एवं विक्रेता हूँ। झालावाड़ जिले के खानपुर कस्बे में मरायता गांव के खेतों में लहसुन की फसल में पीलापन (पोषक तत्व की कमी से) बढ़ रहा था, इस संस्था के सदस्य द्वारा गोमूत्र चूना का छिड़काव बताया गया। हमने छिड़काव किया और परिणाम अच्छे मिले। लहसुन की फसल में ताजा गोबर का उपयोग किया गया परिणाम अच्छे मिले गये।

नाम : बालचन्द नागर, गाँव मरायता, तहसील खानपुर जिला खानपुर, सम्पर्क – 99502 90949

प्रयोग विधि – 15 लीटर पानी में 1.5 लीटर गोमूत्र एवं 2 ट्यूब चूना (पान/तम्बाकू वाला) 24 ग्राम मिलाकर फसल पर छिड़काव करें।

### ऑन फार्म डेमोस्ट्रेशन / ट्रायल

अनुसंधान केन्द्र द्वारा जैविक कृषि के विकास एवं विस्तार हेतु विकसित फसल उत्पादन पद्धतियों को किसानों के यहाँ स्थापित करने हेतु कोटा एवं झालावाड़ जिले के अलग-अलग गाँवों में अलग-अलग फसल प्रदर्शन लगाए गए। जिसमें रसायनिक कृषि के समकक्ष अन्य प्रयोग किए गए। विशेष तौर पर कम्पोस्ट की मात्रा को कम करते हुए रसायनिक उत्पादों से प्राप्त उत्पादन के बराबर मात्रा में खाद्यान प्राप्त करने हेतु कम्पोस्ट को फोर्टिफाइड (खनिज मिश्रण) करने के लिए कृषकों के यहां ऑन फार्म डेमोस्ट्रेशन / ट्रायल लगाये गये जिसकी जानकारी निम्नानुसार है।

प्रयोग क्रमांक 14 से 17

लेखराज जी चौधरी @ C = 26 Rs./Kg O = 40 Rs./kg @CF= 7Rs./kg @OF=9Rs./kg

उपचार क्रमांक	उत्पादन (प्रति हैक्टेयर किलोग्राम)		आय (रूपये)		कुल आय (रूपये)	लागत (रूपये)		कुल बचत (रूपये)
	अनाज	चारा	अनाज	चारा		अनुदानित	बिना अनुदानित	
T-1	4320	4938	112320	34566	146886	51621	73713	95265
T-2	4194	4938	167760	44442	212202	107727	107727	104475
T-3	5789	4938	231560	44442	276002	73776	73776	202226
T-4	4757	4938	190280	44442	234722	76863	76863	157859

T1 = chemical, T2 = Saral Compost, T3 = 200kg PROM, T4 = 100kg PROM  
T3 और T4 हरी खाद वाला फील्ड है।

कमल जी मालव @ C = 26 Rs./Kg O = 50 Rs./kg @CF= 7Rs./kg @OF=9Rs./kg

उपचार क्रमांक	उत्पादन (प्रति हैक्टेयर किलोग्राम)		आय (रूपये)		कुल आय (रूपये)	लागत (रूपये)		कुल बचत (रूपये)
	अनाज	चारा	अनाज	चारा		अनुदानित	बिना अनुदानित	
T-1	4820	4938	125320	34566	159886	51434.4	72002.5	108451.6
T-2	4320	4938	216000	44442	250566	74245	74245	176321
T-3	5293	4938	211720	44442	246286	77332	77322	168954

T1 = chemical, T2 = 100kg PROM, T3 = 200kg PROM,  
T2 और T3 हरी खाद वाला फील्ड है।

ओमप्रकाश जी मीणा @ C = 26 Rs./Kg O = 40 Rs./kg @CF= 7Rs./kg @OF=9Rs./kg

उपचार क्रमांक	उत्पादन (प्रति हैक्टेयर किलोग्राम)		आय (रूपये)		कुल आय (रूपये)	लागत (रूपये)		कुल बचत (रूपये)
	अनाज	चारा	अनाज	चारा		अनुदानित	बिना अनुदानित	
T-1	4638	4938	120588	34566	155154	55428	82028	99726
T-2	4388	4938	175520	44442	219962	71684	71684	148278
T-3	3666	4938	146640	44442	191082	74770	74770	116312

T1 = chemical, T2 = 100kg PROM, T3 = 200kg PROM,  
T2 और T3 हरी खाद वाला फील्ड है।

लक्ष्मीनारायण जी नागर @ C = 26 Rs./Kg O = 50&40 Rs./kg @CF= 7Rs./kg @OF=9Rs./kg

उपचार क्रमांक	उत्पादन (प्रति हैक्टेयर किलोग्राम)		आय (रूपये)		कुल आय (रूपये)	लागत (रूपये)		कुल बचत (रूपये)
	अनाज	चारा	अनाज	चारा		अनुदानित	बिना अनुदानित	
T-1	4938	4938	128388	34566	162954	51053	69921	111901
T-2	2946	4938	147300	44442	191742	107004	107004	84738
T-3	3162	4938	158100	44442	202542	76140	76140	126402

T1 = chemical, T2 = 200kg PROM, T3 = Saral Compost,  
T2 और T3 बिना हरी खाद वाला फील्ड है।

C= Chemical, O= Organic, CF= Chemical Fodder, OF= Organic Fodder

नोट :- सभी प्रक्षेत्र प्रदर्शन प्रयोग में ट्रैक्टर और पानी आदि का खर्च समान है

परिणाम – उपरोक्त अनुसंधान कार्य में खाद के प्रयोग हरी खाद के साथ करने वाले किसान लेखराज जी चौधरी एवं कमल जी मालव के यहां उत्पादन प्रथम वर्ष में रसायनिक कृषि से अधिक प्राप्त हुआ वहीं ओम प्रकाश जी मीणा के यहां उत्पादन लगभग समान रहा लेकिन खाद के प्रयोग हरी खाद के साथ नहीं करने वाले किसान लक्ष्मीनारायण जी नागर के यहां उत्पादन अन्य सभी से कम प्राप्त हुआ अर्थात् हरी खाद के साथ सरल कम्पोस्ट या फोर्टिफाइड कम्पोस्ट के उपयोग से प्रथम वर्ष में उत्पादन संतुष्टिजनक प्राप्त किया जा सकता है इसके अलावा लागत की गणना रसायनिक कृषि में अत्यधिक पायी गयी।

### कृषक उत्पादन विवरणिका

ऑनफार्म डेमों के अनुरूप निम्नलिखित किसानों के यहां भी प्रथम वर्ष में अनुसंधान केन्द्र द्वारा विकसित पद्धति का अनुसरण करवाने पर गेहूँ की फसल का प्रति एकड़ न्यूनतम उत्पादन 17.5 क्विंटल प्राप्त हुआ।

कृषक उत्पादन विवरणिका-2023-24				
क्र.स.	कृषक का नाम	मोबाईल नम्बर	गाँव / तहसील जिला	औसत उत्पादन प्रति एकड़
1	सुरेन्द्र जी नागर	8107381112	सोजपुर खानपुर, झालावाड़	20 किं.
2	जगदीश जी नागर	9588801737	गुरजेनी खानपुर, झालावाड़	18.32 किं.
3	सुरेन्द्र जी नागर	9928349919	सारोला खानपुर, झालावाड़	18.32 किं.
4	योगेन्द्र सिंह जी	8679690455	चीकली खानपुर, झालावाड़	20 किं.
5	तुलसीराम जी मीणा	9772175855	भूमरी खानपुर, झालावाड़	18.75 किं.
6	कमल जी मालव	8005844344	खानपुर, झालावाड़	18.75 किं.
7	लेखराज जी चौधरी	6350508783	अम्बाला खानपुर, झालावाड़	25 किं.
8	राजाराम जी चौधरी	7976459279	अंबाला खानपुर, झालावाड़	20 किं.
9	भीमराज जी	9460750091	करनवास खानपुर, झालावाड़	17.50 किं.
10	रामकल्याण जी	9875164566	सारोला खानपुर, झालावाड़	17.50 किं.
11	रामपाल जी	9166442709	खण्डी खानपुर, झालावाड़	17.50 किं.
12	छितर लाल जी नागर	9950600568	खण्डी खानपुर, झालावाड़	20 किं.
13	धमेन्द्र जी मीणा	8949199483	बलदेवपुरा खानपुर, झालावाड़	18.32 किं.
14	मोहन लाल जी मीणा	7073442466	बलदेवपुरा खानपुर, झालावाड़	17.50 किं.
15	ज्ञानचन्द जी मालव	9982800657	तारज खानपुर, झालावाड़	20 किं.
16	राजेन्द्र जी नागर	9783624702	तारज खानपुर, झालावाड़	20 किं.
17	सुरेन्द्र जी बागरी	9649656035	दहीखेड़ा खानपुर, झालावाड़	17.50 किं.
18	कुन्जबिहारी जी नागर	8209492753	सोजपुर खानपुर, झालावाड़	17.50 किं.
19	शिवराज सिंह जी	9587761470	सोजपुर खानपुर, झालावाड़	17.50 किं.
20	अजित सिंह जी राठौर	9799111134	मदारीया सांगोद, कोटा	18.33 किं.
21	भँवरलाल जी मालव	9352613891	रंगपुर लाड़पुरा, कोटा	20 किं.

## रिकार्ड उत्पादन

अनुसंधान केन्द्र द्वारा विकसित जैविक कृषि पद्धति की समस्त तकनीकों का समायोजन करने पर फसलों का उत्पादन आशाजनक प्राप्त हो रहा है। विशेष तौर पर गेहूँ का रिकार्ड उत्पादन 25 किंवटल प्रति एकड़ से अधिक अर्जित किया गया। कृषि विभाग की टीम द्वारा फसल कटाई प्रयोग के द्वारा भी ये रिकॉर्ड दर्ज किया गया। चना 10 किंवटल प्रति एकड़, साँवा 10.48 किंवटल प्रति एकड़, हरी कंगनी 9.58 किंवटल प्रति एकड़, धान 17.72 किंवटल प्रति एकड़, धनिया 10.72 किंवटल प्रति एकड़, टमाटर 293.76 किंवटल प्रति एकड़, प्याज 160 किंवटल प्रति एकड़ उत्पादन रहा।

### उपज रिपोर्ट

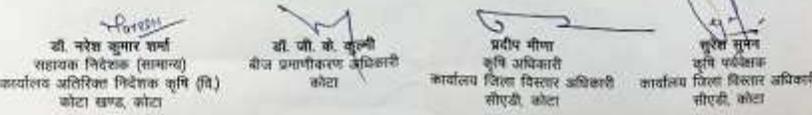
श्री रामशान्ताय जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र, ग्राम जाखोडा, कंचन-सागोद मार्ग, कोटा द्वारा उपरोक्त संस्थान में उत्पादित जैविक गेहूँ उपज के आकलन हेतु उपरोक्त संस्थान द्वारा विभागीय अधिकारियों की उपस्थिति में उपज आकलन करने हेतु अनुभव पत्र GGVS/SR-OFRC/2023-24/50 दिनांक 23.03.2023 प्रस्तुत करने पर श्रीमान् जतिरिक्त निदेशक कृषि (वि.) कोटा सख्त, कोटा द्वारा कार्यालय पत्रांक 1593 दिनांक 24.03.2023 द्वारा गठित कमेटी के सदस्यों द्वारा दिनांक 24.03.2023 को उपरोक्त कार्य का प्रथम क्रिया चक्र।

श्री पवन के टॉक, मुख्य प्रबंधक, गोयल ग्रामीण विकास संस्थान, कोटा द्वारा उपलब्ध कराई गई मूदा परीक्षण रिपोर्ट के अनुसार उपरोक्त फसल के क्षेत्र जहाँ पर गेहूँ का उत्पादन लिया जा रहा है उस क्षेत्र का जैविक कार्बन 1.1%, P<sup>100</sup> 7.8 मूदा विद्युत घातकता 0.9 एवं शिफार्ड हेतु उपयोग में लाये जाने वाले जल की विद्युत घातकता 1 से कम थी। साथ ही गेहूँ उत्पादन हेतु फसल की बुवाई से लेकर कटाई तक उपयोग में लाये गये विभिन्न जैविक आदान, बीजोपचार एवं मूदा उपभार हेतु जैविक फसलदायी का विवरण श्री टॉक द्वारा दिये गये मौखिक बयान एवं उपलब्ध कराई गई फसल बुक की प्रति के अनुसार विवरण रिपोर्ट के साथ संलग्न है।

कमेटी सदस्यों द्वारा उपज के आकलन हेतु वादचिह्नक 2 स्थानों से 5 X 5 मीटर के स्थान का चयन कर अपनी निगरानी में फसल की कटाई की गई। अंतिम उपरान्त प्राप्त उपज का विश्लेषण विवरण निम्नानुसार है :-

क्षेत्र संख्या	फसल का नाम	विषय का नाम	उपज (किंघा प्रति हे०)		
			नमूना - 1	नमूना - 2	औसत
01	गेहूँ	89-15764	5832	6312	6072
02	गेहूँ	शाही शरफती	5752	6504	6128
03	गेहूँ	89-4037	7336	5288	6312

उपरोक्त स्थिति के माध्यम से गेहूँ की राज-4037 किन्तु की उपज सभी किस्मों में सर्वाधिक पाई गई थी। अतः इस स्थिति में जैविक उत्पाद का अच्छा बाजार भाव मिलने पर यह कृषकों हेतु अत्यन्त लाभदायक हो सकता है।


  
 श्री नरेश कुमार शर्मा, सहायक निदेशक (सामान्य), कार्यालय जतिरिक्त निदेशक कृषि (वि.) कोटा सख्त, कोटा  
 श्री जी. के. कुली, वीज प्रमाणीकरण अधिकारी, कोटा  
 प्रदीप गोपा, कृषि अधिकारी, कार्यालय जिला विस्तार अधिकारी सीएडी, कोटा  
 सुरेश सुमन, कृषि प्रमाणीकरण अधिकारी, कार्यालय जिला विस्तार अधिकारी सीएडी, कोटा

वर्ष 2023 में – जायद में 32, खरीफ में 48, रबी में 66 प्रकार की फसलों का उत्पादन लिया गया और वर्तमान जायद में 35 प्रकार की फसलों का उत्पादन लिया जा रहा है। इसमें फूल, फल, सब्जी, अनाज, तिलहन, दलहन, सुगन्धित, औषधि, चारा, मसाला आदि फसलें हैं। ये सब राजस्थान सरकार के जैविक प्रमाणीकरण संस्थान के प्रमाण पत्र में अंकित हैं।

### किसानों को जैविक खेती के लिए कर रहे प्रेरित, विशेषज्ञ बोले जैविक खेती से उत्पादन बढ़ता है



### हाइती अंचल



### 2023-04-21



### जैविक खेती से कम खर्च में बढ़ती है फसल की पैदावार: गोयल



## बीजों के उन्नयन, संरक्षण एवं उत्पादन सर्वधन और वितरण के संदर्भ में प्रयास

कृषि में बीज सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रथम आदान है, श्रीरामशान्ताय जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र, कोटा द्वारा बीज के संदर्भ में भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रयास किये गये, जिसमें परम्परागत बीजों के संरक्षण, सर्वधन एवं उन्नयन का प्रयास किया जा रहा है। इसके साथ बीजों के अंकुरण प्रतिशत की वृद्धि के सम्बन्ध में देश भर में बहुप्रचलित आदान एवं विधियों के समतुल्य देशी गाय के ताजा गोबर एवं गोमूत्र पर आधारित उत्पादों के तुलनात्मक अनुसंधान का कार्य प्रमुखता से किया जा रहा है। विस्तृत जानकारी यहां संकलित है—

**संरक्षण के संदर्भ में प्रयास** — स्थानीय बीजों में कीट एवं रोग प्रतिरोधक गुण पाये जाते हैं। इन गुणों को अन्य वनस्पतियों के संग सर्वधन किया जाए एवं उन्नयन के संदर्भ में प्रयास किया जाए तो आशातीत परिणाम प्राप्त होंगे। इस संबन्ध में अनुसंधान केन्द्र पर उपलब्ध स्थानीय वनस्पतियों का अध्ययन किया जा रहा है। हाल ही में यहां के फार्म से दलहनी वनस्पति—मुंगनी/मुंगवन का प्रसार यहां पर देखा गया जो कि कृषक दृष्टि में महज खरपतवार है लेकिन इस दलहनी वनस्पति में कीट एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी पायी जाती है। इसलिए स्थानीय बीज के संरक्षण हेतु दलहनी फसल की एक किस्म का बीज राष्ट्रीय पादप अनुवंशिक संस्थाधन ब्यूरो (NBPGR) नई दिल्ली द्वारा पंजीकृत हुआ और चार फसलों के बीज पंजीकरण हेतु प्रक्रियाधीन हैं।

5/8/23, 4:35 PM Draft Report

**National Bureau of Plant Genetic Resources (ARIS Cell)**  
Pusa Campus, New Delhi-110012

Mission Code :O20220045Z01 National Bureau of Plant Genetic Resources (ARIS Cell)AKMU-7809 IC : 647555 to 647555  
Pusa Campus, New Delhi-110012

Collaborator(s) :Dr. Pawan K. Tak Shiramshantay Organic Farming Research And Training Centre Jakhora Kota Rajasthan  
Total : 1 Record(s).

S.No.	Accession Material Type	Coll-No Other-Id	Crop Species	Cultivar Name Bio-Status Variety	Sample Method Sample Type	Collection Date Village/District/State	Source Frequency Habitat	Pedigree Donor	Imp Traits Remark
1	IC-0847555 SEEDS	GGVS 61	Wild Bean Vigna stipuleacea	SR-QFR&TC Kota WILD	UNKNOWN UNKNOWN	03 Sep 2022 Jakhoda /Kota /Rajasthan	INSTITUTE RARE UNKNOWN	-	High water logging capacity and disease & pest resistance

NBPGR नई दिल्ली द्वारा प्राप्त रिपोर्ट

**दैनिक भास्कर**

**2023-02-11**

**कोटा जिला (5)**

### हाड़ौती की वनस्पति मूगवन को नई दिल्ली एनबीपीजीआर ने संरक्षित किया

केंद्र, श्रीरामशान्ताय जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र, कोटा द्वारा बीज के संदर्भ में भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रयास किये गये, जिसमें परम्परागत बीजों के संरक्षण, सर्वधन एवं उन्नयन का प्रयास किया जा रहा है। इसके साथ बीजों के अंकुरण प्रतिशत की वृद्धि के सम्बन्ध में देश भर में बहुप्रचलित आदान एवं विधियों के समतुल्य देशी गाय के ताजा गोबर एवं गोमूत्र पर आधारित उत्पादों के तुलनात्मक अनुसंधान का कार्य प्रमुखता से किया जा रहा है। विस्तृत जानकारी यहां संकलित है—

**संरक्षण के संदर्भ में प्रयास** — स्थानीय बीजों में कीट एवं रोग प्रतिरोधक गुण पाये जाते हैं। इन गुणों को अन्य वनस्पतियों के संग सर्वधन किया जाए एवं उन्नयन के संदर्भ में प्रयास किया जाए तो आशातीत परिणाम प्राप्त होंगे। इस संबन्ध में अनुसंधान केन्द्र पर उपलब्ध स्थानीय वनस्पतियों का अध्ययन किया जा रहा है। हाल ही में यहां के फार्म से दलहनी वनस्पति—मुंगनी/मुंगवन का प्रसार यहां पर देखा गया जो कि कृषक दृष्टि में महज खरपतवार है लेकिन इस दलहनी वनस्पति में कीट एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी पायी जाती है। इसलिए स्थानीय बीज के संरक्षण हेतु दलहनी फसल की एक किस्म का बीज राष्ट्रीय पादप अनुवंशिक संस्थाधन ब्यूरो (NBPGR) नई दिल्ली द्वारा पंजीकृत हुआ और चार फसलों के बीज पंजीकरण हेतु प्रक्रियाधीन हैं।

### हाड़ौती की प्राकृतिक वनस्पति के बीज का एनबीपीजीआर नई दिल्ली द्वारा होमा संरक्षण

नए प्रयास की शुरुआत कोटा के जखोरा में की गई है। यहां के फार्म से दलहनी वनस्पति—मुंगनी/मुंगवन का प्रसार यहां पर देखा गया जो कि कृषक दृष्टि में महज खरपतवार है लेकिन इस दलहनी वनस्पति में कीट एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी पायी जाती है। इसलिए स्थानीय बीज के संरक्षण हेतु दलहनी फसल की एक किस्म का बीज राष्ट्रीय पादप अनुवंशिक संस्थाधन ब्यूरो (NBPGR) नई दिल्ली द्वारा पंजीकृत हुआ और चार फसलों के बीज पंजीकरण हेतु प्रक्रियाधीन हैं।

## उन्नयन, उत्पादन और वितरण के संदर्भ में प्रयास

इस कार्य के लिए अनुसंधान केन्द्र के प्रांगण पर हाल ही में दिनांक 7 जनवरी 2024 को आयोजित संस्थागत सम्मेलन एवं विचार गोष्ठी में भारत सरकार के कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग के सचिव एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के महानिदेशक डॉ. हिमांशु पाठक, प्रो. राजेश्वर सिंह चन्देल माननीय कुलपति, डॉ. वाई एस परमार उद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी – सोलन, (हिमाचल प्रदेश) डॉ. अभय व्यास, कुलपति कृषि विश्वविद्यालय, कोटा एवं श्रीमान् कृष्ण मुरारी (अखिल भारतीय बीज प्रमुख भारतीय किसान संघ) के सानिध्य में एवं श्रीमान् ताराचन्द गोयल की अध्यक्षता में विशाल बीज बैंक का लोकार्पण हुआ। यहाँ स्थापित बीज बैंक के द्वारा 200 प्रकार की फसलों के बीजों का संरक्षण और सर्वधन हो रहा है। इसी बीज बैंक से 500 किसानों को पहले स्तर पर कई प्रकार के बीज दिये गये। साथ ही उन्नत बीज तैयार करने का प्रशिक्षण भी दिया गया।



## अंकुरण क्षमता जाँच के संदर्भ में प्रयोग

प्रयोग क्रमांक 18 — भारतीय पंचांग के अनुसार बुवाई के लिए अलग-अलग तिथियों में बुवाई कर तुलनात्मक अध्ययन



परिणाम — बुवाई के समय निर्धारण के संदर्भ में अलग-अलग तिथियों के समकक्ष पूर्णिमा तिथि के दिन या बुधवार के आस-पास बुवाई करने पर परिणाम भिन्न-भिन्न दृष्टि से ठीक मिले हैं अतः बुवाई पूर्णिमा के आस-पास या बुधवार के आसपास करना ठीक रहेगा क्योंकि धार्मिक एवं वैज्ञानिक मान्यता अनुसार पूर्णिमा के दिन प्राकृतिक तेज प्रकाश की वजह से भूमि में जल तत्व उठाव करता है, परिणाम स्वरूप भूमि की ऊपरी सतह की नमी का स्तर अन्य दिनों की तुलना में अधिक होने की वजह से अंकुरण क्षमता भी अन्य दिनों की अपेक्षा अधिक रहती है। यह अध्ययन में आया कि अधिकतम बुधवार भी पूर्णिमा के आस पास होते हैं, इसलिए पूर्णिमा एवं बुधवार को एक साथ जोड़ा गया।

प्रयोग क्रमांक 19 — देशी गाय के गोबर एवं गोमूत्र से तैयार द्रव्य का ज्वार के अंकुरण प्रतिशत के संदर्भ में विभिन्न प्रकार के अन्य बहुप्रचलित जैव उत्पादों के समकक्ष तुलनात्मक अध्ययन।



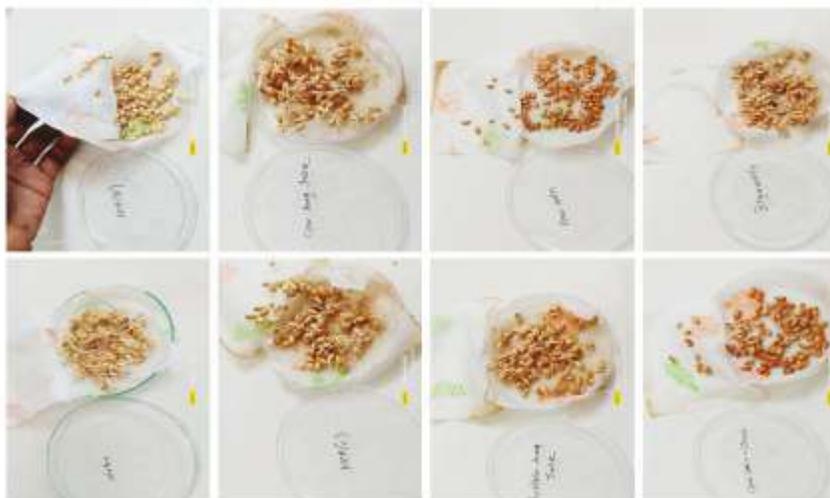
परिणाम — ज्वार के बीजों के अंकुरण प्रतिशत वृद्धि के संदर्भ में बीजामृत का परिणाम प्रभावी है। इसलिए देशी गाय का ताजा गोबर 5 किलोग्राम, गोमूत्र 5 लीटर, पानी 20 लीटर, खेत की मेड़ मिट्टी 200 ग्राम, चूना 50 ग्राम। उपरोक्त सभी को मिलाकर दो दिन मटके में रखकर बीजामृत तैयार करते हैं व छान कर तैयार घोल को आवश्यकता अनुसार लेकर बीज को भिगोकर उपचारित करके बुवाई करते हैं।

प्रयोग क्रमांक 20 — गेहूँ की भिन्न-भिन्न किस्मों में उपलब्ध पोषक तत्वों का विश्लेषण



परिणाम — देशी एवं उन्नत किस्मों में उपलब्ध पोषक तत्वों की उपलब्धता के सम्बन्ध में परीक्षण करने पर पाया कि वर्तमान किस्म राज-4079, राज-4037 की तुलना में सोना मोती, एचआई-1544, शरबती आदि किस्मों में पोषक तत्व अधिक हैं अर्थात् उपरोक्त किस्म मानव पोषण में भी अधिक उपयोगी हैं

## भिन्न-भिन्न फसलों के अंकुरण प्रतिशत वृद्धि में ताजा गोबर का योगदान



**प्रयोग क्रमांक 21** – गेहूँ की फसल में देशी गाय के ताजे गोबर का प्रयोग बीजोपचार के संदर्भ में अन्य बहुप्रचलित जैविक उत्पादों एवं आदानों के समकक्ष करते हुए तुलनात्मक अध्ययन

**परिणाम** – गेहूँ के बीजों के अंकुरण प्रतिशत, वृद्धि के संदर्भ में बीजों का उपचार, बुवाई पूर्व 100 ग्राम ताजे गोबर के रस से प्रति किलोग्राम बीजों को उपचारित करने पर परिणाम सकारात्मक मिले है।

**प्रयोग क्रमांक 22** – देशी गाय के ताजा गोबर एवं गोमूत्र का प्रयोग भिन्न-भिन्न प्रकार की फसलों में बीजोपचार के संदर्भ में अन्य बहुप्रचलित जैविक उत्पादों एवं आदानों के समकक्ष करते हुए तुलनात्मक अध्ययन



**परिणाम** – साँवा, मक्का, मूँग, देचा, सनई, की फसल में 100 ग्राम ताजे गोबर के रस से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करने पर परिणाम अधिक प्रभावी रहे है साथ ही अरहर में गोमूत्र 10 प्रतिशत का प्रभाव और ज्वार, उड़द में केवल सादा पानी का प्रभाव ठीक रहा है।

## कीट नियंत्रण, संवर्धन एवं संरक्षण



मिर्च और गेहूँ में रूट एफिड का प्रभाव

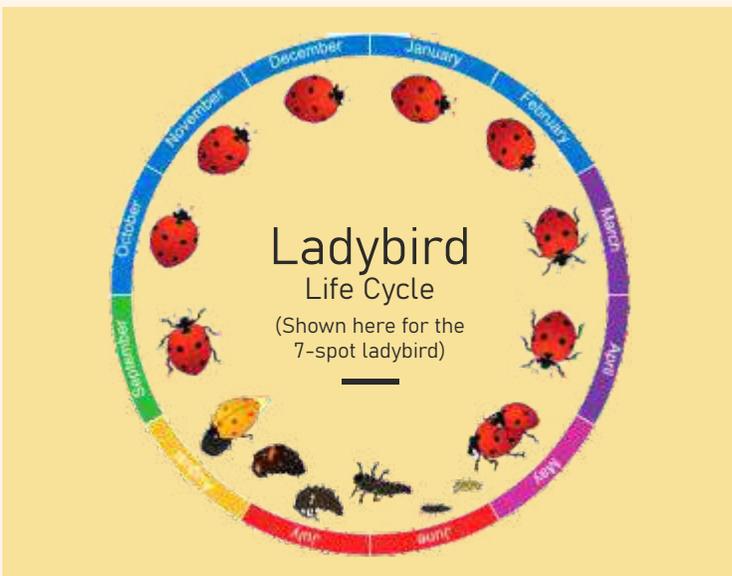


राइनोबिटल का बैलवर्गीय सब्जी में प्रभाव

- हानिकारक कीटों की पहचान एवं नियंत्रण – पिछले कई वर्षों से जलवायु परिवर्तन एवं जैव विविधता के क्षरण के चलते कई प्रकार के हानिकारक कीटों के प्रकार में विस्तार देखने को मिला है साथ ही यह भी अध्ययन में आया कि फसल विशेष के कीटों में वर्तमान में परपोषी पौधे एवं जीवन चक्र में भी बदलाव हुआ है, जैसे रूट एफिड का प्रभाव मिर्च एवं गेहूँ में भी इन दिनों काफी रहा है। राइनोकॉरस बीटल का प्रभाव केवल खजूर एवं पाम वर्गीय पौधे में था लेकिन वर्तमान में हमारे यहां पर बेलवर्गीय सब्जियों में भी देखा गया इसी प्रकार समग्र फसलों में कद्दू का लाल कीट (रेड पम्पकिन बीटल) का प्रभाव कई फसलों में देखा गया।
- उपरोक्त के अनुरूप नवीन प्रकार के कीट उनकी प्रकृति एवं नियंत्रण के बारे में गहन अध्ययन एवं अनुसंधान यहां पर संचालित है।



कद्दू का लाल कीडा (रेड पम्पकिन बिटल)



- लाभदायक कीटों का उत्पादन, संवर्धन एवं संरक्षण – जलवायु परिवर्तन एवं जैव विविधता के क्षरण के चलते जिस प्रकार से हानिकारक कीटों के प्रकार में विस्तार देखने को मिला है, उसी तरह लाभदायक कीटों की संख्या में भी लगातार गिरावट आयी है। परिणामस्वरूप हानिकारक कीटों का नियंत्रण काफी मुश्किल एवं खर्चीला हुआ है। अनुसंधान केन्द्र की कीट विज्ञान प्रयोगशाला के विशेषज्ञों द्वारा लाभदायक कीटों के संवर्धन के संदर्भ में प्रयास किये गये, जिसमें लेडी बग बिटल पर विशेष प्रयास यहां पर हुआ। लेडी बग बिटल के कीट को यहां पर उत्पादित कर विस्तारित करने में प्राथमिक सफलता अर्जित की जो कि प्राकृतिक

## ट्रेप क्रॉप / जाल फसल

आमतौर पर ट्रेप क्रॉप का उपयोग फसल में पीड़क / नुकसानदायक कीट के नियन्त्रण के संदर्भ में होता है। लेकिन श्रीरामशान्ताय जैविक कृषि अनुसंधान केन्द्र द्वारा ट्रेप क्रॉप का उपयोग लाभदायक कीटों के संवर्धन के लिए भी किया है साथ ही नुकसानदायक जीवों के नियन्त्रण हेतु भी नवीन फसलों का चयन एवं अध्ययन किया है। उपरोक्त विषय की विस्तृत जानकारी निम्नलिखित है —

### हानिकारक कीटों के लिए ट्रेप क्रॉप

क्र.स.	फसल / वनस्पति	कीट	सीजन
1.	राखी बैल	हेयरी केटरपिलर	खरीफ / रबी
2.	सनई	बिहार हेयरी केटरपिलर	जायद / खरीफ
3.	अरण्डी	जेसिड / हरातेला, सफेद मक्खी	वर्षभर
4.	मौगरी / रेडीस बीन	एफीड	रबी
5.	गेलार्डिया / नवरंगा	एफीड	वर्षभर / रबी
6.	शहतुत	बिहार हेयरी केटरपिलर	जायद / खरीफ
7.	गैन्दा	इल्लीयाँ / रसचूसक कीट	वर्षभर
8.	गुडमार	इल्लीयाँ / रसचूसक कीट	वर्षभर



### लाभदायक कीट संरक्षण हेतु

क्र.स.	फसल / वनस्पति	कीट	सीजन
1.	बैंगन / धनियाँ / सूर्यमुखी	लेडी बग बीटल	रबी / जायद
2.	गुलदाउदी	हॉवर फ्लाई	रबी / जायद



देशी गाय के ताजा गोबर का प्रभाव कीट नियंत्रण में

प्रयोग क्रमांक 23 – कीट नियन्त्रण के संदर्भ में बहुप्रचलित जैव उत्पादों के रोग संग तुलनात्मक अध्ययन।



परिणाम – उपरोक्त प्रयोग के संदर्भ में भिण्डी की फसल में ताजा गोबर के उपयोग से खेत में खड़ी फसल में रस चूसक कीट का प्रभाव कम पाया गया। इसके लिए देशी गाय के ताजे गोबर का उपयोग निम्नानुसार करने पर ठीक परिणाम मिले है—बीजोपचार हेतु 100 ग्राम ताजे गोबर के रस को प्रति किलोग्राम बीज मिलाकर उपचारित करते है तथा प्रत्येक सिंचाई में 75 किलोग्राम घोल बनाकर देने से परिणाम अच्छे प्राप्त हुए। पर्णिय छिड़काव हेतु 1.5 किलोग्राम ताजा गोबर प्रति 15 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करते है। उपरोक्त सभी प्रयास पूरी फसल में क्रमशः करने पर कीट नियंत्रण में आशाजनक परिणाम मिले है।

प्रयोग क्रमांक 24 – अनाज भण्डारण की विभिन्न विधियों द्वारा अलग-अलग उत्पादों के समकक्ष अध्ययन



परिणाम – उपरोक्त प्रयोग के संदर्भ में गेहूँ के बीजों को नीम तेल लेपित मटके में रखने पर बीजों में कीटों का प्रभाव शून्य रहा। लेपित करने हेतु सूती कपड़े को तेल में भिगोकर मटके में लेपित किया गया

## पादप रोग नियंत्रण के लिए देशी गाय के ताजा गोबर एवं अन्य वनस्पतियों का योगदान

**प्रयोग क्रमांक 25 – गेहूँ की फसल में जड़ गलन की रोकथाम हेतु ताजे गोबर के रस का उपयोग**

गेहूँ की फसल में जड़ गलन की रोकथाम हेतु पादप रोग विज्ञान प्रयोगशाला में किये गये परीक्षण में ताजे गोबर के रस में उपलब्ध जीवाणुओं द्वारा उक्त फफूंद का नियंत्रण देखा गया। इस संदर्भ में 75 किलोग्राम ताजा गोबर प्रति एकड़ का प्रयोग खड़ी फसल में करने पर भी बिमारी का नियंत्रण पाया गया।



**प्रयोग क्रमांक 26 – चने की फसल में जड़ गलन/फ्यूजेरियम विल्ट की रोकथाम हेतु ताजे गोबर के रस का उपयोग**

चना की फसल में उक्ता रोग की रोकथाम हेतु पादप रोग विज्ञान प्रयोगशाला में किये गये परीक्षण में ताजे गोबर के रस में उपलब्ध जीवाणुओं द्वारा उक्त फफूंद का नियंत्रण देखा गया। इस संदर्भ में 75 किलोग्राम ताजा गोबर प्रति एकड़ का प्रयोग खड़ी फसल में करने पर भी बिमारी का नियंत्रण पाया गया।



**प्रयोग क्रमांक 27 – आलू की फसल में फाइटोथोरा की रोकथाम हेतु विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों के रस का उपयोग**

आलू की फसल में फाइटोथोरा स्पीशिज के नियंत्रण हेतु पादप रोग विज्ञान प्रयोगशाला में किये गये परीक्षण में 48 वनस्पतियों द्वारा तैयार घोल से इस समस्या का समाधान पाया गया इस घोल को तैयार करने हेतु 48 प्रकार की औषधीय वनस्पति के पत्तों (प्रत्येक के 1 किलोग्राम) को 200 लीटर पानी में 10 लीटर गोमूत्र एवं 10 किलोग्राम ताजा गोबर मिला कर सड़ा दिया जाता है। तैयार घोल की 10 प्रतिशत सांद्रता फसल में पानी के साथ उपयोग कि गई।

**प्रयोग क्रमांक 29 – मैथी की फसल में डाउनी मिल्ड्यू की रोकथाम हेतु ताजे गोबर के रस का उपयोग**

मैथी की फसल में डाउनी मिल्ड्यू की रोकथाम के सम्बन्ध में पादप रोग विज्ञान प्रयोगशाला के परीक्षण अनुसार ताजा गोबर का परिणाम सकारात्मक पाया गया। इस हेतु ताजा गोबर का उपयोग बीज उपचार भूमि उपचार एवं पर्णय छिड़काव में किया गया।

**प्रयोग क्रमांक 28 – लहसुन की फसल में बोट्राइटिस की रोकथाम हेतु लहसुन के रस का उपयोग**

लहसुन की फसल में बोट्राइटिस स्पीशिज के नियंत्रण हेतु पादप रोग विज्ञान प्रयोगशाला में किये गये परीक्षण में लहसुन का रस प्रभावी पाया गया। इस हेतु 0.5 प्रतिशत लहसुन रस का छिड़काव फसल में किया गया।

**प्रयोग क्रमांक 30 – पालक की फसल में लिफ स्पोट की रोकथाम हेतु ताजे गोबर के रस का उपयोग**

पालक की फसल में क्लेडोस्पोरियम स्पीशिज की रोकथाम के सम्बन्ध में पादप रोग विज्ञान प्रयोगशाला के परीक्षण आधार पर ताजा गोबर, गोमूत्र एवं दस पत्ती घोल का प्रभाव सकारात्मक पाया गया। इस संदर्भ में ताजा गोबर, गोमूत्र का प्रयोग 10 प्रतिशत पर्णय छिड़काव में एवं 10 प्रकार की वनस्पतियों को गोबर, गोमूत्र के साथ सड़ाने पर तैयार घोल की 10 प्रतिशत सांद्रता उपयोग करने पर अच्छे परिणाम मिले।

## ❧ जल संग्रहण एवं संरक्षण ❧

अनुसंधान केन्द्र के टेक्नो पार्क के पानी को पौण्ड (तालाब) में सहेज कर फसल उत्पादन में सामान्य से कम पानी उपयोग कर जल संरक्षण का कार्य किया गया। विशेष तौर पर गेहूँ में मिनी फव्वारा से सिंचाई द्वारा रिकार्ड उत्पादन लिया गया। ड्रिप सिस्टम में भी सामान्य से कम अर्थात् एक चौथाई मात्रा पानी उपयोग कर के कीट, रोग नियंत्रण में सकारात्मक प्रभाव के साथ उत्पादन में भी वृद्धि हुई।

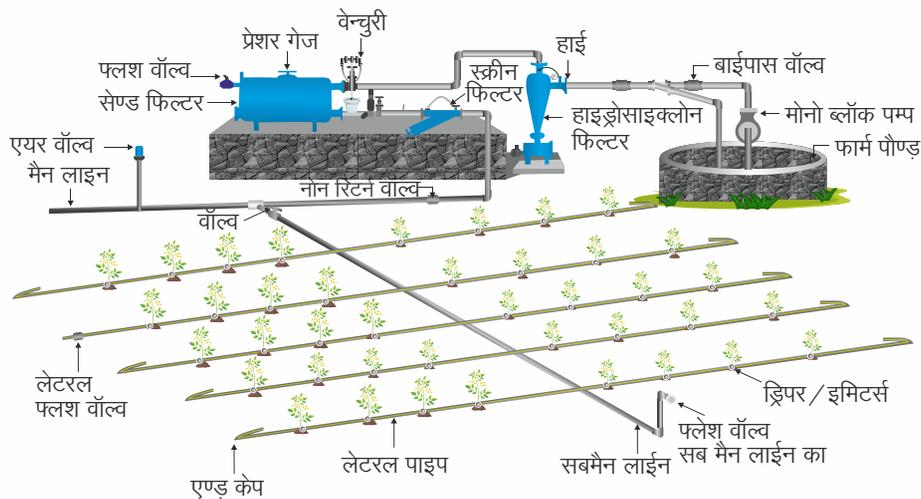


**तालाब (पौण्ड) द्वारा संग्रहण** – जल एक अमूल्य निधि है, इसके संरक्षण हेतु अनुसंधान केन्द्र द्वारा उपरोक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु खेत में विशेष ढलान बना कर खेत का पानी खेत में रोक कर, जगह जगह नालियाँ बना दी, उक्त मुख्य नाली को फिल्टर टैंक से होते हुए तालाब में जोड़ दिया गया है। तालाब की लम्बाई 45 मीटर और चौड़ाई 50 मीटर व 3 मीटर गहराई है। इसमें प्लास्टिक शीट जो कि 300 माइक्रोन मोटी है। इसमें पूरे 6 हैक्टेयर का पानी सहेजा जा रहा है। इस तालाब के बूँद-बूँद पानी का उपयोग हम ड्रिप इरिगेशन पद्धति से कर रहे हैं जिसकी वजह से इंच इंच भूमि सिंचित है।



**भू-जल पुर्नभरण इकाई द्वारा संरक्षण** – भूमिगत जल स्तर को बढ़ाने हेतु ग्राम स्तर पर, प्रत्येक किसान के खेत पर बहते जल को रोक कर फिल्टर करते हुए सैकड़ों फीट नीचे भेज कर भूजल स्तर को बढ़ाना व जल संरक्षण को गति देना।

फि' क्लक & पुनर्भरण के इस कार्य हेतु वे नलकूप जो कभी पर्याप्त पानी देते थे या दे रहे हैं वे उपयोगी साबित हुए हैं। लेकिन जहाँ कुएँ उपलब्ध हो तो कुएँ के माध्यम से भी पानी का संरक्षण किया जा सकता है।



**फसल विशेष में जल बचत पद्धति/तकनीक उपयोग के द्वारा तुलनात्मक अध्ययन** – कम लागत में बूँद-बूँद तकनीकी (स्थानान्तरण योग्य) – सामान्य मजबूत पाइपों को मुख्य लाइन (Main Line) बनाकर उसी को पुनः उप लाइन (Submain Line) निकालकर प्रत्येक 50 सेमी. पर राइजर जोड़ कर आवश्यकता अनुसार सिंचाई की जा सकती है। इस तरीके से कम लागत में सब्जी, फूल, फल आदि फसलों का उत्पादन लिया जा सकता है।

## कम लागत की बूँद-बूँद सिंचाई द्वारा जल संरक्षण

प्रयोग क्रमांक 31 – सोयाबीन (किस्म रूचि 2001 व जेएस 2034) की फसल में सिंचाई के भिन्न-भिन्न प्रकारों का उपज एवं अन्य सकारात्मक कारकों के सम्बन्ध में अध्ययन।



परिणाम – जल संरक्षण के लिए अनुसंधान केन्द्र द्वारा विकसित पद्धति से सोयाबीन की किस्म रूचि 2001 एवं जेएस 2034 में, सिंचाई करने पर जायद ऋतु में उत्पादन ड्रिप द्वारा ज्यादा प्राप्त हुआ साथ ही उक्त विधि से सिंचाई करने पर कीट एवं रोग का प्रभाव भी कम रहा।



## अध्यात्म के संदर्भ में वेद विज्ञान के द्वारा वृष्टि (वर्षा) में प्रयास

अनुसंधान कार्य	:	अनावृष्टि के समय वेदों की ऋचाओं के सस्वर पाठन द्वारा वृष्टि यज्ञ को फलित किया गया।
उद्देश्य	:	अनावृष्टि से होने वाले नुकसान से बचाव एवं वेद विज्ञान के प्रति आमजनता का प्रत्यक्ष विश्वास बनाना।
स्थान	:	स्वास्तिक गो – गृह, श्रीरामशान्ताय जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र कोटा।
मौसम पुर्वानुमान	:	तकनीकी व्यवस्थाओं के अनुसार दिनांक 05 सित. 2023 को 11 सित. 2023 तक के प्राप्त पुर्वानुमान सूची में दिनांक 5 सित. 2023 के बारिश की कोई सम्भावना नहीं थी, अन्य बिन्दु जैसे तापमान आद्रता, आदि के आँकड़े भी बारिश नहीं दर्शा रहे थे।
भौतिक सत्यापन	:	दिनांक 05 सित. 2023 समय सांय 4:00 बजे तक आसमान में बादल कही नजर नहीं आ रहे थे, तेज धूप और मध्यम हवाएं थी
दिनांक, वार, तिथि	:	5 सितम्बर 2023, मंगलवार, भाद्रपद 6 भगवान बलराम जयन्ति।
समय	:	सुबह 11 बजे से शाम 6 बजे तक
वैदिक व्यवस्थाएं	:	ऋग्वेद – दशमं मण्डलमं – अष्ट नवतितमं सुक्तम (वर्षकाम सुक्त) के साथ शेष तीनों वेदों से संकलित
आचार्यत्व	:	पण्डित आशीष शर्मा
विधि	:	गणपति मात्रिका नवग्रह कलश
व्यवस्थाएं	:	यज्ञ कुण्ड, हवन सामग्री
विशेष सामग्री	:	पंचपल्लव, सप्तधान्य के साथ शिलाजीत, जटामासी बच, कुशा, चन्दन
यजमान	:	डॉ. पवन, पुरुषोत्तम शर्मा, सुदर्शन शर्मा (किसान) अन्य स्टाफ
परिणाम	:	20 मिनट बाद (पूर्णाहूति के) 6.5 एमएम वर्षा हुई।

यह आँकड़ा कृषि अनुसंधान केन्द्र उम्मेदगंज से प्राप्त हुआ।



## बायोडायनेमिक कम्पोस्ट के संदर्भ में प्रयास

अनुसंधान केन्द्र के प्रांगण पर बायोडायनेमिक कम्पोस्ट के संदर्भ में कई तरह के प्रयास किये जा रहे हैं जैसे— BD-500 (सींग खाद) का बड़े स्तर पर उत्पादन एवं वृद्ध गोमाता एवं नन्दी महाराज के मरणोपरान्त समाधी खाद हेतु प्रयास किया गया। इसी तरह बायोडायनेमिक कम्पोस्ट विभिन्न प्रकार से भी बनाने का प्रयास किया जाता है जिसमें BD-500 से BD-509 की श्रृंखला प्रमुख है।



18416-075-2021/21/143

**बायोडायनेमिक कम्पोस्ट की विधि एवं प्रयोग**

**श्रीधामशान्ताय**  
जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र  
गोयल ग्रामीण विकास संस्थान  
| नो आयार्जित जैविक कृषि को समर्थित |  
राजस्थान जैविक प्रदर्शनकाल संस्थान जयपुर अंतर्राज्यीय  
ग्राम जलधोरा, वैद्युत-सोनीद चार्ज, कोटा - 325001 (राजस्थान)  
☎ 88759 95439 📧 ggvs@govsglobal.com 🌐 www.gvsglobal.com

## गो पालन, संवर्धन एवं संरक्षण

गो आधारित जैविक कृषि में गाय हमारा आर्थिक रीढ़ स्तम्भ है। इसलिए इस पद्धति में देशी गाय के पालन संवर्धन एवं संरक्षण के संदर्भ में भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रयास हमारे यहां पर किये गये। जिसकी विस्तृत जानकारी यहां संकलित है।

**गोपालन** — अनुसंधान केन्द्र से जुड़ी हुई 3 गोशालाओं में 161 गोवशों का पालन हो रहा है जिसमें दुधारू, बछड़िया, बछड़े, बैल, नन्दी एवं वृद्ध गो माताएं शामिल है। इन सभी को अनुसंधान केन्द्र द्वारा विकसित एवं निर्मित खनीज लवण, औषधीय सामग्री आदि के साथ यहां उत्पादित हरा चारा, सूखा चारा, संतुलित आहार आदि दिया जाता है। सभी गोवंश का टीकाकरण अनुसंधान केन्द्र के तकनीकी विशेषज्ञों की देख-रेख में समय-समय पर होता रहता है। गोवंश के अन्तः परजीवीयों एवं बाह्य परजीवीयों के नियंत्रण एवं निराकरण के लिए भी स्थानीय व्यवस्थाओं द्वारा निर्मित औषधीयों एवं आदानों द्वारा होता है।



**गो गृह आवास निर्माण की संरचना के संदर्भ में** — प्रांगण पर स्वास्तिक आकार की गोशाला चार समान भागों में विभाजित है। जिसमें दुधारू गायें, नन्दी, बछड़ियां एवं बैल रहते हैं। प्रत्येक भाग में सभी गोवंश खुले में रहते हैं।

सूर्य की किरणें एवं हवा का आवागमन होना इस संरचना का मूल वैज्ञानिक कारण है जिसकी वजह से गोवंश के स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है अर्थात् उक्त परिसर में हवा एवं धूप की वजह से हानिकारक जीवाणुओं का नियंत्रण प्राकृतिक व्यवस्था से होने के कारण गोवंश में किसी प्रकार की कोई बीमारी नहीं फैलती चारों ओर से खुला परिसर होने की वजह से पक्षियों का आवागमन भी हो जाता है जिससे गोवंश में लगने वाले चिचड़े, जू आदि का नियंत्रण हो जाता है।

**नस्ल संवर्धन** — अनुसंधान केन्द्र के द्वारा गोवंश की नस्ल सुधार के लिए पिछले कई वर्षों से प्रयास जारी है। जिसमें गिर नस्ल के कुल 10 नन्दी द्वारा अबतक 65 बछड़े एवं 85 बछड़ियां तैयार हुई। उपरोक्त 10 नन्दी की माँ-पिता के दुग्ध रिकॉर्ड 15 से 22 लीटर प्रतिदिन प्रति पशु एवं बछड़े-बछड़ी के माँ-पिता का दुग्ध रिकॉर्ड भी 15 से 20 लीटर प्रति गोवंश प्रतिदिन रहा है। भविष्य में उपरोक्त व्यवस्था से उच्च मात्रा में दुग्ध उत्पादन वाले गोवंश यहां पर उपलब्ध रहेंगे, साथ ही इनसे अन्य उत्पाद भी प्राप्त होते रहेंगे।



## श्रीधान्य (मिलेट / मोटे अनाज) का उत्पादन, संरक्षण, उन्नयन एवं वितरण

**उत्पादन** – वर्ष 2023 को श्रीधान्य/मिलेट प्रोत्साहन वर्ष के रूप में मनाया गया, इसलिए वर्ष 2022 से ही अनुसंधान केन्द्र के टेक्नो पार्क पर कुल 6 प्रकार के मोटे अनाज का उत्पादन खरीफ ऋतु में लिया जा रहा है और दो प्रकार के मोटे अनाज का उत्पादन रबी में प्रयोग के तौर पर भी किया जा रहा है ।



**हरी कंगनी**



**कौंदो**

**रागी**



**साँवा-1**

**कंगनी**



**कुटकी**

**साँवा-2**

**संरक्षण** – अनुसंधान केन्द्र पर उत्पादित एवं अन्य स्थानों के किसानों द्वारा उत्पादित भिन्न-भिन्न प्रकार के श्रीधान्य (मिलेट) बीजों का संरक्षण यहां स्थित बीज बैंक के द्वारा सतत दस्तावेजीकरण के साथ हो रहा है ।

**उन्नयन** – चयन विधि के द्वारा साँवा की विशेष प्रजाति विकसित की जा रही है जो कि अत्यन्त जल भराव वाले क्षेत्रों में भी सामान्य फसलों के समकक्ष उत्पादन देती रहेगी इस संदर्भ में पादप प्रजनकों का विशेष योगदान लिया जा रहा है ।

**वितरण** – पिछले दो वर्षों से भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से यहां पर आने वाले सभी किसानों को सभी प्रकार श्रीधान्य बीज उपलब्ध कराये जाते हैं एवं उनसे पुनः सवा गुणा बीज लिया जाता है ।

**विशेष बिन्दू** – पिछले दो वर्षों से भिन्न-भिन्न श्रीधान्य फसलों के उत्पादन के दौरान यह पाया कि इन फसलों में कई प्रकार के लाभकारी पक्षियों का आना हुआ जो जैव विविधता के लिए प्रभावी प्रयास है ।



## जैविक कृषि उत्पाद में उपलब्ध पोषक तत्व का विश्लेषण

प्रयोग क्रमांक 32 – जैविक कृषि पद्धति एवं रसायनिक कृषि पद्धति से उत्पादित अनाज में उपलब्ध पोषक तत्वों के सम्बन्ध में तुलनात्मक अध्ययन।



रासायनिक कृषि के खाद्यान्न एवं जैविक कृषि के खाद्यान्न में उपलब्ध तत्वों की उपलब्धता के संदर्भ में परीक्षण करने पर पाया कि गेहूँ (राज-4037, राज-4079), जो, मैथी एवं चना के दो-दो नमूने (जैविक एवं रासायनिक) में जैविक नमूनों में सभी प्रकार के पोषक तत्व (प्राथमिक, सूक्ष्म एवं अन्य) ज्यादा पाये गये।



परिणाम – रासायनिक कृषि की सब्जियों एवं जैविक कृषि की सब्जियों में उपलब्ध पोषक तत्वों की उपलब्धता के संदर्भ में परीक्षण करने पर पाया कि हरी मिर्च, बैंगन, भिण्डी, टमाटर, लौकी, गिल्की एवं हरी चौलाई के दो-दो नमूने (जैविक एवं रासायनिक) में जैविक नमूनों में सभी प्रकार के पोषक तत्व (प्राथमिक, सूक्ष्म एवं अन्य) अधिक पाये गये।

## जैविक एवं रासायनिक कृषि उत्पाद के बीज भार के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन

श्रीरामशान्ताय जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र के तकनीकी सहयोग से गेहूँ की जैविक कृषि करने वाले किसानों के नमूने लेकर बीज भार का अवलोकन किया गया जिसमें नीचे सूची में 34 गांवों के 47 किसानों के 94 नमूनों के विश्लेषण एवं निष्कर्ष का तुलनात्मक विवरण अंकित है।

क्र.स.	किसान का नाम	गांव	रासायनिक उत्पाद का बीज भार	जैविक उत्पाद का बीज भार	जैविक उत्पाद के भार में वृद्धि (प्रतिशत)
1.	शिवराज जी चौधरी	अम्बाला	44.6037 ग्राम	45.7560 ग्राम	2.52 प्रतिशत
2.	ओम प्रकाश जी मीणा	डगारियां	40.1425 ग्राम	44.0625 ग्राम	8.90 प्रतिशत
3.	प्रमोद जी मिश्रा	खेड़ा रसूलपुर	36.1707 ग्राम	45.0206 ग्राम	19.66 प्रतिशत
4.	प्रेमचन्द जी अवस्थी	दसलाना	35.0229 ग्राम	39.1712 ग्राम	10.59 प्रतिशत
5.	रामबिलास जी नागर	दसलाना	35.0229 ग्राम	47.0697 ग्राम	25.59 प्रतिशत
6.	सूरज मालव	मण्डानिया	41.7194 ग्राम	46.4442 ग्राम	10.17 प्रतिशत
7.	भंवरलाल जी नागर	रंगपुर	39.5030 ग्राम	44.1599 ग्राम	10.5 प्रतिशत
8.	सत्यनारायण जी मीणा	मोरपा	38.0239 ग्राम	44.2534 ग्राम	14.1 प्रतिशत
9.	मदनलाल जी मीणा	मोरपा	40.6178 ग्राम	42.8651 ग्राम	5.24 प्रतिशत
10.	महावीर जी नागर	चन्द्रेशल	36.6851 ग्राम	41.8358 ग्राम	12.3 प्रतिशत
11.	बद्रीलाल जी नागर	पडासलिया	36.8079 ग्राम	43.9047 ग्राम	16.2 प्रतिशत
12.	सूरजमल गुर्जर	शोली	31.3636 ग्राम	40.0964 ग्राम	21.78 प्रतिशत
13.	नाथूलाल जी नागर	ब्रजनगर	35.4313 ग्राम	38.9085 ग्राम	8.93 प्रतिशत
14.	मांगीलाल जी सुमन	चौमा बीबू	36.8476 ग्राम	48.1124 ग्राम	23.41 प्रतिशत
15.	ब्रह्मानन्द जी	गंदीफली	37.8228 ग्राम	38.3544 ग्राम	1.39 प्रतिशत
16.	अश्विनी जैन	देवली	39.9008 ग्राम	48.5009 ग्राम	17.73 प्रतिशत
17.	लालचन्द जी सुमन	खजूरी	42.0384 ग्राम	43.2476 ग्राम	2.80 प्रतिशत
18.	महावीर जी सुमन	खजूरी	42.0384 ग्राम	46.5554 ग्राम	9.70 प्रतिशत
19.	सुदर्शन शर्मा	अरण्डखेड़ा	40.1284 ग्राम	43.8700 ग्राम	8.5 प्रतिशत
20.	करण जी सुमन	ढीगोली	44.0829 ग्राम	48.2057 ग्राम	8.55 प्रतिशत
21.	राजेन्द्र जी मीणा	बालापुरा	42.7640 ग्राम	43.6774 ग्राम	2.09 प्रतिशत
22.	हेमराज जी	मवासा	39.6006 ग्राम	48.0020 ग्राम	17.5 प्रतिशत

क्र.स.	किसान का नाम	गांव	रासायनिक उत्पाद का बीज भार	जैविक उत्पाद का बीज भार	जैविक उत्पाद के भार में वृद्धि प्रतिशत
23	नरेन्द्र जी सिंह	बडोदिया	36.4849 ग्राम	42.2080 ग्राम	13.6 प्रतिशत
24.	रामस्वरूप जी मेरोठा	बडोदिया	35.6359 ग्राम	47.9982 ग्राम	25.8 प्रतिशत
25.	लक्ष्मीनारायण जी	उमरहेडी	41.6812 ग्राम	43.8961 ग्राम	5.0 प्रतिशत
26.	सत्यनारायण जी शर्मा	नाहरीया	43.8153 ग्राम	49.2406 ग्राम	11.0 प्रतिशत
27.	भीमराज जी	चौमा मालियान	34.9700 ग्राम	40.3802 ग्राम	13.4 प्रतिशत
28.	एतेन्द्र जी गुर्जर	बालूहेड़ा	41.6079 ग्राम	46.0416 ग्राम	9.6 प्रतिशत
29.	आणन्दीलाल जी	चौमा बीबू	38.8423 ग्राम	44.5965 ग्राम	12.9 प्रतिशत
30.	योगेन्द्र जी मेहता	लक्ष्मीपुरा	39.9000 ग्राम	43.0713 ग्राम	7.4 प्रतिशत
31.	मोहित जी नागर	जाखोड़ा	37.2728 ग्राम	47.4200 ग्राम	21.4 प्रतिशत
32.	प्रहलाद जी गुर्जर	कैथून	41.0523 ग्राम	46.2545 ग्राम	11.2 प्रतिशत
33.	भीमराज जी	करनवास	40.7754 ग्राम	46.7194 ग्राम	12.72 प्रतिशत
34.	रामकल्याण जी	सारोला कंला	37.6815 ग्राम	41.2553 ग्राम	8.66 प्रतिशत
35.	ब्रज सुन्दर जी शर्मा	खानपुर	32.1982 ग्राम	45.5850 ग्राम	29.37 प्रतिशत
36.	शिवराज जी चौधरी	सोजपुर	44.5473 ग्राम	50.7011 ग्राम	12.14 प्रतिशत
37.	सुरेन्द्र जी नागर	सोजपुर	44.2432 ग्राम	47.9751 ग्राम	7.78 प्रतिशत
38.	सुरेन्द्र जी नागर	सारोला कला	43.8761 ग्राम	45.4797 ग्राम	3.53 प्रतिशत
39.	राजाराम जी चौधरी	अम्बाला	41.0505 ग्राम	46.0859 ग्राम	10.93 प्रतिशत
40.	धर्मराज जी चौधरी	अम्बाला	44.9440 ग्राम	49.5536 ग्राम	9.30 प्रतिशत
41.	जगदीश जी	गुरजेनी	42.9620 ग्राम	45.3010 ग्राम	5.16 प्रतिशत
42.	जगदीश जी	अम्बाला	45.4500 ग्राम	47.6625 ग्राम	4.64 प्रतिशत
43.	सीताराम जी नागर	कँवल्दा	39.5188 ग्राम	45.8436 ग्राम	13.80 प्रतिशत
44.	महावीर जी मालव	आमली झाड	39.6194 ग्राम	43.9144 ग्राम	9.78 प्रतिशत
45.	ब्रजमोहन जी मालव	खेड़ा रसूलपुर	37.1364 ग्राम	39.5316 ग्राम	6.06 प्रतिशत
46.	रामदयाल जी मालव	खेड़ा रसूलपुर	42.8768 ग्राम	43.7663 ग्राम	2.03 प्रतिशत
47.	चन्द्रप्रकाश जी मालव	खेड़ा रसूलपुर	38.7964 ग्राम	46.9605 ग्राम	17.39 प्रतिशत

उपरोक्त समस्त नमूनों के विश्लेषण के अनुसार सभी जैविक नमूनों का भार (1000 बीजों का) रासायनिक नमूनों की तुलना में अधिक है।

## जैव विविधता के संरक्षण के लिए प्रयास (वृक्षारोपण द्वारा)

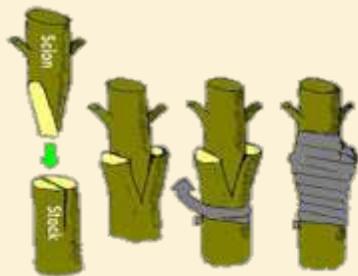
अनुसंधान केन्द्र पर भिन्न-भिन्न स्थानों पर वर्ष 2019 में कुल 100 प्रकार के पेड़ लगाए गए, सभी पेड़ वर्तमान में यहां जीवन्त स्थिति में हैं। लेकिन यहां स्थान विशेष की अनुकूलनता (जलवायु/भौगोलिक परिस्थिति) अनुसार वृक्षों की प्रजाति चयन के लिए भिन्न-भिन्न दृष्टि से गहन अनुसंधान एवं अध्ययन किये गये। इस सम्बन्ध में विस्तृत विवरण यहां संकलित है —



**वृद्धि के सन्दर्भ में** — वृद्धि की दृष्टि से किए अध्ययन में पाया कि यहां कुल 47 पेड़ तीव्र गति से बढ़े हैं, 23 पेड़ मध्यम वृद्धि से एवं 30 पेड़ न्यून वृद्धि से बढ़े हैं अर्थात् तीव्र वृद्धि वाले पेड़ यहां के लिए सरलता से उत्पादित होंगे, मध्यम एवं न्यून वृद्धि के पेड़ धीरे-धीरे उत्पादित हो सकते हैं। लेकिन यहां हर प्रकार के पेड़ उत्पादित हो सकते हैं।



**उत्पादन के सन्दर्भ में** — उत्पादन की दृष्टि से हुए अध्ययन में पाया कि पेड़ों को लगाने के बाद एक वर्ष की उम्र के 4 पेड़ों में, दो वर्ष की उम्र के 2 पेड़ों में, तीन वर्ष की उम्र के 14 पेड़ों में, चार वर्ष की उम्र के 24 पेड़ों में, एवं 5 वे वर्ष की उम्र के 15 पेड़ों में उत्पादन शुरू हुआ। अतः शेष पेड़ों का उत्पादन आना शेष है।



**प्रवर्धन के द्वारा रोजगार के सन्दर्भ में** — रोजगार एवं प्रवर्धन की दृष्टि से किये गये प्रयास में देखा गया कि यहां 18 प्रकार के पेड़ सामान्य कलम (Cutting) से, 11 प्रकार के पेड़ कलम एवं बीज दोनों से, 31 प्रकार के पेड़ बीज से तैयार किये जा रहे हैं। कुछ पेड़ों में प्रवर्धन के संदर्भ में अनुसंधान जारी है। अतः उपरोक्त 100 पेड़ों के रोपण के बाद प्रवर्धन की कोई भी विधि अपनाकर ग्रामीण युवा रोजगार सृजन कर सकता है।

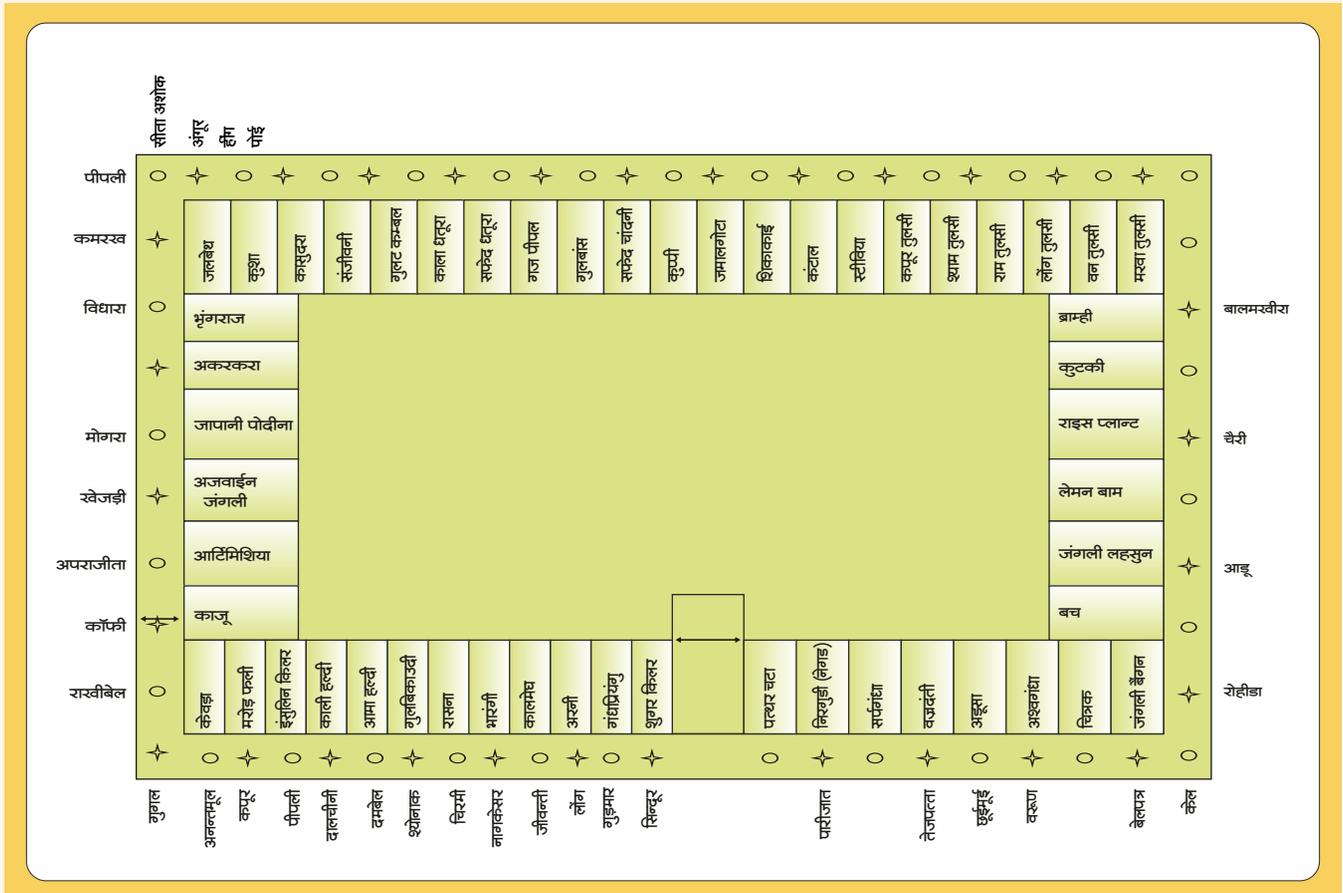


**पक्षी विशेष आसरे (घोसलें) के संदर्भ** — अलग-अलग पेड़ों के ऊपर सदा बैठने वाले पक्षी, विशेष तौर पर मांसाहारी (लाभकारी) पक्षियों के आसरे (घोसलें) के संदर्भ में किये गए अध्ययन अनुसार ध्यान में आया कि कुल 19 प्रकार के पेड़ मांसाहारी पक्षियों के जीवन वृद्धि हेतु अनुकूल हैं और ये पेड़ यहां की जलवायु के अनुकूल हैं जो कि भौगोलिक परिस्थिति अनुसार वृक्ष और पक्षी जैविक कृषि के लिए हितकारी है क्योंकि उपरोक्त मांसाहारी पक्षी हानिकारक कीटों के नियन्त्रण में प्रभावी भूमिका निभते हैं।

## जैव विविधता का संरक्षण और संवर्धन

### 112 औषधीय वनस्पतियों को एक वाटिका में रोपण

अनुसंधान केन्द्र के प्रांगण पर उपरोक्त अनुसार एक हर्बल वाटिका छोटे क्षेत्र (100x50 फीट) में स्थापित की गई जिसमें 112 वनस्पतियों (पेड़, झाड़ी, लताए आदि) प्रत्यक्ष दर्शन हेतु है। जहां 30 बड़े पेड़, 52 मध्यम ऊँचाई के पेड़ एवं इनके मध्य 30 प्रकार की लताए सुशोभित है अर्थात् कुल 112 प्रकार की वनस्पति की जानकारी छोटे से भू-भाग में अल्प समय में देखी समझी जा सकती है।



किंगफिशर



रंगीन फाख्ता



टिटहरी



बया



स्वर्ण बया



कमेडी (फाख्ता)



पिली बया



मैना



काली चिडियां

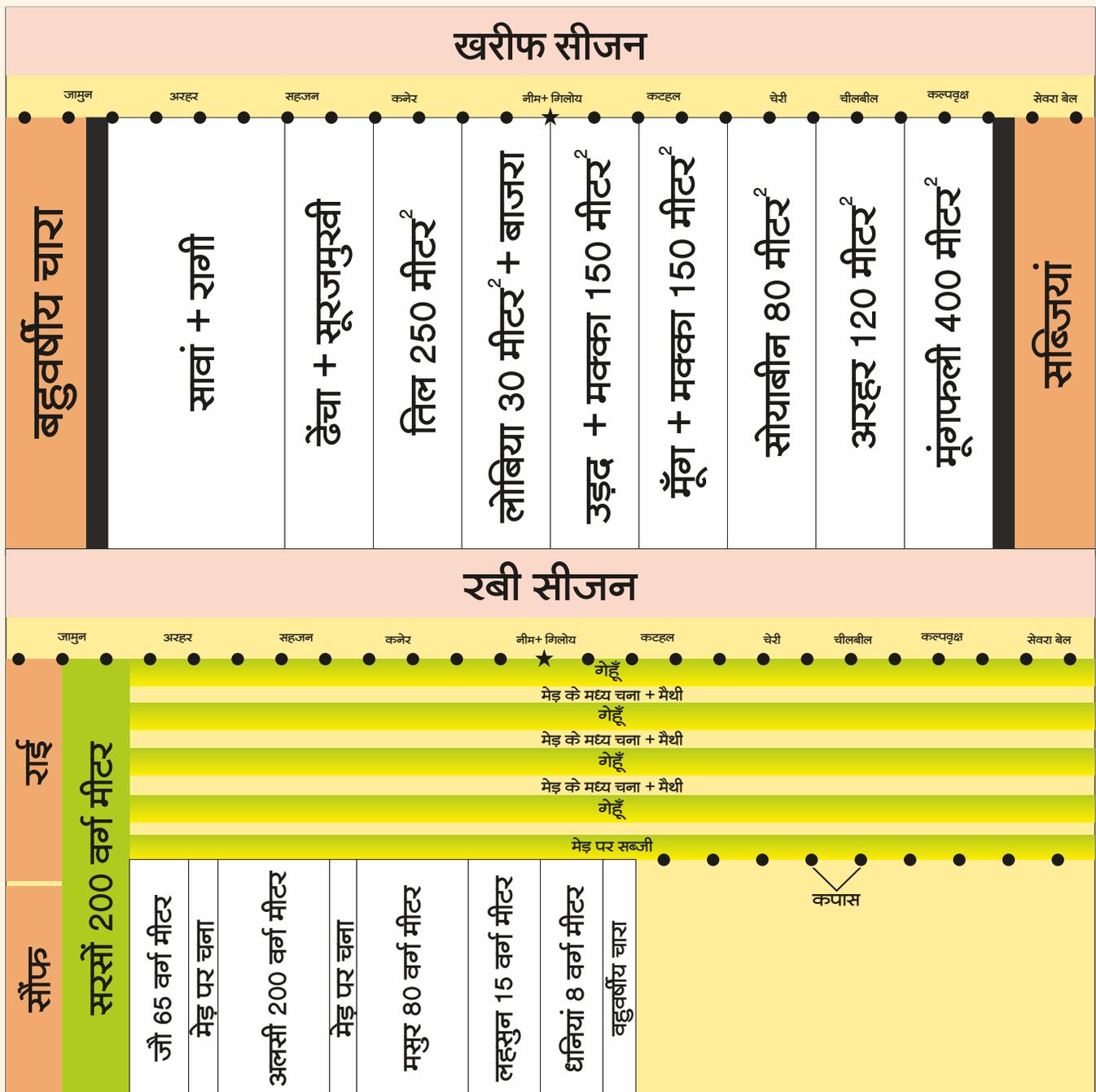


जंगल कोतवाल

## पोषण वाटिका

(परिवार के शुद्ध आहार हेतु)

एक परिवार के छः सदस्यों के लिए वर्ष भर का अनाज (5 प्रकार), तिलहन (4 प्रकार), दलहन (6 प्रकार), फल (2 प्रकार), सब्जी (10 प्रकार), मसाला (4 प्रकार), चारा (2 प्रकार), औषधि (5 प्रकार), फूल (2 प्रकार), कपास और दूध की व्यवस्था जैविक पद्धति से करने के लिए हाड़ौती के एक बीघा (1620 वर्गमीटर) में पोषण वाटिका (बाड़ी) विकसित की गई। ICMR नई दिल्ली, के द्वारा तय मानक जो एक स्वस्थ व्यक्ति के आहार के लिए आवश्यक हैं उसकी पूर्ति के लिए ये एक बीघा की वाटिका है। जिसमें एक गाय के पालन द्वारा यह सब आसानी से हो सकता है।



उपरोक्त ग्राफ अनुसार पिछले तीन वर्ष में यह प्रयास संचालित है।

## बहुस्तरीय कृषि (मल्टी लेयर फार्मिंग)

बढ़ती हुई जनसंख्या और घटती हुई जोत के कारण, जनसंख्या के खाद्यान्न की पूर्ति हेतु बहुस्तरीय कृषि पद्धति पर निरन्तर अनुसंधान कार्य

मुख्य फसल — मालाबार नीम के मध्य बहुवर्षीय अरहर

मुख्य फसल के साथ की फसलें — लोकी, गिल्की, तोरई, कद्दू, करेला

अन्य फसले — ग्लेडियोलस, गेलार्डिया, हल्दी, आलू, गाजर, मूली

e/ dhQl yS& पालक, मैथी, धनियां, लाल चौलाई



## नवीन फसलें

यहाँ के मॉडल फार्म पर उक्त फसलों में कई नवीन फसले जैसे रजनीगंधा, ग्लेडियोलस, शतावर, लेमनग्रास, सिट्रोनेला, अरहर, कलौंजी, ड्रेगन फ्रूट, खस और स्टीविया का उत्पादन भी प्राप्त किया गया साथ ही 115 प्रकार के औषधीय पेड़ों को लगाकर विभिन्न दृष्टि से गहन अध्ययन भी किया जा रहा है।



## यान्त्रिक नवाचार

### रिज्ड एंड फेरो मशीन

हमारी टीम द्वारा रिज्ड एंड फेरो मशीन विकसित की गई जो सीड ड्रिल के साथ उठी हुई बेड पर चार-चार लाइन की दो बेड पर (कुल आठ लाइन पर) बीज की बुवाई करती है जो कि जल भराव समस्या में प्रभावी रहेगी।



रिज्ड एंड फेरो मशीन द्वारा बुवाई

### मल्टी टाइप पैडी थ्रेशर मशीन

धान को झाड़ने के लिए मानवीय श्रम की बजाय पेट्रोल, बैल या विद्युत चालित मल्टी टाइप पैडी थ्रेशर विकसित किया गया।



मल्टी टाइप पैडी थ्रेशर



## उच्च तकनीकी का समावेश

जैविक कृषि परम्परागत पद्धतियों के विस्तार हेतु अत्याधुनिक तकनीकी को समावेश करना आदि की आवश्यकता है इसी संदर्भ में अनुसंधान केन्द्र पर भिन्न-भिन्न प्रयास किये गए, जिसकी जानकारी निम्नलिखित है -

### (ड्रोन द्वारा गोमूत्र का छिड़काव)



### मौसम पूर्वानुमान इकाई

अनुसंधान केन्द्र पर स्थापित मौसम पूर्वानुमान इकाई से प्राप्त आँकड़ों के माध्यम से सूचनाएं प्राप्त कर वैज्ञानिक प्रणाली से कार्य योजना तैयार की जाती है, साथ ही इसी इकाई से प्राप्त सटीक सूचनाएं सामाजिक मिडिया के माध्यम से किसानों को दी जाती है। जिससे उनको अपनी फसलों में प्राकृतिक नुकसान और कीट-रोग के प्रकोप से बचाव हेतु सहायता मिलती है।



## संरक्षित खेती के संदर्भ में प्रयास

(स्थानीय व्यवस्थाओं से निर्मित कम लागत की संरचनाएं – ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार सृजन हेतु)



**बाँस की नर्सरी** – कम लागत में स्थानीय व्यवस्था (बाँस, बल्ली) के माध्यम से आधुनिक, टिकाऊ, आकर्षक नर्सरियों का सृजन किया गया जिसको प्रत्यक्ष देखकर गाँव का किसान इस प्रकार की इकाई को बनाकर आसानी से स्वस्थ पौधे बना सके व भूमिहीन किसान अन्य कृषकों के लिए नर्सरी तैयार कर के रोजगार सृजन कर सके। इस उद्देश्य से यह इकाई तैयार की गई जिसका क्षेत्रफल – 50 फीट लम्बा, 20 फीट चौड़ा ऊँचाई – साईड से 8 फीट, मध्य से 10 फीट, कुल लागत – 25000 रुपये है। इस मॉडल से एक माह में सब्जियों की 40 हजार पौधे तैयार करके प्रतिमाह बीस हजार रुपये प्रति व्यक्ति शुद्ध आय की जा सकती है।

**सस्ता सोलर ड्रायर** – कम लागत में स्थानीय व्यवस्था (सामान्य लोहे के पाइप, इंगल आदि) के माध्यम से आधुनिक, टिकाऊ, आकर्षक सोलर ड्रायर का सृजन किया गया। जिसको प्रत्यक्ष देखकर गाँव का किसान आसानी से इस प्रकार की इकाई को बनाकर अपने उत्पाद फल, सब्जी, औषधि आदि का मूल्य संवर्धन करने हेतु कृषि उत्पाद को सुखा सकते हैं एवं सर्दियों में नर्सरी तैयार करने हेतु इस ड्रायर को हीटिंग चेम्बर के रूप में काम में ले सकते हैं। भूमिहीन किसान अन्य कृषकों के यहाँ ऐसे ड्रायर तैयार कर के रोजगार सृजन कर सके। इस उद्देश्य से यह इकाई तैयार की गई। क्षेत्रफल—20 फीट लम्बा, 15 फीट चौड़ा ऊँचाई—साईड से 12 फीट, मध्य से 15 फीट के इस इकाई का खर्च लगभग 50000 रुपये खर्च लागत आती है। जिसके द्वारा 12000 रुपये शुद्ध आय, प्रति माह प्रति व्यक्ति प्राप्त हो सकते हैं।



**इंसेक्ट नेट हाउस** – कम लागत में स्थानीय व्यवस्था (सामान्य लोहे के पाइप, इंगल आदि) के माध्यम से आधुनिक, टिकाऊ, आकर्षक भिन्न-भिन्न प्रकार के नेट हाउस तैयार करके सब्जी उत्पादन का कार्य करने के लिए यह प्रयास किया गया। विशेष तौर पर इस इकाई में खीरा, टमाटर, शिमला मिर्च आदि का उत्पादन यहां पर लिया जा रहा है। आम तौर पर इस इकाई में विशेष प्रकार की शेड नेट उपयोग लेने के कारण कीट नियंत्रण में प्रभावी सहयोग मिल जाता है। इस इकाई की लम्बाई 30 मीटर और चौड़ाई 15 मीटर है। जिसकी कुल लागत 100000 रुपये है एवं शुद्ध आय प्रत्येक 6 माह में 50000 रुपये न्यूनतम प्राप्त हो सकती है।

**स्थानीय व्यवस्थाओं से निर्मित कम लागत की संरचनाएं**  
(ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार सृजन हेतु)



**छप्पर मॉडल** — (मल्टी पर्पज जीरो एनर्जी विशाल कोल्ड स्टोर एवं मशरूम उत्पादन इकाई) गाँव-गाँव में, खेत-खेत पर खाली पड़े भूखण्ड एवं छप्पर से आय अर्जित करने के लिए इस प्रकार की तकनीक विकसित की गयी। 10 फीट लम्बा, 10 फीट चौड़ा, 8 फीट गहरा, जिसमें ऊपर 4 फीट की दोहरी दीवार से ऊँचा विशेष डिजाइन से तैयार किया है। इसके लिए ईंटों का उपयोग यहाँ हुआ है। इस दोहरी दीवार के मध्य बजरी, रेत भर दी जाती है। समय-समय पर इसको गीला कर दिया जाता है, ताकि अन्दर नमी और ठंडक बनी रहे। बिना किसी ऊर्जा के द्वारा इस तन्त्र के वातानुकूलित सिस्टम में किसान सब्जी, फूल, फल, औषधि बीज, दूध, दही, मखन, घी रखेगा तो खराब नहीं होगी, साथ ही अभी तेज गर्मी में मशरूम का उत्पादन शुरू करना है तो ये बेहतरीन विकल्प है। इसके ऊपर धान की पराल का छप्पर लगा रखा है, छप्पर के चारों ओर गिलोय चढ़ा रखी है। जो अतिरिक्त आय का साधन है।

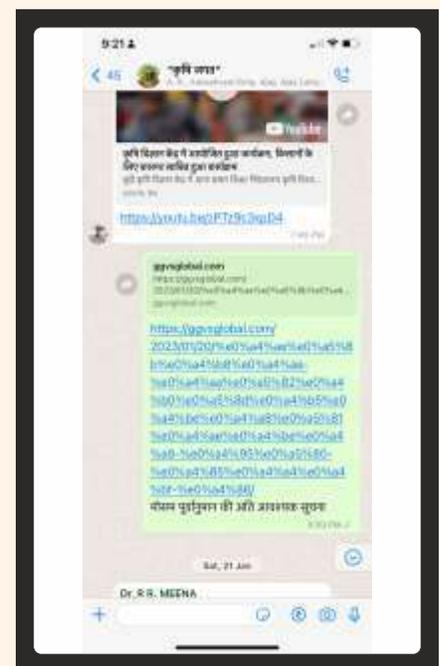
**लागत & स्थानीय व्यवस्था अनुसार लागत सभी जगह अलग है, फिर भी अनुमानित लागत 10000 रुपये है।**



## ❦ किसान मोबाइल एडवाइजरी ❦

अनुसंधान केन्द्र की टीम द्वारा मोबाइल से सोशल मिडिया (व्हाट्सएप, फेसबुक) के माध्यम से सेकड़ों समूहों के हजारों किसानों के साथ विभिन्न तकनीकी जानकारी (फसल उत्पादन, फसल संरक्षण, पशु पालन आदि) के साथ मौसम पूर्वानुमान की जानकारी समय-समय पर साझा की जा रही है। इस माध्यम से कई किसान लाभान्वित हुए हैं।

अनुसंधान केन्द्र द्वारा सामाजिक मिडिया के माध्यम से किसानों को समय-समय पर खेती किसानी में आने वाली समस्याओं का जैविक निदान बताया जाता है।



अनुसंधान केन्द्र की टीम के सदस्य अपने मार्गदर्शकों एवं उच्च अधिकारियों के साथ



अनुसंधान केन्द्र पर हुए उपरोक्त कार्य को करने के लिए तकनीकी दक्षताओं वाले युवाओं के साथ पुरुष श्रमिक, महिला श्रमिक और अन्य कुशल युवाओं की टीम यहाँ निरन्तर सक्रियता से कार्य कर रही है जो प्रबंधक, फील्ड सुपरवाइजर, लेखाकार, कम्प्यूटर ऑपरेटर, लैब टेक्नीशियन, ग्राम विस्तार कार्यकर्ता, रिसर्च स्कॉलर, वाहन चालक, सुरक्षा गार्ड, रसोईया, स्टोर इंचार्ज, फील्ड सहायक और श्रमिक के रूप में सहयोग कर रहे हैं।



## प्रदर्शनी के माध्यम से जैविक कृषि का प्रचार प्रसार

अन्यत्र स्थानों पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में लगाई गई प्रदर्शनी में किसानों द्वारा जैविक कृषि के विषय पर जानकारी देने का प्रयास किया।



खाटूश्याम जी (सीकर)



दशहरा मैदान, कोटा



हस्तिनापुर मैरठ उत्तरप्रदेश



कृषि विश्वविद्यालय, कोटा



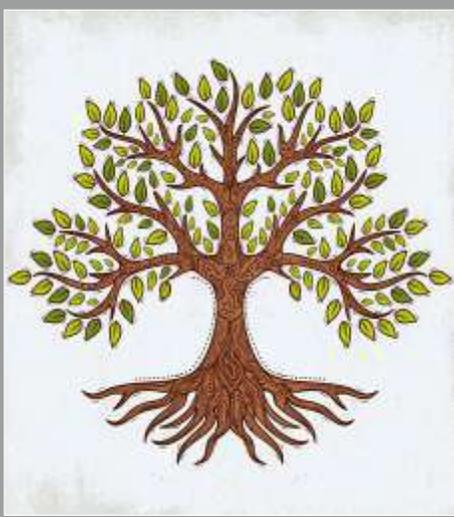
फोटो – प्रदर्शनी किसानों द्वारा जानकारी प्राप्त करते हुए



प्रयोगधर्मी किसानों के द्वारा अवलोकन एवं भ्रमण



पद्म श्री हुकमचन्द जी पाटीदार (मानपुरा झालावाड़)  
द्वारा खाद अनुसंधान इकाई का अवलोकन



श्रीमान् गोपाल सुतारिया जी (बंशी गीर गौशाला, गुजरात) द्वारा  
गाय के ताजे गोबर के प्रभाव का अवलोकन



पद्म श्री सुण्डाराम जी (सीकर) द्वारा  
अनुसंधान केन्द्र का अवलोकन



श्रीमान् प्रकाश सिंह रघुवंशी (राष्ट्रीय बीज संरक्षक) द्वारा  
अनुसंधान केन्द्र का अवलोकन

कृषि वैज्ञानिक और अधिकारीगण द्वारा अवलोकन



भारत सरकार के कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग के सचिव एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के महानिदेशक डॉ. हिमांशु पाठक, डॉ. वाई एस परमार उद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन के कुलपति, प्रो. राजेश्वर सिंह चन्देल



डॉ. एस.एल. मेहता जी, पूर्व कुलपति एम.पी.यू.ए.टी. उदयपुर एवं पूर्व उपमहानिदेशक (कृषि शिक्षा) आई.सी.ए.आर. नई दिल्ली  
डॉ. बी.एल. बसेरा जी  
(वरिष्ठ मृदा वैज्ञानिक, एम.पी.यू.ए.टी. उदयपुर)



डॉ. ए.के. ब्यास जी  
कुलपति, कृषि विश्वविद्यालय, कोटा



डॉ. एस.के. शर्मा जी  
सहायक महानिदेशक (एच.आर.एम)  
आई.सी.ए.आर. नई दिल्ली

कृषि वैज्ञानिक और अधिकारीगण द्वारा अवलोकन



श्रीमान् बलविन्दर सिंह जी गिल  
वरिष्ठ अधिकारी, सहकारी विभाग राज.  
श्रीमान् रामप्रसाद जी, जिलाधिकारी नाबार्ड  
श्रीमान् लालाराम जी, जिलाधिकारी इफको



नाबार्ड राजस्थान के सभी जिला  
अधिकारीगण



डॉ. प्रताप जी धाकड़  
निदेशक अनुसंधान, कृषि विश्वविद्यालय कोटा  
डॉ. उमाशंकर जी शर्मा  
पूर्व कुलपति, एम.पी.यू.ए.टी., उदयपुर



डॉ. पल्लवी  
विभागाध्यक्ष सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग  
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा



प्रो. डॉ. डी.सी. जोशी जी  
पूर्व कुलपति, कृषि विश्वविद्यालय, कोटा

विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित कृषक दीर्घा



## विशेष बिन्दु

दस्तावेजीकरण (Documentation) – अनुसंधान एवं प्रसार कार्यों के संदर्भ में जो विवरण इस द्विवर्षीय प्रतिवेदन में दिया गया, उसकी मुख्य कुंजी है हमारी टीम द्वारा किया गया दस्तावेजीकरण कार्य

1. फसल उत्पादन में बुवाई से बाजार तक ब्यौरा जिसमें बूंद-बूंद पानी, इंच-इंच भूमि का विवरण
2. अनुसंधान के सम्बन्ध में 10-15 कारकों के आधार पर अध्ययन एवं आकड़ों का संकलन
3. प्रसार के सम्बन्ध में प्रत्येक कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी प्रागण पर हो या प्रागण के अलावा, सब का विवरण यहां संकलित किया जाता है।
4. अर्थात् यहां सम्पूर्ण कार्यों के दस्तावेज संकलन विस्तृत मिश्रण के लिए जाते हैं।



## कृषकों के यहां भ्रमण

अनुसंधान केन्द्र की टीम द्वारा अब तक 300 से अधिक गांवों में प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया।



कृषकों के खेत पर बुवाई से पूर्व खाद का अवलोकन, बुवाई के बाद 2 बार फसल का अवलोकन एवं उत्पादन के समय एक बार अवलोकन किया जाता है अर्थात् एक किसान के कुल 5 भ्रमण होते हैं जिसमें उन्हें बुवाई से उत्पादन तक तकनीकी जानकारी प्राप्त होती है।

साहित्य



क्र.स.	विषय	प्रकाशित साहित्यों की संख्या	क्र.स.	विषय	प्रकाशित साहित्यों की संख्या
1.	जैविक खेती का परिचय	3	8.	जल प्रबन्धन	3
2.	बीज	3	9.	गो पालन	13
3.	खाद	9	10.	प्रमाणीकरण	1
4.	तरल खाद	10	11.	पर्यावरण मित्र नवाचार	7
5.	बायोडायनेमिक कम्पोस्ट	5	12.	पर्यावरण मित्र तकनीक	3
6.	कीट नियंत्रण	11	13.	जीवाणुओं द्वारा कीट नियंत्रण	11
7.	मिट्टी	2	14.	अन्य	15





### मिडिया कवरेज

**श्रीरामशांताय जैविक कृषि अनुसंधान केन्द्र को मिला सात गुणवत्ता सम्मान**

**केंद्रीय कृषि मंत्रालय ने किया जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र का दौरा**

**जैविक खेती ही बीमारियों से बचा सकती है: कृष्ण मुरारी**

**जैविक कृषि मॉडल पंजाब और हरियाणा में भी करेंगे लागू**

**मोटे अनाज वाली फसलें उगाईं, 10 फीसदी तक बढ़ाई जा सकती है किसान की आय**

**किसान जैविक खेती करके कम खर्च में फसल की पैदावार बढ़ाएँ: गोवल**

**कोटा में बनेगा 200 करोड़ की लागत से इनोवेशन हब**

**मास्ट के शीर्ष वैज्ञानिकों ने देखा जैविक कृषि मॉडल**





दिन्यवाह

# धन्यवाद

विश्वास !  
विश्वास !  
विश्वास !  
अपने पर विश्वास !  
अपने कार्य पर विश्वास !  
ईश्वर पर विश्वास !  
बस यही सफलता का मूलमंत्र है।  
- स्वामी विवेकानन्द



गोयल समूह



गोयल समूह द्वारा शुद्ध आहार स्वस्थ परिवार की संकल्पना पर आधारित उपक्रम समाज को समर्पित



राष्ट्राय स्वाहा ।  
इदं राष्ट्राय, इदं न मम् ।

यह राष्ट्र को समर्पित है ।  
यह राष्ट्र का है, मेरा नहीं ।

श्रीरामशाब्ताय

जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र  
(गोयल ग्रामीण विकास संस्थान)

ग्राम जाखोड़ा, कैथून-सांगोद मार्ग, कोटा-325001 (राजस्थान)

☎ 88759 95439 ✉ ggvs@goyalglobal.com 🌐 www.ggvsglobal.com



Scan to visit website